हिन्दी बँगला शिक्षा

द्वितीय भाग ।

लेखक
हरिदास वैद्य ।

प्रकाशक
हरिदास एण्ड कम्पनी ।

तृतीय संस्करण २०००] [मूल्य १)

हमारा वक्तव्य ।

जिस जगदाधार की असीम कृपा से संसार के सम्पूर्ण कार्य सुचारु रूपसे सम्पन्न होते हैं, उसी जगन्नायक की विशेष अनुकम्पा तथा साहित्यसेवी, उदारहृदय और विद्याव्यसनी ग्राहकों की अशेष कृपा का यह फल है कि, आज हम "हिन्दी बँगला शिक्षा" के दूसरे भाग का तृतीय संस्करण लेकर सर्व साधारण के सम्मुख उपस्थित हो सके हैं।

यद्यपि हमारी 'बँगला शिक्षा" के प्रथम भाग ने बँगला सीखने में बहुत कुछ सहायता प्रदान की है, यद्यपि अधिकांश नाम, शब्द, वाक्य और मुहावरों का उसीसे पता लगा जाता है, यद्यपि बँगला सरीखे अथाह रत्नभाण्डार का आनन्द उप[illegible] करने की शक्ति उसी प्रथम भाग से ही होजाती है, [illegible]करण जैसे अमूल्य विषय का, जो भाषा की शुद्ध[illegible] अस्त्र है, भीषण अभाव रहजाता है।

बिना व्याकरण जाने किसी भाषा को पढ़ लेने की श
जाने पर भी, उस भाषा को शुद्ध बोलने, लिखने औ
भाषा का पण्डित होने में एक बड़ाही विषम घाटा र
है, जिससे मनुष्य न तो उस भाषा का लेखकही हो
है और न वक्ताही । यही एक प्रधान त्रुटि दूर क
लिये, हमें 'हिन्दी बँगला शिक्षा का' यह दूस
लिखना पड़ा था।

हमारी बँगला शिक्षा के दोनों भागों से हजारो
बड़ी आसानी से बँगला सीखकर हिन्दी अनुवाद क
गये हे। मगर अनुभव से हमें मालूम हुआ है कि, लो
वाद तो करने लगते हैं मगर बँगला भाषा की अनेक
क्रियो और मुहाविरों के न जानने से बड़ी भद्दी भूलें कि
हैं, इसलिये हम इसका तीसरा और चौथा भाग और
कार रहे हैं। उन दोनों भागों के भली भाँति पढ़ लेने
अनुवादकों में किसी भी प्रकार की त्रुटियाँ न रहें गी
उच्च कोटि की कोई भी पुस्तक हिन्दी में न रहने से ही,
अनुवादक कच्चे रह जाते हैं। आशा है, क़दरदान,
प्रेमी उन भागों को खरीद कर स्वय लाभान्वित होंगे
हमें भी उत्साहित करेंगे, जिससे हम बराबर उनकी
ही सेवा करते रहेंगे।

—लेखक।

हिन्दी-बँगला शिक्षा।

दूसरा भाग।

प्रथम खण्ड।

बँगला व्याकरण।

जिस पुस्तकके पढ़नेसे बँगला भाषाका ठीक-ठीक लिखना और बोलना आता है, उसका नाम "बँगला व्याकरण" है।

वर्ण-ज्ञान।

१। पदकी प्रत्येक छोटेसे छोटे टुकड़े या भागको <u>वर्ण</u> या अक्षर कहते हैं।

"হরি পড়িতেছে"। यहाँ "হরি" और "পড়িতেছে" ये दो

पद मिलकर एक वाक्य बना है। इसमें "হরি" इस पदमें হ, রি ये दो छोटे टुकडे या भाग हैं और হ+অ, র+ই ये चार छोटेसे छोटे (यानी जिससे छोटा टुकडा नहीं हो सकता ऐसे) टुकडे या भाग हैं। इसीसे इन चारों में से प्रत्येक को वर्ण कहते है। इसी तरह "পড়িতেছে" इस पदमें প, ড়ি, তে, ছে ये चार छोटे भाग और প+অ, ড+ই, ত+এ, ছ+এ ये आठ छोटेसे छोटे भाग हैं, इसलिये इनमें से प्रत्येक को वर्ण कहते है।

२। बँगला भाषामें सब लेकर उनचास वर्ण या अक्षर हैं। उन्हीं अक्षरोंके समुदाय को वर्णमाला कहते हैं।

३। वर्ण दो भागोमें बँटे हैं—स्वर और व्यञ्जन। उनमें १२ स्वर और ३६ व्यञ्जन वर्ण हैं।

स्वर वर्ण।

४। जो वर्ण बिना किसी दूसरे वर्णकी सहायता लिये ही (अपने आप) उच्चारित होते हैं उनका नाम स्वरवर्ण है। स्वर वर्ण ये हैं,—অ, আ, ই, ঈ, উ, ঊ, ঋ, ঌ, এ, ঐ, ও, ঔ। *

* ঋ का प्राय व्यवहार नहीं होता। केवल क्लृ, ऌ, ॡ इत्यादि कुछ थोडेसी धातुओंके लिखनेमें उनकी जरूरत होती है, इसीसे कोई-कोई लोग, ঌ को छोडकर, स्वर वर्ण की सख्या बारह ही मानते है। बँगला भाषामें दीर्घ ঌ नही है, किन्तु संस्कृत भाषामें उसका चलन है।

५। स्वर वर्ण दो प्रकारके हैं —(१) ह्रस्व, और (२) दीर्घ। অ, ই, উ, ঋ, ঌ ये पांच ह्रस्व और আ, ঈ, ঊ, ৠ, এ, ঐ, ও, ঔ, ये आठ दीर्घ हैं।

অ, ই, উ, ঋ, ঌ इन पांचोंके उच्चारण में थोड़ा समय लगता है और আ, ঈ, ঊ, ৠ, এ, ঐ, ও, ঔ इन आठोंके उच्चारणमें उनसे कुछ अधिक समयकी जरूरत होती है।

स्वर वर्ण जब व्यञ्जन वर्णसे मिलता है तब उसे "বানান" (मात्रा) कहते हैं। অ और ঌ इन दोनोंको छोड़कर और-और स्वर वर्णों को व्यञ्जनवर्णों के साथ मिलानेसे उनका रूप बदल जाता है। कैसे।

আ=া, ই=ি, উ=ু, ঊ=ূ, ঋ=ৃ, ৠ=ৄ,
এ=ে, ঐ=ৈ, ও=ো, ঔ=ৌ।

व्यञ्जन वा हल वर्ण।

६। स्वर वर्णों की सहायता बिना जो वर्ण साफ-साफ उच्चारित नहीं हो (सक) ते, उन्हें व्यञ्जन वर्ण या हल वर्ण कहते हैं। पहले या पीछे स्वर वर्णको मिलाकर न पढ़नेसे व्यञ्जन वर्णका उच्चारण नहीं हो (सक) ता। प्राय सब ही व्यञ्जन वर्णों के पीछे 'अकार' लगा रहता है।

व्यञ्जन वर्ण ये हैं —ক খ গ ঘ ঙ। চ ছ জ ঝ ঞ। ট ঠ ড ঢ ণ। ত থ দ ধ ন। প ফ ব ভ ম। য র ল ব। শ ষ স হ। ং ঃ।

ড়, ঢ়, য়, ये तीनों पृथक् वर्ण नहीं हैं। ये केवल ড, ঢ

इन्हीं तीन वर्णों के रूपान्तर हैं। ये वर्ण जब पदके बीचमें या अन्तमें रहते हैं तब ये ही ड़, ढ़, य, माने जाते हैं। जैसे—जड़, दृढ़, नयन इत्यादि।

जिस व्यञ्जन वर्णमें कोई स्वर नहीं रहता, उसके नीचे (्) ऐसा चिह्न देना पड़ता है, इस चिह्न या निशानका नाम 'हसन्त चिह्न' है*। जैसे—सम्राट् इत्यादि।

७। क से म तक, पचीस वर्णोंको स्पर्शवर्ण कहते हैं। स्पर्श वर्ण पाँच वर्गोंमें विभक्त हैं, आदि के या पहले वर्णको लेकर वर्गका नाम होता है। जैसे—क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग।

८। य, र, ल, व, इन चारोंका नाम अन्तस्थ वर्ण है,

---

* व्यञ्जन वर्णके बाद, स्वर वर्ण रहनेसे वह स्वर वर्ण व्यञ्जन वर्णमें मिल जाता है। जैसे—जल=ज्+अ+ल्+अ। दिन=द्+इ+न्+अ। बालिका=ब्+आ+ल्+इ+क्+आ। चन्द्र=च्+अ+न्+द्+र्+अ।

हर एक पदमें दो या उससे अधिक वर्ण रहते हैं, इसी प्रकार वर्ण-विन्यास द्वारा यह साफ़ साफ़ मालूम हो जाता है कि, कौन वर्ण पहिले और कौन वर्ण पीछे है।

= इसका नाम समान चिह्न है। + इसका नाम युक्त चिह्न है अर्थात् इसके द्वारा दो वर्णों का योग या जोड़ समझा जाता है।

श, ष, स, ह, इन चारों का नाम ऊष्म वर्ण है, (ं) और (ँ) का नाम अनुनासिक वर्ण है और (ः) विसर्गका नाम अयोगवाह वर्ण है।*

९। उच्चारण स्थानके भेदोंसे वर्णोंके नामोंमें भी भेद होता है। जैसे—

अ आ ह क ख ग घ ङ इनका उच्चारण-स्थान कण्ठ है, इसलिये इन्हें कण्ठ्य वर्ण कहते हैं।

इ ई च छ ज झ ञ श य इनका उच्चारण स्थान तालू है, इसलिये इन्हें तालव्य वर्ण कहते हैं। †

ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष ड़ ढ़ इनका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है, इसलिये इन्हें मूर्द्धन्य वर्ण कहते हैं। ‡

ऌ त थ द ध न ल स इनका उच्चारण स्थान दन्त है, इसलिये इन्हें दन्त्यवर्ण कहते हैं।

उ ऊ प फ ब भ म इनका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है, इसीसे इन्हें ओष्ठ्य वर्ण कहते हैं।

---

* कोई-कोई अनुस्वार और विसर्ग इन दोनोंको ही अयोगवाह कहते हैं।

† य़, यह वर्ण पदके बीचमें या अन्तमें लगाया जाता है। जैसे, अयन, शयन, जय।

‡ ड़ और ढ़ इन दोनों वर्णोंका प्रयोग भी पदके बीचमें या अन्तमें होता है। जैसे—जड़, जड़ता, मूढ़, मूढ़ता।

ए, ऐ, इन दो वर्णों का उच्चारण स्थान कण्ठ और तालू है, इसलिये ये कण्ठ-तालव्य वर्ण हैं।

ओ औ इन दो वर्णोंका उच्चारण-स्थान कण्ठ और ओष्ठ है, इसवास्ते ये कण्ठोष्ठ वर्ण हैं।

अन्तःस्थ 'व' का उच्चारण स्थान दन्त और ओष्ठ है, इस लिये यह दन्त्योष्ठ वर्ण है।

अनुस्वार और चन्द्रविन्दु नाकसे उच्चारित होते हैं, इस लिये ये अनुनासिक वर्ण हैं।

विसर्ग 'आश्रय स्थान' भागी है, अर्थात् जब जिस स्वर वर्ण के बाद रहता है, तब उसी स्वर वर्णका उच्चारण-स्थान विसर्गका उच्चारण-स्थान होता है। विसर्गका उच्चारण स्वर वर्णके बिना, 'ह' के उच्चारणकी तरह होता है। जैसे पुनः = पुनह्।

विसर्ग जिस स्वर वर्णके बाद होता है वह दीर्घकी तरह उच्चारित होता है। जैसे—प्रातःकाल।

संयुक्त वर्ण।



१०। यदि एक व्यञ्जन वर्णके बाद एक या उससे ज़ियादा व्यञ्जन वर्ण हों और बीचमें स्वर वर्ण न हो, तो वे सब व्यञ्जन वर्ण एक साथ मिल जाते हैं। इस तरह मिलकर, व्यञ्जन वर्ण जो रूप धारण करते हैं उसको युक्ताक्षर कहते हैं।

संयुक्त या मिले हुए वर्णके पहलेका वर्ण (पूर्व्व वर्ण) ऊपर और पीछेका वर्ण (परवर्ण) प्राय, नीचे लिखा जाता है। जैसे —द्+म=द्म, प्+न्=प्न, न+द+र्=न्द्र।

थोडेमे संयुक्त वर्णों का रूप बदल जाता है। ये नीचे दिखाये गये हैं। जैसे—ङ+ग=ङ्ग, ज+ञ=ज्ञ, क्+ष=क्ष, ट+ञ=ञ्च, द+ध=द्ध, त+र=त्र, क+त=क्त, ष+ण=ष्ण, ह+न=ह्न, न्+थ=न्थ, ह+म=ह्म, त्+त=त्त, प+र=प्र, ग+र=ग्र इत्यादि।

र् किसी व्यञ्जन वर्णके पहिले रहनेसे, बादकी वर्णके माथे पर जाकर (ˊ) ऐसा आकार धारण करता है। इसका नाम रेफ है। रेफ युक्त कोई-कोई वर्ण का द्वित्व हो जाता है अर्थात् वे वर्ण दो जाते हैं। जैसे—र+म=र्म्म। और आर्द्र, चर्च्चा, निर्ज्झर इत्यादि।

"छ' द्वित्व होनेसे 'च्छ', 'थ' द्वित्व होनेसे 'त्थ', 'ध' द्वित्व होनेसे 'द्ध', और ढ द्वित्व होनेसे 'ड्ढ', ऐसा रूप धारण करता है। श, र और न युक्त होनेसे 'श' कार और 'स' कार का उच्चारण 'ह' कार के समान होता है, जैसे—श्राद्ध, स्पष्ट, स्नान इत्यादि। 'स' कारके साथ त या थ युक्त होनेसे 'स' कार ट' कार की तरह उच्चारित होता है। जैसे—प्रस्ताव, अवस्थिति। जब 'ह' के नीचे कोई वर्ण लगता है तब वह 'ह' नीचेवाले वर्णके बाद उच्चारित होता है, जैसे आह्लाद =आल्+हाद, मध्याह्न=मध्यान्+ह, मह्य=मय्+ह इत्यादि

जब 'य' किसी वर्ण में संयुक्त होता है, तो उसका उच्चारण 'इय' और अन्तःस्थ 'व' किसी वर्णमें युक्त होनेसे उच्चारण 'उय' ऐसा होता है, जैसे—दिव्य= दिव्+इय, विव= विल्+उय इत्यादि।

सन्धि प्रकरण।

११। दो वर्ण पास होनेसे आपसमें एक दूसरेसे मिल जाते हैं, उस मिलनको सन्धि कहते हैं।

१२। सन्धि दो प्रकार की है,—स्वर-सन्धि और व्यञ्जन-सन्धि।

१३। एक स्वर वर्णके साथ दूसरे स्वर वर्णके मिलनको स्वर-सन्धि कहते हैं।

१४। व्यञ्जन वर्णके साथ व्यञ्जन वर्ण या व्यञ्जन वर्णके साथ स्वर वर्णके मिलनको व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।

स्वर-सन्धि।



१५। अ के बाद अ आ रहनेसे, और दोनोंके मिलनेसे आ होता है और वह आ पूर्व्व वर्णमें मिल जाता है। जैसे शीत+अंशु=शीतांशु। यहांपर शीत शब्द के अन्तमें अ है और पीछे अंशु शब्दका अ है, इसलिये उन दोनोंके मिलनसे आकार हुआ और वह आकार तकार में मिलकर "शीतांशु"

पद हुआ। इसी तरह पीत+अम्बर=पीताम्बर, कुश+आसन=कुशासन।

१६। आ के बाद अ अथवा आ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे आ होता है, और वह आ पूर्व वर्णमें मिल जाता है। जैसे—विद्या+अभ्यास=विद्याभ्यास। यहाँपर विद्या शब्द के अन्तमें आ है और उस आ के बाद अभ्यास शब्दका अ है, इसलिये आ में अ मिलकर आ हुआ और वह आ पूर्व वर्ण 'द्य' में मिलकर "विद्याभ्यास" पद हुआ। उसी तरह तारा+आकार=ताराकार, महा+आशय=महाशय इत्यादि।

१७। ई के बाद ई या ई रहने से, और दोनोंके मिलनेसे ई होती है, वह ई पूर्व वर्णमें मिल जाती है। जैसे—अति+इत=अतीत। यहाँ पर अति के इकार के बाद इत शब्द का इकार है, इसलिये दोनों इकारों के मिलनेसे ईकार हुआ और वही ईकार पूर्व वर्ण तकार में मिलकर "अतीत" पद हुआ। इसी तरह गिरि+इन्द्र=गिरीन्द्र, गिरि+ईश=गिरीश इत्यादि।

१८। ई के बाद इ या ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ई होती है, वह ई पूर्व वर्ण में मिल जाती है। जैसे—सती+इव=सतीव। यहाँपर ईकार के बाद इ है, इसलिये दोनों के मिलनेसे ईकार हुआ और वही ईकार पूर्व वर्ण तकार में मिल गया, जिससे सती+इव=सतीव भी हुआ, इसी तरह पृथ्वी+ईश्वर=पृथ्वीश्वर, काली+ईश=कालीश इत्यादि।

१८। उ के बाद उ या ऊ रहनेसे और दोनों के मिलनेसे ऊ होता है, यह ऊ पूर्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे—विधु+उदय=विधूदय। इसी तरह साधु+उक्ति=साधूक्ति। तनु+ऊर्द्ध=तनूर्द्ध। विधु+उदय=विधूदय। यहाँपर विधु शब्दके ह्रस्वके बाद उदयका उ है, इसलिये ह्रस्व उके बाद ह्रस्व उ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ। अब इसी दीर्घ ऊके पूर्ववर्ण ध में मिलनेसे विधूदय पद बन गया। साधूक्ति—साधु+उक्ति=साधूक्ति। यहाँ पर साधु इस शब्दके ह्रस्व उकारके बाद उक्ति शब्दका ह्रस्व उ है, इसीसे ह्रस्व उकार के बाद ह्रस्व उ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ और वह ऊ पूर्व वर्ण ध कारमें मिलकर, "साधूक्ति" पद बना। तनूर्द्ध—तनु+ऊर्द्ध=तनूर्द्ध। यहाँ पर तनु शब्दके ह्रस्व उकारके बाद ऊर्द्ध शब्दका दीर्घ ऊ है, इसलिये ह्रस्व उकारके बाद दीर्घ ऊ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ और वह दीर्घ ऊ पूर्ववर्ण न में मिलकर "तनूर्द्ध" पद बना।

२०। ऊ के बाद उ या ऊ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऊ होता है, और ऊ पूर्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे—तनू+उद्वेग=तनूद्वेग। यहाँ पर तनू के ऊ के बाद उद्वेग का उ रहनेसे और दोनोंके मिल जानेसे ऊ होगया और पूर्व वर्ण न में युक्त हुआ। इसी तरह भू+ऊर्द्ध=भूर्द्ध इत्यादि।

२१। अ आ, के बाद इ या ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए होजाता है; और ए पूर्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे,—नग+ईश

नगेन्द्र, महा+ईश=महेश रमा+ईश=रमेश, धन+ईश्वर=धनेश्वर, उमा+ईश=उमेश। नग+इन्द्र=नगेन्द्र,—यहाँ पर नग शब्दके अ के बाद इन्द्रको इ है, इसलिये अ के बाद इ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ और वह ए पूर्ववर्णमें मिलकार नगेन्द्र पद बना है। धन+ईश्वर=धनेश्वर,—यहाँ पर अ के बाद ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ है। रमा+ईश=रमेश, यहाँ पर आ के बाद दीर्घ ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ है।

२२। अ या आ के बाद उ या ऊ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओ होता है, और वह ओ पूर्ववर्णमें मिल जाता है। जैसे—सूर्य्य+उदय=सूर्य्योदय, नल+उदय=नलोदय, तरङ्ग+ऊर्म्मि=तरङ्गोर्म्मि, महा+उदधि=महोदधि गङ्गा+ऊर्म्मि=गङ्गोर्म्मि। सूर्य्य+उदय+सूर्य्योदय,—यहाँ पर अकारके बाद ह्रस्व उ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओकार हुआ और ओकार पूर्ववर्णमें मिलकार सूर्य्योदय पद बना। महा+उदधि=महोदधि।—यहाँपर आकारके बाद उकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओकार हुआ है। इसी तरह नलोदय, तरङ्गोर्म्मि, गङ्गोर्म्मि है।

२३। अ या आ के बाद ऋ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे अर् होता है। अर् का अ पूर्ववर्णमें मिल जाता है और र् पर वर्णके माथेपर चला जाता है। अर्थात् रेफ् हो जाता है। जैसे—देव+ऋषि=देवर्षि, उत्तम+ऋणि=उत्तमर्णि, अधम+

ঋষি=অগ্নর্ষি, মহা+ঋষি=মহর্ষি। দেব+ঋষি= देवर्षि,—यहाँ पर अकारके बाद ऋ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे अर् हुआ, अकार पूर्ववर्णमें मिल गया और र् के पर वर्ण ष के माथेपर चले जानेसे "देवर्षि" पद बना। महा+ऋषि=महर्षि, यहाँ पर आकारके बाद ऋ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे अर् हुआ है। आकार पूर्व वर्णमें मिल गया और र पर वर्णके माथेपर चला गया है। इसी तरह उत्तमर्षि, अधमर्षि भी बने हैं।

२४। तृतीया तत्पुरुष समासमें अ या आ के बाद ऋत शब्द रहनेसे पूर्ववर्णों अ या आ के साथ मिलकर ऋत शब्द का आर् होजाता है आर् का आ पूर्ववर्णमें मिल जाता है और र् पर वर्णके मस्तक पर चला जाता है अर्थात् रेफ हो जाता है। जैसे,—শোক+ঋত=শোকার্ত, তৃষ্ণা+ঋত=তৃষ্ণার্ত। *शोक+ऋत=शोकार्त्त—यहाँ पर शोक शब्दके अ के बाद ऋत शब्दका ऋकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे आर् हुआ, आ पूर्व वर्ण क में मिल गया और र पर वर्ण तकारमें जाकर "शोकार्त्त" पद बना।

२५। अ या आ के बाद ए या ऐ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐ होता है। ऐकार पूर्ववर्णमें मिल जाता है जैसे—শত+এক=শতৈক, বার+এক=বারৈক, দিন+এক=দিনৈক, জন+এক=জনৈক, এক+এক=একৈক, মত+ঐক্য=

* रेफ युक्त व्यञ्जन वर्णका विकल्पमें द्वित्व होता है, जैसे पूर्वक, पूर्व्वक, निर्दय निर्द्दय इत्यादि।

মহৈব্য, বিপুল+ঐশ্বর্য্য=বিপুলৈশ্বর্য্য মহা+ঐরাবত=মহৈরাবত, মহা+ঐশ্বর্য্য=মহৈশ্বর্য্য অতুল+ঐশ্বর্য্য=অতুলৈশ্বর্য্য। वार+एक=वारैक,—यहाँ पर वार शब्दके अकारके बाद एक शब्दका एकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ और ऐकार पूर्व वर्ण रकारमें मिलकर "वारैक" पद बना। अतुल+ऐश्वर्य्य=अतुलैश्वर्य्य,—यहाँ पर अकारके बाद ऐकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ है। महा+ऐरावत=महैरावत,—यहाँ पर अकारके बाद ऐकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ है। इसी तरह दिनैक, जनैक, एकैक, मतैक्य, विपुलैश्वर्य्य, महैश्वर्य्य है।

२६। অ या আ के बाद ও या ঔ रहनेसे और दोनोंसे मिलनेसे ঔ हो जाता है। वही ঔ पूर्व वर्णमें मिल जाता है। जैसे—জল+ওকা=জলৌকা, পত্র+ওঘ=পত্রৌঘ, নব+ঔষধি=নবৌষধি, মহা+ঔষধি=মহৌষধি, গত+ঔৎসুক্য=গতৌৎসুক্য इत्यादि। जल+ओका=जलौका,—यहाँ पर जल शब्दके अकारके बाद ओका शब्दका ओकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे औकार हुआ और वही औकार पूर्व वर्ण लकारमें मिलकर "जलौका" पद बन गया। इसी तरह, पत्रौघ नवौषधि इत्यादि भी बने हैं।

२७। ই और ঈ के अलावा और कोई स्वरवर्ण ই या ঈ के बादमें रहनेसे ই या ঈ के स्थानमें य् हो जाता है वह य् पूर्व वर्णमें मिल जाता है और बादका स्वर उसी यकारमें मिल जा

जैसे—যদি+অপি=যদ্যপি, অতি+আহার=অত্যাহার, প্রতি+আশা=প্রত্যাশা, প্রতি+আদেশ=প্রত্যাদেশ, নদী+উত্থিত=নদ্যুত্থিত, কালী+আগার=কাল্যাগার इत्यादि। यदि+अपि=यद्यपि,—यहां पर यदि शब्दके इकारके बाद अपि शब्दका अकार है, इसीसे इ और ई के सिवाय और कोई स्वर वर्ण बादमें रहनेसे इकारके स्थानमें य हुआ और वही य परवर्त्ती स्वरवर्ण अपि के अकार और पूर्ववर्ण दकारमें य युक्त होकर "यद्यपि" पद बना। इसी तरह अत्याहार प्रत्याशा इत्यादि भी बने हैं।

२८। उ और ऊ के सिवाय और कोई स्वरवर्ण बादमें रहनेसे उ वा ऊ के स्थानमें व होता है, वह व पूर्ववर्णमें मिल जाता है और परवर्त्ती स्वर भी पूर्व वर्णमें मिल जाता है। जैसे—সু+আগত=স্বাগত, সাধু+ইচ্ছা=সাধ্বীচ্ছা, তনু+আচ্ছাদন=তন্বাচ্ছাদন, চক্ষু+আদি=চক্ষ্বাদি इत्यादि। सु+आगत=स्वागत —यहाँ पर सु शब्दके उकारके बाद आगत शब्दका आकार है, इसीसे उ ऊ के सिवाय अन्य स्वरवर्ण बादमें रहनेसे उकारके स्थानमें व हुआ। व और परवर्त्ती स्वर वर्ण आगतके आकारके पूर्व वर्ण सकारमें मिल जानेसे "स्वागत" पद बना। इसी तरह साध्वीच्छा और तन्वाच्छादन बने हैं।

२९। ऋ के सिवाय और कोई स्वर वर्ण बादमें रहनेसे ऋके स्थानमें र् होता है, वह र् पूर्व वर्णमें मिल जाता है और

२३। চ या ছ परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती ৎ या द् के स्थानमें চ होता है। जैसे—শরৎ+চন্দ্র=শরচ্চন্দ্র, উৎ+চারণ=উচ্চারণ, উৎ+ছেদ=উচ্ছেদ, তদ্+চরণ=তচ্চরণ, তদ্+ছাত্র=তচ্ছাত্র।

२४। জ अथवा ঝ परे रहने से पूर्ववर्त्ती ৎ या द् के स्थानमें জ होता है। जैसे—উৎ+জ্বল=উজ্জ্বল, তৎ+ঝটিকা=তজ্ঝটিকা।

२५। ট या ঠ परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती ৎ और द के स्थानमें ট होता है। जैसे—উৎ+টলন=উট্টলন, তদ+ঠবাব=তট্-ঠবাব।

२६। ড या ঢ परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती ৎ या द् के स्थानमें ড होता है। जैसे—উৎ+ডীন=উড্ডীন, তদ্+ঢক্কা=তড্ঢক্কা, বৃহৎ+ঢক্কা=বৃহড্ঢক্কা।

२७। यदि চ या জ के बाद ন रहे तो ন के स्थानमें ঞ होता है। जैसे—যাচ্+না=যাচ্ঞা, রাজ+নী=রাজ্ঞী।

२८। यदि ল पर हो तो पूर्ववर्त्ती ৎ, द् और ন্ के स्थानमें ল होता है, और ন के पूर्ववर्णमें चन्द्रबिन्दु लग[illegible]। जैसे—উৎ+লাস=উল্লাস, ভবৎ+লেখা=ভব-[illegible]+লেখ=উল্লেখ, উৎ+লঙ্ঘন=উল্লঙ্ঘন, তদ্+[illegible]+লীন=এতল্লীন, বিদ্বান+লেখক=

कारमें मिलकर 'पवन' बना, इसी तरह 'भवन' 'शवन' भी बने हैं। नौ+इक=नाविक,—यहाँ पर औकारके बाद स्वर वर्ण रहनेके कारण औकारके स्थानमें आव हुआ और आव का आकार पूर्व वर्ण नकारमें मिलकर "नाविक" बना।

व्यञ्जन-सन्धि।

२१। स्वर वर्ण या वर्गका तीसरा चौथा वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह, परे रहनेसे वर्गके पहले वर्ण के स्थान में उस वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे—वाक्+आडम्बर =वागाडम्बर, वाक्+इन्द्रिय=वागिन्द्रिय, दिक्+अन्त=दिगन्त, दृक+इन्द्रिय=दृगिन्द्रिय, दिक्+गज=दिग्गज, वाक्+जाल =वाग्जाल, वाक्+दान=वाग्दान वाक्+देवी=वाग्देवी, दिक्+विदिक=दिग्विदिक, षट्+दल=षडदल, उत्+घाटन उदघाटन, सत्+विद्या=सद्विद्या, जगत्+वल्लभ=जगद्वल्लभ, अप +ज=अब्ज इत्यादि।

२२। पञ्चम वर्ण परे रहनेसे वर्गके पहिले वर्णके स्थानमें पञ्चम वर्ण होता है, और अगर द के बाद न या न रहे तो उस म के स्थानमें न हो जाता है। जैसे—दिक्+नाग= दिङनाग, दिक्+मुख=दिङमुख, अप्+मय=अम्मय, षट्+मुख= षण्मुख, उत्+नयन=उन्नयन, तद्+नीर=तन्नीर।

२३। च या छ परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती ৎ या द् के स्थानमें च होता है। जैसे—শরৎ+চন্দ্র=শরচ্চন্দ্র, উৎ+চারণ=উচ্চারণ, উৎ+ছেদ=উচ্ছেদ, তদ্+চরণ=তচ্চরণ, তদ্+ছাত্র=তচ্ছাত্র।

२४। ज अथवा झ परे रहने से पूर्ववर्त्ती ৎ या द् के स्थानमें ज होता है। जैसे—উৎ+জ্বল=উজ্জ্বল, তৎ+ঝটিকা=তজ্ঝটিকা।

२५। ट या ठ परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती ৎ और द् के स्थानमें ट होता है। जैसे—উৎ+টলা=উট্টলা, তদ্+ঠকার=তট্ঠকার।

२६। ड या ढ परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती ৎ या द् के स्थानमें ड होता है। जैसे—উৎ+ডীন=উড্ডীন, তদ্+ঢক্কা=তড্ঢক্কা, বৃহৎ+ঢক্কা=বৃহড্ঢক্কা।

२७। यदि च या ज के बाद न रहे तो न के स्थानमें ঞ होता है। जैसे—যাচ্+না=যাচ্ঞা, রাজ+নী=রাজ্ঞী।

२८। यदि ल पर हो तो पूर्ववर्त्ती ৎ, द् और न् के स्थानमें ল होता है और न के पूर्ववर्णमें चन्द्रबिन्दु लग जाता है। जैसे—উৎ+লাস=উল্লাস, ভবৎ+লেখা=ভবল্লেখা, উৎ+লেখ=উল্লেখ, উৎ+লঙ্ঘন=উল্লঙ্ঘন, তদ্+লোভ=তল্লোভ এতদ্+লীন=এতল্লীন, বিদ্বান্+লেখক=বিদ্বাঁল্লেখক।

२९। यदि ৎ या द् के बाद শ रहे तो ৎ और द के

स्थानमें च् और श् के स्थानमें छ होता है। जैसे—भवत्+शश=भवच्छश, उत+श्वसन=उच्छ्वसन, जगत्+शरण्य=जगच्छरण्य, तद्+शम्भुक=तच्छ्मुक।

४०। त् या द के बाद ह रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे द्ध होता है। जैसे—उत्+हार=उद्धार, उत्+हत=उद्धत, तद्+हरिण=तद्धरिण।

४१। ष के बाद त् या थ रहनेसे त् के स्थानमें ट और थ के स्थानमें ठ होता है। जैसे—आकृष्+त=आकृष्ट, षष्+थ=षष्ठ।

४२। स्पर्श वर्ण परे रहनेसे पदकी अन्तस्थित म् के स्थानमें अनुस्वार होता है अथवा जिस वर्गका वर्ण परे रहता है म् के स्थानमें उसी वर्गका पञ्चम वर्ण होता है। और अन्तस्थ और ऊष्मवर्ण परे रहनेसे म के स्थानमें केवल अनुस्वार होता है। जैसे—सम्+कीर्ण=सङ्कीर्ण या संकीर्ण, किम्+कर=किङ्कर या किंकर, सम्+गति=सङ्गति या संगति, किम्+चित=किञ्चित् या किंचित्, सम्+पूज्य=सम्पूज्य या संपूज्य, सम्+भृति=सम्भृति या संभृति, सम्+यम=संयम, सम्+योग=संयोग, सम्+रक्षण=संरक्षण, सम्+लग्न=संलग्न, सम्+वाद=संवाद, सम्+शय=संशय, सम्+हृद=संहृद।

४३। व्यञ्जन वर्ण परे रहनेसे दिव् शब्द के स्थानमें द्यु होता है। जैसे—दिव्+लोक=द्युलोक, दिव+भवन=द्युभवन।

४४। स्वर वर्णके बाद छ रहनेसे छ के स्थानमें च्छ होता है। जैसे—পরি+ছেদ=পরিচ্ছেদ, অব+ছেদ=অবচ্ছেদ, স+ছিদ্র=সচ্ছিদ্র, বৃক্ষ+ছায়া=বৃক্ষচ্ছায়া, গৃহ+ছায়া=গৃহচ্ছায়া।

४५। উৎ शब्दके बाद स्था और स्तम्भ धातुके "স" का लोप होता है। जैसे—উৎ+স্থান=উত্থান, উৎ+স্তম্ভ=উত্তম্ভ।

४६। सम् और परि के बाद कृ धातुका पद रहनेसे वह कृ धातु निष्पन्न पदके पूर्व्वे क्रमश स् और ष् होता है अर्थात् सम्के बाद स और परि के बाद ष होता है। जैसे—সম্+করণ=সংস্করণ, সম্+কৃত=সংস্কৃত, সম্+কার=সংস্কার, পরি+কার=পরিষ্কার।

४७। च या छ बादमें रहनेसे विसर्ग के स्थान में श होता है। जैसे—মনঃ+চোর=মনশ্চোর, নিঃ+চয়=নিশ্চয়, শিরঃ+ছেদ=শিরশ্ছেদ, উরঃ+ছদ্=উরশ্ছদ্।

४८। ट या ठ परे रहनेसे विसर्ग के स्थानमें ष् होता है। जैसे—ধনুঃ+টঙ্কার=ধনুষ্টঙ্কার।

४९। त या थ परे रहनेसे विसर्ग के स्थानमें स होता है। जैसे—নিঃ+তেজ=নিস্তেজ, দুঃ+তর=দুস্তর, ইতঃ+ততঃ=ইতস্ততঃ।

५०। अकार वर्गके तीसरे, चौथे, पांचवें वर्ण अथवा य, र, ल, व ह, के परे रहनेसे अकार और अकारके बाद के विसर्ग इन दोनोंके मिलनेसे "ও" होता है। यह पूर्व ओकार वर्ण

मिल जाता है और परे अकार रहनेसे उसका लोप होता है। जैसे—उउः + अधिक = उडोधिक, मनः + गत = मनोगत, अधः + गमन = अधोगमन, सद्यः + जात = सद्योजातः, पयः + निधि = पयोनिधि, यशः + धन = यशोधन, मनः + योग = मनोयोग, मनः + वेग = मनोवेग, इत्यादि ।

५१ । स्वरवर्ण, वर्गके तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य र ल व ह के परे रहनेसे अकार के बादके र जात विसर्ग के स्थानसे र् होता है। यदि स्वर वर्ण या ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द ध, न, ब, भ, म और य र ल व ह के परे रहता है तो अकारके बादके र जात विसर्गके स्थानमें र होता है। पूर्व्व लक्षण के अनुसार ओकार नहीं होता। जैसे—अहः + अह = अहरह, प्रातः + आश = प्रातराश, पुनः + जन्म = पुनर्ज्जन्म अन्त. + आत्मा = अन्तरात्मा, अन्तः + देश = अन्तर्द्देश, पुन. + उक्ति = पुनरुक्ति ।

५२ । स्वरवर्ण, वर्गका तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण या य र ल व ह परे रहने से अ आ भिन्न स्वरवर्ण के बाद के विसर्ग को जगह र् होता है। जैसे—नि. + भय = निर्भय, बहिः + गत = बहिर्गत, दु. + आत्मा = दुरात्मा, द्वि + उक्ति = द्विरुक्ति, दु. + लभ = दुर्लभ ।

५३ । र परे रहने से विसर्ग के स्थान मे जो र् होता है, उस र् का लोप होता है और पूर्व्व स्वर दीर्घ हो जाता है।

जैसे—নি: + রোগ = নীরোগ, নি: + রস = নীরস, নি: + রব = নীরব, চক্ষু: + রাগ = চক্ষুরাগ।

५४। স্থ परे रहने से, पूर्ववर्ती विसर्गका विकल्प में लोप होता है। जैसे—মনঃ + স্থ = মনস্থ या মনঃস্থ, দু + স্থ = দুস্থ, इत्यादि।

५५। समास में क ख प फ परे रहनेसे विसर्ग के स्थान में विकल्प से स होता है, और वही स् अगर अ आ भिन्न स्वरवर्ण के बाद का होता है तो ष् हो जाता है। जैसे—নি + কর্ম্মা = নিষ্কর্ম্মা या নিঃকর্ম্মা, ভাঃ + কর = ভাস্কর, ভাঃকর, দুঃ + কর = দুষ্কর, দুঃকর, তেজঃ + কর = তেজস্কর, তেজঃকর, ভাঃ + পতি = ভাস্পতি, ভাঃপতি, নিঃ + ফল = নিষ্ফল, নিঃফল।

५६। अकार भिन्न स्वरवर्ण परे रहनेसे अकार के बाद के विसर्गका लोप होता है। लोप के बाद फिर सन्धि नहीं होती। जैसे—অত + এব = অতএব, পয় + ওধ = পয়ওধ।

५७। बँगला भाषामें पदके अन्तस्थित विसर्गका विकल्पमें लोप होता है। यथा—ফলত, ফলতঃ, বিশেষতঃ, বিশেষত, বস্তুতঃ, বস্তুত, মনঃ, মন।

णत्वविधान।

"ण" के लगानेके स्थान।

५८। ঋ, র, ষ के बादका दन्त्य न मूर्द्धन्य होता है। जैसे—ঋণ, বর্ণ, তৃণ, বিদীর্ণ বিষ্ণু, উষ্ণ সহিষ্ণু।

५८। ग, र्, य के बाद स्वरवर्ण, कवर्ग, पवर्ग, ह य व या अनुस्वार व्यवधान रहने पर भी दन्त्य न मूर्द्धन्य होता है। जैसे—कारण, दर्पण, पाषाण, निर्व्वाण, गर्व्विणी, बृंहण, विस्मरण।

६०। उल्लिखित वर्णके सिवा और कोई वर्ण व्यवधान मे नहीं होता। जैसे—अर्च्चना, कीर्त्तन, रसना।

६१। पदके अन्तमें या दूसरे पदमें न रहनेसे वह मूर्द्धन्य नहीं होता जैसे—हरिनाम, दुर्नाम, दुर्नय।

६२। क्रियाके अन्तोरका दन्त्य न मूर्द्धन्य नहीं होता। जैसे—करेन धरेन, मारेन।

६३। त, थ, द, ध, संयुक्त न "ण" नहीं होता। जैसे—प्रान्त, भ्रान्त, ग्रन्थ।

थोड़ेसे स्वाभाविक मूर्द्धन्य ण विशिष्ट पद है। जैसे—वाणि, मणि, वेणी, गुण, कङ्कण, गण, विपणि, पण, आपण, वीणा, घ्राण, निपुण, लवण, कणिका वाण मत्कुणा, शोण, कोण, कल्याण, कणा, अणु काण, धुणा, वणिक इत्यादि।

६४। अ आ भिन्न स्वरवर्ण अथवा क और र इन वर्णों के किसी भी परिस्थित पदके बीचका दन्त्य स मूर्द्धन्य होता है। विसर्ग व्यवधान रहने पर भी यह होता है। लेकिन सात् प्रत्ययका स मूर्द्धन्य नहीं होता। जैसे—मुमूर्षु, वर्ष्यमान, जिगीषा, चिकीर्षा, परिष्कार, निषेध, अधिष्ठान, आविष्कार इत्यादि।

कुछ शब्दोंका स स्वाभाविक ही मूर्द्ध...

ভাষা, পাষাণ, কল্‌মাষ, আষাঢ়, ফল্‌মাষ, তষায়, কষ্ট, তুল্‌নাব इत्यादि।

पद।

सारे पद पाँच भागोंमें बाँटे गये हैं। यथा, (१) विशेष्य (२) विशेषण, (३) सर्व्वनाम, (४) अव्यय (५) क्रिया।

विशेष्य।

कोई चीज, व्यक्ति, जाति, गुण और क्रिया वाचक शब्दको विशेष्य कहते हैं। जैसे,—বস্ত্র, পৃথিবী, রাম, পশু, গায়, মনুষ্য, ভদ্রতা নম্রতা, গমন, ভোজন इत्यादि।

विशेष्य पदमें लिङ्ग, वचन, पुरुष और कारक होते हैं। इनको जाननेसे वाक्यार्थ जाननेमें सुभीता होता है।

लिंग।

जिसके द्वारा पुरुष, स्त्री आदि जातिका ज्ञान होता है, उसे लिङ्ग कहते हैं।

लिङ्ग तीन प्रकारके होते हैं। पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और क्लीवलिङ्ग।

बँगला भाषामें क्लीवलिङ्ग का कोई विशेष रूप नहीं

होता। फल, जल, अरण्य प्रभृति क्लीवलिङ्ग शब्दोंका रूप पुंलिङ्ग जैसा होता है।

जिन शब्दोंमे पुरुष जातिका ज्ञान होता है, वे पुलिङ्ग कहे जाते हैं। जैसे,—मनुष्य, वानर, सिंह अश्व इत्यादि।

जिन शब्दोंसे स्त्री जातिका बोध होता है उन्हें स्त्रीलिङ्ग कहते है। जैसे,—स्त्री, कन्या, हरिणी, नारी, महिषी, हस्तिनी, घोटकी, कुक्कुरी इत्यादि।

विद्युत, रात्रि, लता, बुद्धि, पृथिवी, नदी, लज्जा, शोभा, एव ज्योत्स्ना, इनके अर्थमें जिन शब्दोंका प्रयोग होता है वे स्त्रीलिङ्ग होते है। जैसे—সৌদামিনী, বসুমতী, যামিনী, इत्यादि।

याद रखना चाहिये कि বিদ্যুৎ, তৃষ্ণা, সভা, বীণা রুচি, নাড়ী বনিতা, তারা, শ্রেণী, শোভা, ধূলি, নদী, নীতি, সরিৎ, বেণী, সৌদামিনী, লতা, লজ্জা, কথা, নৌকা, নাসিকা, গ্রীবা বিভা, ভাষা হরিদ্রা, জিহ্বা, পুষ্করিণী इत्यादि थोड़ेसे शब्द सदा स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

सामान्य स्त्रीलिंग प्रत्यय।

(क) जिन शब्दोंके अन्तमें "অ" (अकार) होता है, स्त्रीलिङ्ग में "অ" के स्थानमें "আ" (आकार) हो जाता है। जैसे,—ক্ষীণ, ক্ষীণা, সর্ব্ব, সর্ব্বা; সবল, সবলা,, দুর্ব্বল,

दुर्गा ।, बाग, बागा, मनोहर मनोहरा, कोकिल, कोकिला, कृश, कृशा गौर, गौरी इत्यादि।

(ख) जिन जातिवाचक शब्दोंके अन्तमें "अ" होता है, स्त्रीलिङ्गमें "अ" के स्थानमें "ई" हो जाती है। जैसे,— ब्राह्मण ब्राह्मणी मृग, मृगी, बानर, बानरी, अश्व, अश्वी, गोप गोपी, सारस सारसी, पिशाच पिशाची, मानव, मानवी, हंस, हंसी, मानुष, मानुषी, कुरर, कुररी, सर्प, सर्पी, व्याघ्र, व्याघ्री भ्रमर, भ्रमरी, सिंह, सिंही मत्स्य मत्सी इत्यादि।

(ग) जिन शब्दोंके अन्तमें मय, दृश, चर और कर शब्द होते हैं, उनका स्त्रीलिङ्ग प्राय ईकारान्त होता है यानी उनके अन्तमें "ई" लगा दी जाती है। जैसे—प्रस्तरमय, प्रस्तरमयी, मृण्मय, मृण्मयी, यादृश, यादृशी एतादृश एतादृशी खेचर, खेचरी, सुखकर, सुखकरी, जलचर, जलचरी, शुभकर, शुभकरी, स्वर्णमय, स्वर्णमयी, हितकर, हितकरी, किङ्कर, किङ्करी, सहचर सहचरी इत्यादि।

(घ) जिन शब्दोंके अन्तमें "इन" होता है, उनके स्त्रीलिङ्गके रूपमें उनके अन्तमें "ई" हो जाती है। जैसे— दायिन्, दायिनी, विधायिन, विधायिनी, मानिन, मानिनी ज्ञानिन् ज्ञानिनी इत्यादि।

(ङ) जिन शब्दोंके अन्तमें 'वान्' होता है, उनके स्त्रीलिङ्गमें "वान" के स्थानमें "वती" हो जाती है। जैसे,— गुणवान, गुणवती, रूपवान, रूपवती इत्यादि।

(च) जिन शब्दोंके अन्तमें "অক" होता है उनके स्त्रीलिङ्गमें "অক" के स्थानमें "ইকা" हो जाता है। जैसे,—পাচক, পাচিকা, নায়ক, নায়িকা, দায়ক, দায়িকা, বালক, বালিকা, গায়ক, গায়িকা इत्यादि।

(छ) अङ्गवाचक शब्द, स्त्रीलिङ्गके विशेषणमें, प्राय "ঈ"-कारान्त हो जाते हैं। जैसे,—সুকেশ, সুকেশী, সুমুখ, সুমুখী इत्यादि।

(ज) प्रथम, द्वितीय और तृतीय शब्दोंके सिवा और सब पूरणवाचक शब्दोंके बाद स्त्रीलिङ्गमें "ঈ" होती है, किन्तु प्रथम, द्वितीय, और तृतीय के बाद "আ" होता है। जैसे,—চতুর্থী, পঞ্চমী, ষষ্ঠী, সপ্তমী, অষ্টমী, নবমী, দশমী इत्यादि और প্রথমা, দ্বিতীয়া, তৃতীয়া।

(झ) गुणवाचक "উ" कारान्त शब्दोंके बाद स्त्रीलिङ्गमें विकल्पसे "ঈ" होती है और पहले "উ" के स्थानमें "ব" होता है। जैसे,—গুরু, গুর্বী, লঘু, লঘ্বী, মৃদু, মৃদ্বী, इत्यादि।

(ञ) जिन शब्दोंके अन्तमें "ঈয়স্" प्रत्यय होता है उनके स्त्रीलिङ्गके रूपमें, अन्तमें "ঈ" हो जाती है। जैसे,—লঘীয়স, লঘীয়সী, গরীয়স, গরীয়সী, ভূয়স, ভূয়সী, প্রেয়স, প্রেয়সী इत्यादि।

(ट) जिन शब्दोंके अन्तमें "অৎ" होता है उनके स्त्रीलिङ्गमें प्राय पीछे "ঈ" हो जाती है। जैसे—মহৎ, মহতী, সৎ, সতী, গুণবৎ, গুণবতী इत्यादि।

(ठ) जिन शब्दोंके अन्तमें "मत्" और "वत्" होते हैं उनके स्त्रीलिङ्गके रूपोंमें अन्तमें "ई" हो जाती है। जैसे,—

शब्द	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
श्रीमत्	श्रीमान्	श्रीमती
दयावत्	दयावान्	दयावती
ज्ञानवत्	ज्ञानवान्	ज्ञानवती

(ड) जिन शब्दोंके अन्तमें "ता" और "ति" प्रत्यय होते हैं, वे शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे,—गति, मति, भक्ति, लघुता, भद्रता इत्यादि।

(ढ) मातृ दुहितृ, स्वसृ ननान्दृ, यातृ आदि कुछ शब्दोंको छोड़कर जिन शब्दोंके अन्तमें "ऋ" होती है उनके स्त्रीलिङ्गके रूपोंमें, शब्दके अन्तमें "ई" हो जाती है और "ऋ" के स्थानमें "र" होजाता है। जैसे,—

शब्द	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
दातृ	दाता	दात्री
विधातृ	विधाता	विधात्री
कर्तृ	कर्ता	कर्त्री

लेकिन मातृ का माता और दुहितृ का दुहिता इत्यादि होता है।

(ण) काल, गौर, तरुण, पुत्र प्रभृति शब्दोंके स्त्रीलिङ्गमें दीर्घ "ई" होजाती है। जैसे,—

काल, काली, गौर, गौरी, तरुण, तरुणी, कुमार, कुमारी, पुत्र, पुत्री, मण्डल, मण्डली, नगर, नगरी, सुन्दर, सुन्दरी

চণ্ড, চণ্ডী, পিতামহ, পিতামহী, নর্ত্তক, নর্ত্তকী, নট, নটী, নর, নারী, সত্ত সতী, কিশোর, কিশোরী, নাগ নাগী।

(ग) कुछ शब्दोंके रूप स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्गमें एकसे होते हैं। जैसे—সম্রাট্, বিরাট, কবি इत्यादि।

(घ) कुछ शब्द स्त्री जातिका बोध न करानेपर भी सदा स्त्रीजातिके रूपमें गिने जाते हैं। जैसे—জাহ্নবী, হরীতকী, বদরী, কাশী, কাকী, কাবেরী, কদলী, মধুবা इत्यादि।

(ङ) कुछ ह्रस्व "ই" कारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द विकल्पमें "ঈ" कारान्त हो जाते हैं। जैसे,—রজনি রজনী, রাত্রি রাত্রী, শ্রেণি, শ্রেণী, ভূমি, ভূমী, সূচি, সূচী, इत्यादि।

(च) জনক प्रभृति कुछ शब्दोंके स्त्री लिङ्गके रूपमें भेद होता है। जैसे—

জনক জননী পিতা মাতা, বর, কন্যা, ভ্রাতা, ভগিনী, নর, নারী, পুরুষ, স্ত্রী, হিম হিমানী, মামা, মামী। বুড়া বুড়ী, ঠাকুর, ঠাকুরাণী। চণ্ডাল, চণ্ডালিনী, শুক, সারী इत्यादि।

(छ) कुछ पुंलिङ्ग शब्दोंके स्त्रीलिङ्गके रूप नीचे और दिखाये जाते हैं। जैसे,—

পুংলিঙ্গ	স্ত্রীলিঙ্গ	পুংলিঙ্গ	স্ত্রীলিঙ্গ
রাজা	রাজ্ঞী	বিদ্বান্	বিদুষী
বরুণ	বরুণানী	মাতুল	মাতুলানী*

* মাতুল, शब्दके स्त्रीलिङ्ग में तीन रूप होते हैं—মাতুলানী, মাতুলী, মাতুলা।

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	ब्रह्माणी
युवा	युवती	भव	भवानी
वरुण	वरुणानी	पापीयान्	पापीयसी
वैश्य	वैश्या	दास	दासी
शूद्र	शूद्रा	पौत्र	पौत्री
दौहित्र	दौहित्री	खुड़ा	खुड़ी

वचन ।



जिसके द्वारा वस्तुकी संख्या जानी जाती है, उसे "वचन" कहते हैं ।

वचन दो प्रकारके होते हैं —

(१) एकवचन ।

(२) बहुवचन ।

एक वचन के विभक्ति-युक्त पदके द्वारा केवल एक पदार्थ जाना जाता है । जैसे, बालक ।

बहुवचन के विभक्ति पदके द्वारा, एक भिन्न, अनेक वस्तुओं का ज्ञान होता है । जैसे, बालकेरा ।

"बालक" कहनेसे केवल एक बालक और 'बालकेरा' कहनेसे अधिक बालक समझे जाते हैं ।

बहुवचन में शब्दके पीछे रा, एरा, दिग, गण, गुला, गु

इत्यादि शब्द लगाये जाते हैं। जैसे—মনুষ্যেরা, লোকগুলা, পুস্তকগুলী।*

पुरुष।



कारकके आश्रय को ही पुरुष कहते है। जैसे,—

যদু পড়িতেছে = यदु पढ़ता है।

রামকে পড়াও = रामको पढ़ाओ।

यहाँ "यदु' कर्त्ताकारक है और "राम" कर्मकारक है। अतएव "यदु" और "राम" में से प्रत्येक कारक के आश्रय है। इसीसे इन में से प्रत्येक "पुरुष" कहा जाता है।

पुरुष तीन प्रकारके होते हैं —

(१) उत्तम पुरुष। जैसे, আমি (मैं)

(२) मध्यम पुरुष। जैसे, তুমি (तुम)

(३) प्रथम पुरुष। जैसे, তিনি (वह)

---

* अप्राणिवाचक शब्दोंके बहुवचनमें রা, এরা, चिह्न नहीं लगाये जाते। ऐसे शब्दोंके साथ গুলি, গুলা, সকল, সমূহ इत्यादि शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं। नीचे दर्जे के प्राणिवाचक शब्दोंके अन्तमें भी রা, এরা का प्रयोग नहीं होता। उनके अन्तमें भी গুলা, গুলি, इत्यादि प्रयोग किये जाते है। जैसे, পত্রগুলি, জলবিন্দু সকল, পতঙ্গগুলি, কীটগুলা इत्यादि। ऐसा कभी नहीं होता—পাত্রেরা, জলবিন্দুরা, পতঙ্গেরা, কীটেরা इत्यादि।

इन सब पुरुषोंके बाद के, ए ये, तै, द्वारा दिया, हइते थेके, र, ए, एर, वगैरह शब्द जो इस्तेमाल होते हैं इन्हें विभक्ति अथवा चिह्न कहते हैं। विभक्ति द्वारा ही वचन और कारक जाने जाते हैं।

कारक।



क्रियाके साथ जिस पदका किसी तरहका सम्बन्ध रहता है उसे कारक कहते हैं। जैसे—बालक खेलितेछे, आमि वृक्ष देखितेछि, तुमि आम्र गाछेर शाखा कर्त्तन कर।

यहाँ खेलितेछे देखितेछि और कर्त्तन ये तीनों क्रिया हैं। खेलनेका काम बालक करता है, इससे खेलितेछे क्रिया का सम्बन्ध बालकसे है, अतएव बालक एक कारक है। आमि वृक्ष देखितेछि, इस जगह मेरे देखनेका काम वृक्ष पर सम्पन्न होता है, सुतरां देखितेछि इस क्रियाका आमि और वृक्षसे सम्पर्क है। अतएव आमि और वृक्ष दोनोंही कारक हैं।

कारक छै प्रकारके होते हैं। जैसे,—(१) कर्त्ता, (२) कर्म, (३) करण (४) सम्प्रदान, (५) अपादान, (६) अधिकरण।

कर्त्ता।



जो करता है, जो होता है अर्थात् जिससे कर्तृक क्रिया सम्पन्न होती है, उसे कर्त्ता कहते हैं। कर्त्तामें प्रथमा ...

होती है। जैसे, রাম পুস্তক পড়িতেছে, শিশু চাঁদ দেখিতেছে, রাজা আসিতেছেন ইত্যাদি।

यहाँ पर पड़ितेछे, क्रियाका "कर्त्ता" राम है, क्योंकि जो करता है उसीको कर्त्ता कहते हैं। राम पुस्तक पड़ितेछे यहाँ पर कौन पुस्तक पढ़ता है? राम। इसलिये 'राम' कर्त्ता है। शिशु चाँद देखितेछे, यहाँ पर चाँदको कौन देखता है? शिशु। इसलिये "शिशु" कर्त्ता है। राजा आसितेछेन यहाँ पर आता है कौन? राजा। इसलिये 'राजा' कर्त्ता है।

कर्म्म।



जो किया जाता है, जो सुना जाता है, जो देखा जाता है, जो लाया जाता है जो दिया जाता है, जो लिया जाता है, जो रक्खा जाता है, जो पकड़ा जाता है, जो मारा जाता है, उसे कर्म्म कहते हैं। कर्म्ममें द्वितीया विभक्ति होती है। कर्म्मके विभक्तियों के चिह्न ये हैं,—কে, রে, এরে अथवा ॥। जैसे, শ্যাম হরিকে ধরিতেছে, সিংহ মাংস খায়, রাম পুস্তক পড়িতেছে ইত্যাদি।

क्रियामें क्या या किसको यह प्रश्न करनेसे जो पद मिलता है, उसीको उस क्रियाका कर्म्म जानना। क्रिया में "कौन" प्रश्न करनेसे कर्त्ता मिलता है।

श्याम हरिके धरितेछे 'धरितेछे' क्रिया है। कौन धरितेछे ? इस प्रश्नके उत्तरमें श्याम मिलता है, इसलिये 'श्याम' कर्त्ता है। श्याम क्या वा किसको पकड़ता है ? इस प्रश्न से हरि मिलता है, इसलिये 'हरि' कर्म है। इसी तरह और उदाहरण समझ लो।

कुछ क्रियाओंके दो दो कर्म्म रहते हैं, अर्थात् जिज्ञासा, देओया इत्यादि कतिपय धातुओं तथा कथनार्थ और णिजन्त धातुओंके दो-दो कर्म्म रहते हैं। इन धातुओंका नाम द्विकर्म्मक है। जैसे—माता शिशुके चन्द्र देखाइतेछेन, गुरु शिष्यके काव्य पड़ाइतेछेन, आमि तारकके टाका दियाछि, धीरेन्द्र सतीशके इहा बलिल, इत्यादि।

माता शिशुके चन्द्र देखाइतेछेन यहाँपर 'देखाइतेछेन' क्रिया है। कि देखाइतेछेन ? चन्द्र इसलिये "चन्द्र" एक कर्म है। और काहाके देखाइतेछेन ? शिशुके, इसलिये 'शिशुके" और एक कर्म्म हुआ, अतएव देखाइतेछेन इस क्रियाके दो कर्म्म हुये। गुरु शिष्यके काव्य पड़ाइतेछेन, यहाँपर पढ़ाइतेछेन क्रिया है। कि पड़ातेछेन ? काव्य, इसलिये "काव्य' एक कर्म्म हुआ। काहाके पड़ाइतेछेन ? "शिष्य के", इस लिये "शिष्य" और एक कर्म हुआ, अतएव पड़ाइतेछेन क्रिया द्विकर्मक हुई। इसी तरह आमि तारकके टाका दियाछि, यहाँपर 'दियाछि' क्रिया हुई, कि

रक्षित, गृहीत, उत्पन्न, अन्तर्हित, निवारित विरत, पराजित, आवद्ध या भेदित होता है, उसका नाम अपादान कारक है। अपादानमें पञ्चमी विभक्ति होती है। इस विभक्ति का चिह्न है—हइते। जैसे—ব্যাঘ্র হইতে ভীত হইতেছে, বৃক্ষ হইতে পত্র পড়িতেছে, দস্যু হইতে ধন রক্ষা করিতেছে, মেঘ হইতে বৃষ্টি হইতেছে, পাপ হইতে বিরত হইবে, দুষ্ট লোক হইতে অন্তর্হিত হইতেছে, পুষ্প হইতে ফল উৎপন্ন হয় ইত্যাদি।

व्याघ्र हइते भीत हइतेछे, यहाँपर व्याघ्रसे भीत होने के कारण "व्याघ्र" अपादान कारक हुआ। वृक्ष हइते पत्र पड़ि-तेछे, वृक्षसे पत्रका गिराव होता है इसलिये 'वृक्ष' अपादान कारक हुआ। दस्यु हइते धन रक्षा करितेछे यहाँपर दस्यु से धन रक्षा करनेके कारण 'दस्यु" अपादान कारक हुआ। मेघ हइते वृष्टि हइतेछे, यहाँपर मेघसे वृष्टि पैदा होती है, इसलिये 'मेघ' अपादान कारक हुआ। पाप हइते विरत हइबे, यहाँ पर पापसे विरत होनेके कारण "पाप" अपादान कारक हुआ। दुष्ट लोक हइते अन्तर्हित हइतेछे, यहाँपर दुष्टलोक से अन्तर्हित होनेके कारण "दुष्ट लोक" अपादान कारक हुआ। पुष्प हइते फल उत्पन्न हय यहाँपर पुष्प से फल पैदा होता है, इसलिये "पुष्प" अपादान कारक हुआ।

হইতে या থেকে इत्यादि अपादान कारक की विभक्तियाँ हैं। जैसे ५ थेके तीन वियोग कर। भक्षक

हइते भय पाइतेछि। बाड़ी थेके जान, इत्यादि। यहाँपर "पाँच", "भल्लूक" और "बाड़ी" अपादान कारक है। हइते और थेके इन दो विभक्तियों द्वारा अपादान कारक जाना जाता है।

अधिकरण।



वस्तु या क्रिया के आधारको अधिकरण कहते हैं। जैसे— বায়ু সর্ব্ব স্থানে আছে, বৃক্ষে ফল আছে, দেহে বল আছে, দুগ্ধে মাখন আছে ইত্যাদি।

वायु सर्व्व स्थाने आछे, यहाँ पर "सर्व्व स्थाने" यह पद 'आछे' क्रिया का आधार है, इसलिये "सर्व्व स्थाने" अधिकरण कारक हुआ। वृक्षे फल आछे यहाँपर 'आछे' क्रिया है, कोथाय आछे? वृक्षे, इस लिये "वृक्षे" अधिकरण कारक हुआ। देहे बल आछे, यहाँ पर 'आछे' क्रिया है, कोथाय आछे? देहे, इसलिये "देहे" अधिकरण कारक हुआ। दुग्धे माखन आछे, यहाँ पर दुग्ध माखनका आधार है, इसलिये "दुग्धे" अधिकरण कारक हुआ।

তে এতে, এ, য়, য,—ये सब अधिकरणकी विभक्तियाँ हैं। जैसे —জলে মৎস্য বাস করে, শাখায় কিংবা শাখাতে বসিয়া কাক ডাকিতেছে ইত্যাদি।

यहाँपर "जले, शाखाय या शाखाते" अधिकरण कारक है।

अधिकरण तीन प्रकारके होते हैं—आधाराधिकरण, कालाधिकरण और भावाधिकरण।

वस्तु या क्रिया का आधार होने हो से उसको आधाराधिकरण कहते हैं। आधाराधिकरण चार प्रकार के हैं,—विषयाधार, व्याप्ताधार, सामिप्याधार, और एक देशाधार।

कोई वस्तु अधिकरण होने से अगर "तद्विषये" (उसमें) ऐसा अर्थ समझ पड़े, तो उसका नाम "विषयाधार अधिकरण" होता है। जैसे—शिल्पकारेर शिल्प कर्म्मे नैपुण्य देखाय अर्थात् शिल्पकार्य्य में निपुणता है, शास्त्रे पारदर्शिता आछे, यहांपर "शिल्पकर्म्मे" और शास्त्रे" ये दो पद विषयाधार अधिकरण हैं।

जो सब आधार में व्याप्त होकर रहता है, उसका नाम "व्याप्ताधार" है। जैसे—इक्षुते रस आछे अर्थात् ऊख में रस है। दुग्धे माखन आछे, अर्थात् दूध में मक्खन है, इसलिये यहां पर "इक्षुते" और "दुग्धे" ये दोनों पद व्याप्ताधार अधिकरण हुए।

समीपे (नज़दीक, पास) यह अर्थ प्रकट होने से उसे "सामीप्याधार" कहते हैं। जैसे—गङ्गाय वास करे, यहां पर गङ्गा के निकट रहता है ऐसा अर्थ प्रकट होता है, इसलिये "गङ्गाय" पद सामीप्याधार अधिकरण है।

यदि एकाधार हो, तो उसे "एक देशाधिकरण" कहते हैं। जैसे—वने व्याघ्र आछे। यहांपर यह नहीं समझना होगा

कि सारे वन में बाघ हैं, बल्कि यह समझना होगा कि वन के किसी एक स्थान में बाघ है, इसलिये 'वने' यह एक देशाधार अधिकरण हुआ।

कालवाचक शब्द अधिकरण होने से उसको "कालाधिकरण" कहते हैं अर्थात् दिन रात्रि, मास पक्ष, यखन, तखन, इत्यादि समय-बाचक शब्द अगर अधिकरण हो, तो उसको कालाधिकरण कहते हैं। जैसे—प्रत्यूषे गात्रोत्थान करा उचित, मध्याह्ने सूर्य्येर किरण खरतर हय, तिनि तखन छिलेन ना, यखन याइबे आमिओ याइब, वर्षाय वृष्टि हय इत्यादि।

प्रत्यूषे गात्रोत्थान करा उचित, यहाँपर प्रत्यूषे अर्थात् प्रभात काल (सवेरे) समझा जाता है इस लिये 'प्रत्यूषे' यह पद कालाधिकरण है। मध्याह्ने सूर्य्येर किरण खरतर हय, यहाँ पर मध्याह्ने कहनेसे मध्याह्नकाल समझा जाता है, तिनि तखन छिलेन ना, यहाँ पर तखन कहने से वही समय समझा जाता है। यहाँपर "तखन" पद कालाधिकरण हैं। जखन जाइबे आमिओ जाइब यहाँपर जखन शब्द द्वारा समय समझा जाता है, इसलिये 'जखन' पद कालाधिकरण हुआ। वर्षाय वृष्टि हय यहाँ वर्षा शब्द द्वारा वर्षा-काल समझा जाता है इसलिये "वर्षा" पद कालाधिकरण है।

गमन, दर्शन, भोजन, श्रवण इत्यादि जितने भाव

विहित क्रिया-पद किसी समापिका क्रिया की अपेक्षा करते हैं, उनका नाम भावाधिकरण हैं। जैसे—हरिगमने तिनि दुःखित हइलेन, चन्द्रेर दर्शने आमि बड सुखी हइ, ब्राह्मणेर भोजने सकलेइ सन्तुष्ट हय, आत्मीय वियोगे सकलेइ शोकाकुल हय इत्यादि।

हरिर गमने तिनि दुःखित हइलेन, यहाँ पर हरिर गमने इसका अर्थ 'हरिर गमन हइले, ऐसा कहनेसे किसी समापिका क्रिया को जरूरत होती है, नहीं तो वाक्य सम्पूर्ण नहीं होता, इसलिये "गमने" यह पद भावाधिकरण हुआ। ब्राह्मणेर भोजने सकलेइ सन्तुष्ट हय, यहाँपर ब्राह्मणेर भोजने इसका अर्थ 'ब्राह्मणेर भोजन हइले', ऐसा कहनेसे कोई समापिका क्रिया चाहिये, नहीं तो वाक्य पुरा नहीं होता, इस लिये "भोजने" यह पद भावाधिकरण हुआ। चन्द्रेर दर्शने आमि बड सुखी हइ, यहांपर दर्शने इसका अर्थ 'दर्शन करिले' ऐसा कहने से एक समापिका क्रिया का प्रयोजन होता है, नहीं तो वाक्य समाप्त नहीं होता, इस लिये दर्शने यह भावाधिकरण हुआ। आत्मीय वियोगे सकलेइ शोकाकुल हय, यहाँपर "वियोगे" इसका अर्थ 'वियोग हइले' ऐसा कहनेसे एक समापिका क्रिया आवश्यक है, नहीं तो वाक्य अधूरा रहता है, इस लिये "वियोगे" यह पद भावाधिकरण है।

सम्बन्ध पद।



क्रियाके साथ अन्वित नहीं होता, इसीसे सम्बन्धको कारक नहीं कहते। विशेष्य पद के साथ विशेष्य पदके सम्पर्कको ही "सम्बन्ध पद" कहते हैं। सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। इसका रूप र या एर है। जैसे—रामेर बाड़ी, श्यामेर कापड़, आमेर गाछ, चन्द्रेर किरण, साधुर भद्रता, सागरेर जल इत्यादि।

रामेर बाडी, यहाँ पर राम और बाडी दोनों विशेष्य पद है। बाडीके साथ रामका सम्बन्ध है, क्योंकि रामको छोड़ कर बाडी में दूसरे का अधिकार नहीं है, इसलिये "रामेर" यह पद सम्बन्ध पद हुआ। और राम पद के आगे 'एर' विभक्ति जोडनेसे रामेर पद बना। इसी तरह श्यामेर, आमेर, चन्द्रेर, साधुर, सागरेर ये सब भी "सम्बन्ध पद" हैं।

सम्बोधन।



आह्वान करनेको सम्बोधन कहते हैं। सम्बोधन के समय जो पद प्रयोग किया जाता है उसे "सम्बोधन पद" कहते हैं। जैसे,—

भ्रात चल = भाई चलो।

राम तुमि याओ = राम तुम जाओ।

माधव भाल आछ ?= माधव अच्छे हो ?

ওহে হরি= ओ हरि।

ওরে চন্দ্র= अरे चन्द्र।

ऊपरके उदाहरणोंमें "भ्रात", "राम", "माधव", "हरि और "चन्द्र" सम्बोधन पद हैं।

नोट—सम्बोधन पदोंके आगे হে, ও, অয়ি, হা, অরে, হরে प्रभृति कितने ही अव्यय शब्द प्राय लगाये जाते हैं। लेकिन किसी किसी जगह सम्बोधन पद के पहले सम्बोधन-सूचक अव्यय शब्द नहीं लगाये जाते।

संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार अकारान्त को छोड़ कर और तरह के शब्दों के सम्बोधन पद के एक वचन में रूपान्तर होता है, बहुवचन में नहीं होता।

जैसे,—

शब्द	सम्बोधन पद
शकुन्तला	अयि शकुन्तले
दुर्म्मति	रे दुर्म्मते
सखि	हे सखे
प्रेयसी	हा प्रेयसि
शिशु	हे शिशो
वधू	हा वधु
मातृ	हा मातः
राजा	हे राजन्

शब्द	सम्बोधन पद
भगवान्	हे भगवन्
ज्ञानी	हे ज्ञानिन्
मतिमान्	हे मतिमन्

ऊपर जो सम्बोधन के रूप दिखाये गये हैं, वह सब संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार है और प्राय बँगला भाषामें संस्कृत के कायदे से ही रूपान्तर होकर सम्बोधन व्यवहार किये जाते हैं, लेकिन बहुत से बँगला व्याकरणाचार्यों का मत है कि बँगला में सम्बोधन पद के रूप ठीक कर्त्ताकारक की तरह होते हैं। जैसे, हे पिता, रे दुर्म्मति, हे शिशु, ओ सखा, हा भगवान् इत्यादि, लेकिन अधिकांश लोगोंने संस्कृत का कायदा ही ठीक माना है।

"शकुन्तला" शब्द आकारान्त है यानी शकुन्तला का अन्तिम अक्षर "आ" है। आकारान्त सभी शब्दों का रूप सम्बोधन में शकुन्तला केसमान होगा। जैसे,—अयि शकुन्तले, दुर्गे इत्यादि।

"दुर्म्मति" शब्द इकारान्त है यानी दुर्म्मति शब्दका अन्तिम अक्षर "इ" है। इकारान्त शब्दों के रूप सम्बोधन में "दुर्म्मतिके" समान होंगे। जैसे,—रे दुर्म्मते, हे कवे।

इसी तरह सम्बोधनमें ईकारान्त शब्दोंके रूप "प्रेयसि", उकारान्त शब्दोंके रूप "शिशो", ऊकारान्त शब्दोंके रूप

"वधु", सकारान्त शब्दोंके रूप "मास", नकारान्त शब्दोंके रूप 'राजन्" की तरह होंगे।

अर्थ विशेषमें विभक्ति निर्णय।

जहाँ विना, व्यतिरेके, व्यतीत, बै, भिन्न इत्यादि शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं, वहाँ इनके पहिले का पद कर्म्मकारक के अनुरूप होता है। जैसे,—

धन विना सुख हय ना।
धन बिना सुख नहीं होता।
ताँहाके भिन्न काज हइबे ना।
उसके सिवाय और से काम न होगा।

धिक् और नमस्कारार्थ शब्दोंका योग होने से, पहिलेके शब्द में कर्म्म को विभक्ति लगती है—यानी शब्द के बाद "के" लगाना होता है। जैसे,—

मूर्खके धिक्	तोमाके नमस्कार।
मूर्खको धिक्कार।	तुमको नमस्कार।

जिन शब्दों के साथ सहित, प्रति, समान, तुल्य, उपरि, समान, इत्यादि शब्दोंका योग होता है अथवा जिन शब्दों के साथ ये शब्द लगाये जाते हैं, उन शब्दों में सम्बन्ध पदको विभक्तियां लगती हैं। जैसे,—

तोमार सहित।	वाक्येर उपरि।

তাহার সঙ্গে । রামের তুল্য ।

আমার প্রতি । তোমার সমান ।

प्राधान्य-वाचक शब्दों का योग होने से भी "सम्बन्ध" की विभक्ति लगती है। जैसे,—

পর্ব্বতের প্রধান হিমালয় ।

কবির শ্রেষ্ঠ কালিদাস ।

ধার্ম্মিকের শিরোমণি নল ।

अपेक्षार्थ शब्द के परे होने से, पहले के पदको "निर्द्धार" कहते हैं। जैसे,—

রাম অপেক্ষা শ্যাম সুশীল ।

তৈল অপেক্ষা ঘৃত ভাল ।

इन दोनो वाक्योंमें "राम" और "तैल" निर्द्धार पद है।

शब्दरूप ।

विशेष्य पद के लिङ्ग, पुरुष, वचन प्रभृति निरूपित हो चुके हैं। अब विद्यार्थियोंके जानने के लिये शब्दरूप दिखा देते हैं।

पुंलिंग 'मानव' शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	মানব	মানবেরা
	मनुष्य, मनुष्यने	मनुष्य, मनुष्योंने

কারক	একবচন	বহুবচন
কর্ম	মানবকে	মানবদিগকে
	मनुष्यको	मनुष्योंको
করণ	মানব দ্বারা	মানবদিগের দ্বারা
	मनुष्यसे	मनुष्योंसे
সম্প্রদান	মানবকে	মানবদিগকে
	मनुष्यको, के, लिये,	मनुष्योंको, के, लिये
অপাদান	মানব হইতে	মানব সকল হইতে
	मनुष्य से	मनुष्यों से
অধিকরণ	মানবে	মানব সকলে
	मनुष्यमें, पर	मनुष्योंमें, पर
সম্বন্ধ	মানবের	মানবদিগের
	मनुष्यका, के, की,	मनुष्यों का, के, की
সম্বোধন	হে মানব	হে মানবেরা
	हे मनुष्य	हे मनुष्यो

ফল শব্দ।

কারক	একবচন	বহুবচন
কর্ত্তা	ফল	ফল সকল
কর্ম	ফল	ফল সকল
করণ	ফল দ্বারা	ফল সকল দ্বারা

ইত্যাদি।

पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके रूप प्राय ऊपर की तरह ही होते हैं। जिन शब्दों के कारक विशेष में विभक्तियों के भिन्न भिन्न रूप निरूपित किये गये हैं, केवल उन्हीं शब्दोंमें कुछ भेद होता है। अर्थात् अकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त प्रभृति शब्दोंके किसी-किसी कारक में भिन्न रूप होते हैं।

जो शब्द संस्कृत शब्दों से कुछ रूपान्तर होकर बँगला में बरते जाते हैं, उनमें से कुछ शब्द उदाहरण के तौर पर नीचे दिये जाते हैं,—

संस्कृत	बँगला	संस्कृत	बँगला
সখি	সখা	ধনিন্	ধনী
পিতৃ	পিতা	তেজস্	তেজ
ত্বচ	ত্বক্	কলতস্	কলত
বণিজ্	বণিক্	বিদ্বস্	বিদ্বান্
মহৎ	মহান্	রাজন্	রাজা
পাপীয়স্	পাপীয়ান্	দিশ্	দিক্
মনস্	মন	যশস্	যশ
গুণবৎ	গুণবান্	বুদ্ধিমৎ	বুদ্ধিমান্
উপানহ্	উপানৎ	জ্যোতিস্	জ্যোতি
প্রেমন্	প্রেম	পথিন্	পথ
বেধস্	বেধা		

বিশেষণ।

जिस शब्द के प्रयोग करने से किसी का गुण व अवस्था प्रकाशित हो, उसे "विशेषण" या गुणवाचक शब्द कहते हैं जैसे—

শীতল জল = ठण्ढा पानी।
মিষ্ট ফল = मीठा फल।
উত্তম বালক = अच्छा बालक।
বৃদ্ধ অশ্ব = बूढ़ा घोड़ा।
মনোহর পুষ্প = मनोहर फूल।
পুরাতন বৃক্ষ = पुराना पेड़।
লোহিত বসন = लाल कपड़ा।
সৎ লোক = भला आदमी।
বড় গাছ = बड़ा पेड़।
ছোট ছেলে = छोटा लड़का।
অলস বালক = सुस्त बालक।
পাকা আম = पक्का आम।
শুষ্ক ভূমি = सूखी धरती।
গরম দুগ্ধ = गरम दूध।
কাল পাথর = काला पत्थर।
বিশুদ্ধ বায়ু = शुद्ध हवा।

इस जगह "शीतल" शब्द विशेषण है। क्योंकि इस शब्द से ही जल की शीतलता प्रकाशित होती है। इसी भाँति मिष्ट, शुभ्र प्रभृति शब्द भी विशेषण हैं। जिन शब्दों के नीचे काली-काली रेखाएँ खींची हैं, वे सब विशेषण हैं।

कारक, वचन और पुरुष के भेद से विशेषण के रूपमें भेद नहीं होता। क्योंकि उसमें कारक आदि नहीं होते। केवल स्त्रीलिङ्ग में रूप भेद होता है। जैसे, नवीना रमणी, गुनवती भार्य्याके, विद्यावती बालिकाय।

कुछ विशेषण पद कभी कभी, विशेषण के विशेषण होते हैं। जैसे—अत्यन्त कठिन, बड़ मन्द, अति सुस्वादु इत्यादि।

कितने ही विशेषण पद क्रिया के विशेषण हो जाते हैं। जैसे, शीघ्र शिखियाछे, मन्द मन्द वहितेछे।

सर्व्वनाम।

प्रसङ्ग-क्रमसे एक व्यक्ति या एक वस्तुका ज़िक्र बारम्बार करना होता है, लेकिन बार बार एक ही व्यक्ति और एक ही वस्तुका ज़िक्र न करके उनके स्थानोंमें और बहुतसे पद इस्तेमाल करनेका कायदा है। इस तरह किसी पदकी जगह में जो पद आता है उसको "सर्व्वनाम" कहते हैं।

রাম বনে গেলেন, তাঁহার শোকে রাজা মরিলেন।

रामके वन जाने पर, उनके शोकमें राजा मर गये।

इस जगह "राम" इस पदकी जगह 'तांहार' पद आया है, अतएव "तांहार" पद सर्व्वनाम है।

जिस पदकी जगह सर्व्वनाम इस्तेमाल किया जाता है उस पदका जो लिङ्ग और वचन होता है, सर्व्वनामका भी वही लिङ्ग और वचन होता है, किन्तु स्त्रीलिङ्ग और पुं लिङ्ग के भेदसे सर्व्वनाम में भेद नहीं होता। जैसे,—

সীতা অত্যন্ত পতিব্রতা, তিনি পতিকে পরম দেবতা বলিয় মানিতেন।

सीता अत्यन्त पतिव्रता (थी), वह पतिको परम देवता करके मानती थी।

(२) অশ্বগণ বলিষ্ঠ জন্তু, তাহারা ভারী ভারী বস্তু লইয়া দ্রুতবেগে চলিয়া যায়।

घोड़े बलवान् जानवर होते हैं, वे भारी-भारी चीज़ लेकर तेज़ीसे चले जाते हैं।

यहां "सीता" स्त्रीलिङ्ग एक वचनान्त पद है। सुतरां "तिनि" यह सर्व्वनाम भी स्त्रीलिङ्ग और एक-वचनान्त पद है। "अश्वगण" पुं लिङ्ग और बहुवचनान्त पद है, इसी लिये "ताहारा" यह सर्व्वनाम भी पुं लिङ्ग और बहुवचनान्त पद है।

विशेष्य पद की भांति सर्व्वनाम पद के भी वचन पुरुष

और कारक होते हैं। विशेष्य पदका अर्थ देखकर ही वचन, पुरुष और कारक निर्णय किया जाता है।

सर्व्वनाम ये हैं—আমি, মুই, তুমি, তুই, আপনি, তিনি, সে, তাহা, তা, যিনি, যে, যাহা, ইনি, এ, ইহা, এই' উনি, ও উহা, কে, সর্ব্ব, সব, উভয়, অন্য, ইতর, পর, অপর इत्यादि।

युस्मद्, अस्मद्, यद्, तद्, एतद् इदम् किम् इत्यादि, ये सब संस्कृत सर्व्वनाम हैं। इन सब के असल रूप भाषा में काम नहीं आते। इन सब के स्थानमें आमि, तुमि, से, प्रभृति शब्द और उनके रूप भाषामें व्यवहार किये जाते हैं। संस्कृत सर्व्वनाम शब्द कृत, तद्धित और समास में व्यवहार होते हैं।

कितने ही सर्व्वनाम शब्द विभक्तियोंके लगाने से और ही तरह के हो जाते हैं। जैसे,—

मूलशब्द	चलित शब्द सम्भ्रान्तको	असम्भ्रान्तको
অস্মদ্	আমি	
ভবৎ	আপনি	
যুস্মদ্	তুমি	তুই
যদ্	যাহা, যা, তিনি	যে
তদ্	তাহা, তা, তিনি	সে
ইদম্ / এতদ্	এই, ইহা, ইনি	এ

अदस्	ঐ, উহা, উনি	ও
किम्	যে কি, কোন্	
सर्व्व	সব	

विभक्ति योग के समय अन्य, पर उभय इतर, प्रभृति कितने ही शब्दों में कुछ बहु-वचन नहीं होता अर्थात् वे ऐसे के ऐसे ही रहते हैं ।

सर्व्वनाम शब्दके रूप ।



अस्मद् शब्द ।

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	আমি	আমরা
	मैं, मैंने	हम, हमने
कर्म्म	আমাকে	আমাদিগকে
	मुझे, मुझको	हमें, हमको
करण	আমা দ্বারা	আমাদিগের দ্বারা
	मुझ से	हम से
सम्प्रदान	আমাকে	আমাদিগকে
	मुझे, मुझको	हमें, हमको
अपादान	আমা হইতে	আমাদিগের হইতে
	मुझसे	हम से

अधिकरण	আমাতে	আমাদিগের মধ্যে
	मुझमें, मुझपर	हममें, हम पर
सम्बन्ध	আমার	আমাদিগের
	मेरा	हमारा

"যে" शब्द पुं॰ व स्त्री॰।

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	যে	যাহারা
	जिसने	जिन्होंने
कर्म	যাহাকে	যাহাদিগকে
	जिसे, जिसको	जिन्हें, जिनको

इत्यादि।

"সে" शब्द पुं॰ व स्त्री॰

कर्त्ता	সে	তাহারা
	वह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म	তাহাকে	তাহাদিগকে
	उसको	उनको

आदर प्रकाशनार्थ "যে" के स्थानमें "যিনি", "যাহারা" के स्थानमें যাঁহারা, সে के स्थानमें "তিনি", "তাহারা" के स्थानमें 'তাঁহারা' इत्यादि इस्तेमाल किये जाते हैं।

और सब सर्व्वनामों के रूप भी ऐसे ही होते हैं। सर्व्वनाममें 'सम्बोधन" नहीं होता। केवल सात कारक होते हैं

अव्यय।

जिस शब्दके बाद कोई विभक्ति न हो, कारक भेद से जिसके रूपमें भेद न हो, एवं जिसका लिङ्ग और बचन न हो, उसको "अव्यय" कहते हैं।

संयोजक, वियोजक आदि भेदोंसे अव्यय अनेक प्रकारके होते हैं। संयोजक अव्यय ये हैं—এবং ও, আর, আরও, অপিচ, কিঞ্চ, অথচ, যদি, যদ্যপি, যেহেতু, যেন, বব, সুতরাং যেননা, কাজে, কাজের ইত্যাদি।

वियोजक अव्यय ये हैं—বা, কিংবা, অথবা, নতুবা, কি, তথাপি, তথাচ, না হয় ত, নহিলে, নচেৎ, অন্যথা ইত্যাদি।

शोक और विस्मय आदि सूचक अव्यय ये हैं—আঃ, উঃ, হায়, হা, হা উহু, ছিছি রাম রাম, হরি হরি ইত্যাদি।

प्र, परा, अप, सम् अव, अनु, निर, दुर् वि, अधि, सु, उत्, परि, प्रति अभि, अति, अपि, उप, आ। एह, इ, इन्हें "उपसर्ग" कहते हैं।

उपरोक्त उपसर्ग जब क्रिया-वाचक पदके पहले लग जाते हैं, तब वह क्रिया वाचक पद भिन्न भिन्न अर्थ प्रकाश करता है। जैसे,

দান = देना	আদান = लेना
গমন = जाना	আগমন = आना
অপকার = बुराई	উপকার = भलाई

क्रिया प्रकरण।

होना, करना प्रभृतिको "क्रिया कहते हैं। जिन शब्दोंसे यह क्रिया समझी जाती है, उनको "क्रिया पद' कहते हैं। जैसे, हइतेछे, वसितेछे इत्यादि।

भू, स्था, दृश्, गम प्रभृतिको धातु कहते हैं। ये ही क्रिया की मूल होती हैं।

क्रिया दो तरह की होती हैं,—

(१) सकर्म्मक।

(२) अकर्म्मक।

जिन क्रियाओंके कर्म नहीं होते वह सब क्रियाएँ, अर्थात् हओया, याओया, वसा, थाका, पडा, जागा, मरा बाँचा, हासा, नाचा, खेला, काँदा, काँपा, प्रभृति धातुओंकी क्रियाएँ अकर्म्मक होती हैं, क्योंकि इन सब क्रियाओं के कर्म नहीं होते। जैसे, वृष्टि हइतेछे, वृक्षटि मरियाछे इत्यादि। यहाँ हइतेछे, मरियाछे, ये दो क्रिया हैं, लेकिन इनके कर्म नहीं है, इसवास्ते ये अकर्म्मक हैं।

जिन क्रियाओं के कर्म होते हैं, वह सब क्रियाएँ अर्थात् खाओया, देखा, पाठ करा प्रभृति धातुओंकी क्रिया सकर्म्मक होती हैं, क्योंकि इन सब क्रियाओं के कर्म होते हैं। जैसे,

ঈশ্বর মঙ্গল করিতেছেন।

ईश्वर भल करता है।

সে পুস্তক পড়িতেছে।

वह पुस्तक पढ़ता है।

রাম অন্ন ভক্ষণ করিল।

रामने अन्न खाया।

द्विकर्म्मक क्रिया।

बला, लेखा जिज्ञासा, देखान, बुझान प्रभृति क्रियाओंके दो कर्म्म होते हैं। इसी कारणसे इनको द्विकर्म्मक क्रिया कहते हैं। जैसे,

রাম ব্রজকে তোমার কথা বলিয়াছে।

रामने ब्रजको तुम्हारी बात बोल दी है।

আমি আজ তাঁহাকে সে বিষয় জিজ্ঞাসা করিব।

मैं आज उनसे इस विषयमें पूछूँगा।

ললিত শরতকে পাখী দেখাইতেছেন।

ललित् शरतको पक्षी दिखाता है।

पहिले उदाहरणमें "ब्रजके" और "कथा" ये दो कर्म "बलियाछे" क्रियाके हैं। दूसरे में "ताँहाके" और "विषय" ये दो कर्म "जिज्ञासा" क्रियाके हैं। तीसरे में शरतके" और "पाखी" ये दो कर्म "देखाइतेछेन" क्रिया के हैं।

क्रियाके जिस अङ्ग से काम के होनेका समय पाया जाय उसे "काल" कहते हैं।

काल तीन प्रकारके होते हैं,—

(१) वर्त्तमान।
(२) अतीत।
(३) भविष्यत्।

वर्त्तमान काल से यह पाया जाता है कि, क्रिया का कार्य्य अभी हो रहा है। जैसे शिशु খেলিতেছে। यहाँ खेलनेका काम आरम्भ हुआ है, लेकिन समाप्त नहीं हुआ है। ऐसी दशामें 'खेलितेछे' इसी तरह के रूप प्रयोग किये जाते हैं। यही प्रकृत वर्त्तमान काल है।

अतीत काल से यह पाया जाता है कि, क्रियाका काम हो चुका है। अतीतकाल को भूतकाल भी कहते हैं। अपेक्षाकृत पूर्व्व कालकी अतीत क्रियाको क्रमश "अद्यतन" "अनद्यतन" और "परोक्ष" कहते हैं। जैसे, शिशु খেলিল, শিশু খেলিত, শিশু খেলিয়াছিল।

भविष्यत काल से यह पाया जाता है कि, क्रियाका कार्य्य आगे चलकर आरम्भ होनेवाला है। जैसे, শিশু খেলিবে।

विधि, अनुज्ञा सम्भावना प्रभृति क्रियाएँ और भी होती हैं।

किसी विषय के नियम बाँधनेको जो क्रिया इस्तेमाल

अतीत काल।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
करिलाम	करिले	करिल
करियाछि	करियाछ	करियाछे
करियाछिलाम	करियाछिले	करियाछिल

क्रियाओंके रूप समझने में कुछ कठिनता पडती है, लिये हम नीचे कुछ उदाहरण और भी दे देते हैं।

सामान्य भूतकाल।

(*Past Indefinite Tense*)

	एक वचन	बहुवचन
उ० पु०	आमि गियाछिलाम	आमरा गियाछिलाम
	मैं गया	हम गये
म० पु०	तुमि गियाछिले	तोमरा गियाछिले
	तुम गये	तुम लोग गये
प्र० पु०	से गियाछिल	ताहारा गियाछिल
	वह गया	वे गये

আসন্ন ভূতকাল।



(Present Perfect Tense)

	এক বচন	বহুবচন
উ০ পু০	আমি গিয়াছি	আমরা গিয়াছি
	मैं गया हूँ	हम गये हैं
म० पु०	তুমি গিয়াছ	তোমরা গিয়াছ
	तुम गये हो	तुम लोग गये हो
प्र० पु०	সে গিয়াছে	তাহারা গিয়াছে
	वह गया है	वे गये हैं

ভবিষ্যত্ কাল।



(Future Indefinite)

	एक वचन	बहुवचन
উ০ पु०	আমি যাইব	আমরা যাইব
	मैं जाऊँगा	हम जायँगे
म० पु०	তুমি যাইবে	তোমরা যাইবে
	तुम जाओगे	तुम लोग जाओगे
प्र० पु०	সে যাইবে	তাহারা যাইবে
	वह जायगा	वे जायँगे

कभी कभी सकर्मक क्रिया के कर्मपद नहीं होता। उस समय सकर्मक क्रिया अकर्मक की तरह काम करती है। जैसे,

আমি দেখিলাম=मैंने देखा।

তিনি লয়েন নাই=उन्होंने नहीं लिया।

यहाँ "দেখা" और "লওয়া" क्रियाओं के सकर्मक होने पर भी, कर्म-पद के न होनेसे, वे अकर्मक के समान हो गयी हैं।

वचन-भेद से क्रियाके रूपमें फर्क नहीं होता। जैसे,—

আমি করিতেছি=मैं करता हूँ।

আমরা করিতেছি=हम लोग करते हैं।

इस जगह दोनों वचनों में ही एक ही प्रकार की क्रिया का प्रयोग हुआ है। लेकिन हिन्दीमें ऐसा नहीं है। हिन्दीमें वचनके अनुसार क्रियामें भेद हो जाता है। जैसे, मैं करता हूँ और हम करते हैं। बँगला में "আমি" एक वचनके लिये "করিতেছি" और "আমরা" बहुवचनके लिये भी "করিতেছি" एक ही प्रकार की क्रिया इस्तेमाल की गयी है। लेकिन हिन्दीमें "मैं" के लिये 'करता हूँ" और "हम" के लिये 'करते हैं" भिन्न-भिन्न रूप की क्रियाओंका प्रयोग किया गया है।

पुरुष और काल भेद से क्रिया का रूपान्तर हो जाता है। "আমি" इस पद की क्रिया को उत्तम पुरुष की क्रिया कहते

है। "तुम" इस पद की क्रियाको मध्यम पुरुष की क्रिया कहते हैं। इन के सिवाय और पद की क्रिया को प्रथम पुरुष की क्रिया कहते हैं। जैसे,—

আমি করিতেছি = मैं करता हूँ।

তুমি করিতেছ = तुम करते हो।

সে করিতেছে = वह करता है।

"আমি" उत्तम पुरुष है, उसकी क्रिया भी उत्तम पुरुष है। "তুমি" मध्यम पुरुष है, उस की क्रिया भी मध्यम पुरुष है। "से" प्रथम पुरुष है उस की क्रिया भी प्रथम पुरुष है।

प्रथम पुरुष (3rd Person) के सम्भ्रान्त या माननीय होने से क्रियाके अन्तमें "न" और लगा दिया जाता है। जैसे,—

(১) তিনি করিয়াছেন = उन्होंने किया।

(২) সে করিয়াছে = उसने किया।

पहले उदाहरण में "तिनि" प्रथमपुरुष और आदरणीय है, इसी से उसकी क्रिया "करियाछे" में 'न' जोड़ दिया गया है, किन्तु "से' प्रथम पुरुष और साधारण मनुष्य है, इससे उसकी क्रियामें 'न' नहीं जोड़ा गया है।

कृदन्त।



जिस क्रियाके द्वारा वाक्य की समाप्ति न हो, वाक्य की

समाप्ति करनेके लिये एक और क्रिया की दरकार पड़े, उसको "असमापिका क्रिया" कहते हैं। जैसे, बलिया, करिते याइते इत्यादि।

जिस जगह एक क्रिया करने पर और एक क्रिया करने की बात कहनी पड़े, उस जगह पहली क्रिया के अन्तमें "লে" जोड़ना पड़ता है। जैसे—

তিনি বলিলে আমি যাইব।

उनके बोलनेसे जाऊँगा।

इसी तरह করিলে, দিলে इत्यादि समझो।

निमित्त अर्थमें क्रियाके पीछे "তে" जोड़ा जाता है। जैसे,

দিতে = দিবার নিমিত্ত = देनेके लिये।

যাইতে = যাইবার নিমিত্ত = जानेके वास्ते।

अनन्तरके अर्थमें धातुके बाद "যা" जोड़ा जाता है। जैसे,

যাইযা = গমনানন্তর = जाकर।

দিযা = দানানন্তর = देकर।

শুইযা = শয়নানন্তর = सोकर इत्यादि।

जब क्रिया को विशेष्य पद करना होता है, तब उसके बाद "অ", "ওয়া" इनमें से एकको जोड़ना होता है। जैसे,

বলা বা বলিবা = बोलना।

করা বা করিবা = करना।

যাওয়া বা যাইবা = जाना।

ऐसे प्रत्ययोंका नाम "कृत" और निष्पन्न पदोंका नाम "कृदन्त" है।

धातुके उत्तर "अन" और "ति" प्रत्यय होते हैं। "अन" और "ति" प्रत्ययान्त पद प्राय ही क्रिया वाचक विशेष्य होते हैं। जिन पदोंके अन्तमें "ति" होती है वे स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
স্তু	অন, তি	স্তবন, স্তুতি	স্তবন করা
स्तु	अन, ति	स्तवन, स्तुति	स्तवन करनेका काम
কৃ	অন, তি	করণ, কৃতি	করা
कृ	अन, ति	करण कृति	करना, काम
গম	অন, তি	গমন, গতি	যাওয়া
गम	अन, ति	गमन, गति	जानेका काम
মন	অন, তি	মনন, মতি	ভাবা
मन	अन, ति	मनन, मति	मनन, मति
দৃশ	অন, তি	দর্শন, দৃষ্টি	দেখা
दृश	अन, ति	दर्शन, दृष्टि	देखनेका काम
সৃজ	অন, তি	সর্জ্জন, সৃষ্টি	প্রস্তুত করা
सृज	अन, ति	सर्ज्जन, सृष्टि	प्रस्तुत करनेका काम
বচ	অন, তি	বচন, উক্তি	বলা
वच	अन, ति	वचन, उक्ति	बोलनेका काम

धातुके उत्तर कर्मवाच्य और अतीत कालमें "त" प्रत्यय

होता है। जिनके अन्तमें "त" प्रत्यय होता है वे पद प्र
ही कर्मके विशेषण होते हैं। जैसे,

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
कृ	ত (क्त)	কৃত	जो किया गया है।
শ্রু	ত	শ্রুত	जो सुना गया है।
বি+স্তৃ	ত	বিস্তীর্ণ	जो व्याप्त है।
ভক্ষ	ত	ভক্ষিত	जो खाया गया है।
বচ	ত	উক্ত	जो कहा गया है।
যুজ	ত	যুক্ত	जो जोड़ा गया है।
দা	ত	দত্ত	जो दिया गया है।
গৈ	ত	গীত	जो गाया गया है।
জ্ঞা	ত	জ্ঞাত	जो जाना गया है।
বন্ধ	ত	বদ্ধ	जो बाँधा गया है।
ভজ	ত	ভক্ত	जो भजा गया है।
পা	ত	পীত	जो पिया गया है।
বি+ধা	ত	বিহিত	जो किया गया है।
ভুজ	ত	ভুক্ত	जो खाया गया है।
ছিদ	ত	ছিন্ন	जो काटा गया है।

धातुके उत्तर "ता" (तृन्), "ई" (णिन्) "अ
(णक), "अन" प्रभृति प्रत्यय लगाये जाते हैं। जिन
अन्तमें ये प्रत्यय होते हैं, वे कर्त्ताके विशेषण होते हैं

अकर्मक धातुके कर्तृवाच्य अतीत कालमें "ত" (त) लगाया जाता है। जैसे,

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
দা	তা (তৃণ)	দাতা	जो दे।
শ্রু	তা	শ্রোতা	जो सुने।
জি	তা	জেতা	जो जय करे।
কৃ	তা	কর্ত্তা	जो करे।
বচ	তা	বক্তা	जो बोले।
ভুজ	তা	ভোক্তা	जो खाय।
গ্রহ	তা	গ্রহীতা	जो ग्रहण करे।
সৃজ	তা	স্রষ্টা	जो रचे।
স্থা	ঈ (ণিন)	স্থায়ী	जो स्थिर रहे।
ভূ	ঈ	ভাবী	जो हो।
দা	ঈ	দায়ী	जो दान करे।
যুজ	ঈ	যোগী	जो योग करे।
জি	ঈ	জয়ী	जो जय करे।
কৃ	অক	কারক	जो करे।
ভজ	অক	ভাজক	जो भाग करे।
যুজ	অক	যোজক	जो योग करे।
নিন্দ	অক	নিন্দক	जो निन्दा करे।
পঠ	অক	পাঠক	जो पढ़े।
পচ	অক	পাচক	जो पाक करे।

होता है। जिनके अन्तमें "त" प्रत्यय होता है वे पद प्रायः हो कर्मके विशेषण होते हैं। जैसे,

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
কৃ	ত (ক্ত)	কৃত	जो किया गया है।
শ্রু	ত	শ্রুত	जो सुना गया है।
বি+স্তৃ	ত	বিস্তীর্ণ	जो व्याप्त है।
ভক্ষ	ত	ভক্ষিত	जो खाया गया है।
বচ	ত	উক্ত	जो कहा गया है।
যুজ	ত	যুক্ত	जो जोड़ा गया है।
দা	ত	দত্ত	जो दिया गया है।
গৈ	ত	গীত	जो गाया गया है।
জ্ঞা	ত	জ্ঞাত	जो जाना गया है।
বন্ধ	ত	বদ্ধ	जो बाँधा गया है।
ভজ	ত	ভক্ত	जो भजा गया है।
পা	ত	পীত	जो पिया गया है।
বি+ধ	ত	বিহিত	जो किया गया है।
ভুজ	ত	ভুক্ত	जो खाया गया है।
ছিদ	ত	ছিন্ন	जो काटा गया है।

धातुके उत्तर "ता" (तृन्), "ई" (णिन्) "अक" (णक), "अन" प्रभृति प्रत्यय लगाये जाते हैं। जिनके अन्तमें ये प्रत्यय होते हैं, वे कर्त्ताके विशेषण होते हैं।

अकर्मक धातुके कर्तृवाच्य अतीत कालमें "ত" (क्त) लगाया जाता है। जैसे :

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
দা	তা (তৃণ)	দাতা	जो दे।
শ্রু	তা	শ্রোতা	जो सुने।
জি	তা	জেতা	जो जय करे।
কৃ	তা	কর্ত্তা	जो करे।
বচ	তা	বক্তা	जो बोले।
ভুজ	তা	ভোক্তা	जो खाय।
গ্রহ	তা	গ্রহীতা	जो ग्रहण करे।
সৃজ	তা	স্রষ্টা	जो रचे।
স্থা	ই (ণিন)	স্থায়ী	जो स्थिर रहे।
ভূ	ই	ভাবী	जो हो।
দা	ই	দায়ী	जो दान करे।
যুজ	ই	যোগী	जो योग करे।
জি	ই	জয়ী	जो जय करे।
কৃ	অক	কারক	जो करे।
ভজ	অক	ভাজক	जो भाग करे।
যুজ	অক	যোজক	जो योग करे।
নিন্দ	অক	নিন্দক	जो निन्दा करे।
পঠ	অক	পাঠক	जो पढे।
পচ	অক	পাচক	जो पाक करे।

धातु	प्रत्यय	शब्द	अर्थ
গ্রহ	অক	গ্রাহক	जो ग्रहण करे।
গৈ	অক	গায়ক	जो गान करे।
হন	অক	ঘাতক	जो मारे।
দৃশ	অক	দর্শক	जो देखे।
নৃত	অক	নর্ত্তক	जो नाचे
দা	অক	দায়ক	जो दान करे।
শী	অক	শায়ক	जो सोवे।
রুধ্	অক	রোধক	जो रोध करे।
স্তু	অক	স্তাবক	जो स्तव करे।
ভূ	অক	ভাবক	जो हो।
হৃ	অক	হারক	जो हरण करे।
ছিদ্	অক	ছেদক	जो काटे।
গম	ত (ক্ত)	গত	जो बीत गया।
শ্রম	ত	শ্রান্ত	थका हुआ।
জন	ত	জাত	पैदा हुआ।
ভূ	ত	ভূত	जो हुआ है।
ভিদ	ত	ভিন্ন	छोड़ा हुआ।
মদ	ত	মত্ত	मतवाला।
মৃ	ত	মৃত	जो मर गया।

धातुके उत्तर "तव्य", "अनीय" और "य" प्रत्यय होता है। जिन धातुओंके बाद ये प्रत्यय लगते हैं वे सब धातु कर्मकारकके विशेषण होते हैं और भविष्यत् कालका अर्थ करते हैं। जैसे,

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
শ্রু	তব্য, অনীয়, য	শ্রোতব্য, শ্রবণীয়, শ্রব্য	যাহা শুনা যায়।
श्रु	तव्य, अनीय, य	श्रोतव्य, श्रवणीय श्रव्य	जो सुना जाय।
গ্রহ	তব্য, অনীয়, য	গ্রহীতব্য, গ্রহণীয়, গ্রাহ্য	যাহা লওয়া যায়।
ग्रह	तव्य, अनीय, य	ग्रहीतव्य, ग्रहणीय, ग्राह्य	जो लिया जाय।
গম	তব্য, অনীয় য	গন্তব্য, গমনীয় গম্য	যেখানে যাওয়া যায়।
गम	तव्य, अनीय, य	गन्तव्य, गमनीय, गम्य	जाने योग्य, जहाँ जाया जाय।
ভুজ	তব্য, অনীয়, য	ভোক্তব্য, ভোজনীয়, ভোজ্য	যাহা খাওয়া যায়।
भुज	तव्य, अनीय, य	भोक्तव्य, भोजनीय, भोज्य	जो खाया जाय, खाने योग्य।
কৃ	তব্য, অনীয়, য	কর্ত্তব্য, করণীয়, কার্য্য	যাহা করা যায়।
कृ	तव्य, अनीय, य	कर्त्तव्य, करणीय, कार्य्य	जो करा जाय, करने योग्य।
পা	তব্য, অনীয়, য	পাতব্য, পানীয়, পেয়	যাহা পান করা যায়।
पा	तव्य, अनीय, य	पातव्य, पानीय, पेय	जो पिया जाय, पीने योग्य।

तद्धित।

शब्दोंके पीछे अर्थ विशेषमें जिस प्रत्ययके जोड़नेसे शब्द बनता है, उसको "तद्धित प्रत्यय" कहते हैं।

हिन्दीमें भी पांच प्रकारके तद्धित होते हैं।

(१) अपत्यवाचक। जिससे सन्तानत्व पाया जाय। इसको बनाते समय कहीं "अ" के स्थानमें "आ" कर देते हैं। जैसे, "संसार" से सांसारिक।

कहीं "इ" के स्थानमें "ऐ" कर देते हैं जैसे, शिव से "शैव" "इतिहास" से 'ऐतिहासिक"।

कहीं "उ" के स्थानमें "औ" कर देते हैं। जैसे, "उर्मिला" से "और्मिलेय" "कुन्ती" से "कौन्तेय" इत्यादि।

(२) कर्तृवाचक। ये "वाला" या "हारा" लगानेसे बनते हैं। जैसे, रोटीवाला, पानीवाला, दूधवाला और लकड़हारा।

(३) भाववाचक। ये "ता" या "त्व" "आई" आदि लगानेसे बनते हैं। जैसे, मूर्खता, नीचता, चतुरता, गुरुता, नीचत्व, दोषत्व, महत्व, गुरुत्व, सुघड़ाई।

(४) गुणवाचक। ये "वान", "मान", "दायक" इत्यादि लगानेसे बनते हैं। जैसे, बलवान, रूपवान, गुणदायक, सुखदायक, बुद्धिमान इत्यादि।

(५) ऊनवाचक। इनसे लघुता पाई जाती है। खाटसे खटिया।

ऊपर हम हिन्दी व्याकरणकी रीतिसे तद्धित विषयको समझा आये हैं। हिन्दीमें समझानेकी यही जरूरत थी कि हिन्दी जाननेवाले अल्प परिश्रमसे बंगला व्याकरण के अनुसार तद्धितको आसानीसे समझ सकें।

शब्दोंके उत्तर <u>अपत्यादि</u> अर्थमें "इ", "एय", "य", "आयन", "ईय", "इक", "अ", "इन" और "क" प्रत्यय दिये जाते हैं।

र्थमें	विकारार्थमें	सम्बन्धीयर्थमें	भावार्थमें	कर्त्तृ वा कर्मार्थमें
।	হৈম	দেশীয়	যৌবন	তার্কিক
য	রাজত	শারীরিক	শৈশব	বৈদান্তিক
:	ধাতব	সৌর	লাঘব	কায়িক
		পার্থিব	কার্কশ্য	পৈতৃক
		স্বর্গীয়		

ोषण शब्द के उत्तर <u>भावार्थ</u> में “त्व”, “ता”, और ”, “प्रत्यय लगाते हैं। जैसे,

त्व	ता	इमन्
গুরুত্ব	গুরুতা	গরিমা
মহত্ব	মহত্তা	মহিমা
নীলত্ব	নীলতা	নীলিমা

ब्दके उत्तर “है” (আছে) इस अर्थके प्रकाट करनेके लिये , “वत्”, “विन्” और “इन्” प्रत्यय लगाते है। जैसे,

	वत्	विन्	इन्
ान्	ধনবান্	মেধাবী	ধনী
।	বিদ্যাবান্	মায়াবী	জ্ঞানী
ान्	ভাগ্যবান্	পয়স্বী	শিখী
ान्	বেগবান্	মনস্বী	দণ্ডী
न्	মূল্যবান্	তেজস্বী	মানী

पूर्णार्थ प्रत्यय युक्त पद :—

दूसरा	ঊনবিংশতিতম	उन्नीसवाँ
तीसरा	বিংশ	बीसवाँ
चौथा	একবিংশ	इक्कीसवाँ
पाँचवाँ	একবিংশতিতম	इक्कीसवाँ
छठा	ষষ্টিতম	साठवाँ
सातवाँ	সপ্ততিতম	सत्तरवाँ
आठवाँ	অশীতিতম	अस्सीवाँ
नवाँ	নবতিতম	नब्बेवाँ
दशवाँ	শততম	सौवाँ
ग्यारहवाँ	পঞ্চষষ্টিতম	पैंसठवाँ
बारहवाँ		
तेरहवाँ		

वाचक शब्दके उत्तर आधिक्य के अर्थके लिये "तर" "इष्ठ" और "ईयस्" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे,

तर	तम	इष्ठ	ईयस्
গুরুতর	গুরুতম	গরিষ্ঠ	গরীয়ান্
অল্পতর	অল্পতম	অল্পিষ্ঠ	অল্পীয়ান্
প্রশস্ততর	প্রশস্ততম	শ্রেষ্ঠ	শ্রেয়ান্
বৃদ্ধতর	বৃদ্ধতম	বর্ষিষ্ঠ	বর্ষীয়ান্

इके बाद तुल्यार्थ प्रगट करनेके लिये "वत्" और लगाते हैं। जैसे,

জলবৎ	जलके समान
গুরুবৎ	गुरुके समान
অধ্যাপককল্প	अध्यापकके समान

सङ्ख्यावाचक शब्दके बाद प्रकार अर्थ में "धा" प्रत्यय गाते हैं। जैसे, বিধা, তৃধা, শতধা, इत्यादि।

स्वरूपके अर्थमें शब्दके पीछे "मय" प्रत्यय लगाते हैं। से, স্বর্ণময়, মৃণ্ময়, কাষ্ঠময়, इत्यादि।

सर्व्वनाम शब्दके बाद कालके अर्थ में "दा" प्रत्यय लगाते । जैसे, সর্ব্বদা, একদা, इत्यादि।

सर्व्वनाम शब्दके बाद आधार अर्थ में "त्र" प्रत्यय लगाते । जैसे, সর্ব্বত্র, অন্যত্র, একত্র इत्यादि।

कालवाचक शब्दके बाद उत्पन्न अर्थमें "তন" प्रत्यय लगाते । जैसे, পূর্ব্বতন, অধুনাতন इत्यादि।

किम् शब्द निष्पन्नपदके पीछे अनिश्चय अर्थ में, "চিৎ" त्यय लगाते हैं। जैसे, কিঞ্চিৎ, কদাচিৎ इत्यादि।

समास।

जब दो तीन अथवा अधिक पद अपने कारकों के चिन्हों ो त्याग कर आपस में मिल जाते हैं तब उनके योग को ममास" कहते हैं और उन के योग से जो शब्द बनता है उसे "सामासिक" शब्द कहते हैं। जैसे, घन ও মৃগ—इन

दो पृथक पदोंको "फलफूल" इस तरह एक पद बना कर भी काममें ला सकते हैं। अग्नि, जल ও वायु—इन तीनोंको एक पद बना कर "अग्निजलवायु" इस तरह प्रयोग कर सकते हैं। 'राजार बाटी' इन दोनों पदों को "राजबाटि" इस भाँति एक पद करके प्रयोग कर सकते हैं। "कई शब्दोंको मिलाकर इस भाँति एक पद करने को ही समास कहते हैं।

समास पाँच प्रकार को होती है—द्वन्द, तत्पुरुष, कर्म्मधारय, बहुव्रीहि, और अव्ययीभाव।

हिन्दीमें समास छ प्रकार की मानी है। उसमें इनके सिवाय "द्विगु" समास और मानी है।

द्वन्द ।

द्वन्द वह है जिसमें कई पदोंके बीच "और" (ও) का लोप करके एक पद बना लिया जाय। जैसे,

फल ও फूल=फलफूल
राजा ও रानी=राजारानी
माता ও पिता=मातापिता
राम ও लक्ष्मण=रामलक्ष्मण

तत्पुरुष ।

तत्पुरुष समास उसे कहते हैं, जिसमें पहला पद कर्त्ता, कारक को छोड दूसरे किसी भी कारकके चिह्न सहित हो और इसी पदका अर्थ प्रधान हो।

कर्मपदके साथ जो समास होती है, उसे द्वितीया तत्-पुरुष कहते हैं। जैसे,

বিস্ময়কে আপন্ন=বিস্ময়াপন্ন।

পরলোককে প্রাপ্ত=পরলোক প্রাপ্ত।

करण पदके साथ जो समास होती है, उसे तृतीया तत्-पुरुष कहते हैं। जैसे,

শোক দ্বারা আকুল=শোকাকুল।

মোহ দ্বারা অন্ধ=মোহান্ধ।

আত্মা দ্বারা কৃত=আত্মকৃত।

अपादान पदके साथ जो समास होती है, उसे पञ्चमी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे,

পাপ হইতে মুক্ত=পাপমুক্ত।

বৃক্ষ হইতে উৎপন্ন=বৃক্ষোৎপন্ন।

सम्बन्ध पदके साथ जो समास होती है, उसे षष्ठी तत्-पुरुष कहते हैं। जैसे,

বিশ্বের পিতা=বিশ্বপিতা।

চন্দ্রের দর্শন=চন্দ্রদর্শন।

রাজার পুত্র=রাজপুত্র।

अधिकरण पदके साथ जो समास होती है, उसको सप्तमी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे,

গৃহে বাস=গৃহবাস।

হস্তে স্থিত=হস্তস্থিত।

স্বর্গে গত = স্বর্গগত ।

हीन, जन प्रभृति कितने ही शब्दोंके योगसे तृतीया तत्पुरुष समास होती है। जैसे,

জ্ঞান দ্বারা হীন = জ্ঞানহীন ।

বিদ্যা দ্বারা শূন্য = বিদ্যাশূন্য ।

कर्म्मधारय ।

जिसमें विशेषणका विशेष्यके साथ सम्बन्ध हो, उसे कर्म-धारय समास कहते हैं ।

इस समासमें विशेषण (Adjective) पद पहले और विशेष्यपद (Noun) पीछे रहता है और विशेष्यपद (Nonn) का अर्थ ही प्रधान रूपसे प्रकाशित होता है। जैसे,

পরম + আত্মা = পরমাত্মা ।	মহা + রাজ = মহারাজ ।
পরম + ঈশ্বর = পরমেশ্বর ।	সৎ + কর্ম্ম = সৎকর্ম্ম ।

यहाँ परम और आत्मा इन दो पदोंमें समास हुई है। परम पद विशेषण और आत्मा पद विशेष्य है विशेषण पद पहले और विशेष्य पद पीछे हैं और उसके ही अर्थने प्रधान रूपसे प्रकाश पाया है, बस इसी कारणसे इसे "कर्मधारय" समास कहते हैं।

बहुव्रीहि।

बहुव्रीहि समास उसे कहते हैं, जिसमें दो तीन या अधिक पदोंका योग होकर जो शब्द बने उसका सम्बन्ध और किसी पदसे हो। इस को परिभाषा इस भांति भी हो सकती है—विशेष्य विशेषण अथवा दो या उससे अधिक विशेष्य पदोंमें समास करने पर यदि उन शब्दोंका अर्थ प्रकाशित न होकर किसी और ही वस्तु या व्यक्तिका अर्थ प्रकाशित हो, तो उसे बहुव्रीहि समास कहते है।

बहुव्रीहि समास करने पर सारे पद प्राय विशेषण होते है, कभी कभी विशेष्य भी होते हैं। जैसे, क्षीणकाय, यहाँ क्षीण और काय इन दो पदोंमें समास हुई, है। क्षीण विशेषण और काय विशेष्य है, किन्तु इन दोनों पदोंका अर्थ पृथक्-पृथक् भावसे बोध नहीं होता, क्षीणकाय विशिष्ट कोई व्यक्ति बोध होता है, अतएव यहाँ बहुव्रीहि समास हुई।

क्षीणकाय इस पदसे यदि कृश शरीर यही अर्थ समझा जाय और उससे कुछ व्याघात न हो, तो कर्मधारय समास हुई समझनी होगी, क्योंकि इस जगह विशेष्य पदका अर्थ ही प्रधान रूपसे प्रकाश पाता है।

चक्रपाणि, यहाँ भी चक्र पद विशेष्य है। उसका अर्थ

चाका या पहिया है, পাণি पद भी विशेष्य है उसका अर्थ हाथ है। इन दोनों की समास होने से চক্রপাণি यह एक पद हुआ। इस से चक्र और हाथ, इन दोनों का कुछ अर्थ न निकलने के कारण नारायण रूप अर्थ का बोध होता है। अतएव यह बहुव्रीहि समास है और चक्रपाणि पद विशेष्य पद है।

इस समास में যার, যাতি, যা, যাঁরা इत्यादि पद व्यवहार किये जाते हैं। যে या যাহা प्राय व्यवहृत नहीं होते। जैसे,

পীত অম্বর যার, সে পীতাম্বর অর্থাৎ কৃষ্ণ।
বৃহৎ কায যার, সে বৃহৎকায।
জিত ইন্দ্রিয যাহা কর্তৃক, সে জিতেন্দ্রিয।
স্বচ্ছ তোয আছে জাতে, সে স্বচ্ছতোয।
পাণিতে চক্র যার, সে চক্রপাণি।
নষ্ট মতি যার, সে নষ্টমতি।
মহৎ আশয যার, সে মহাশয।
ন অন্ত যার, সে অনন্ত।
ন আদি যার, সে অনাদি।

नोट (१) बहुब्रीहि और कर्मधारय समासमें महत् शब्द पहिले होनेसे "महत्" की जगह "महा" हो जाता है। जैसे,

মহৎ বল যার, সে মহাবল।

(२) बहुव्रीहि और कर्मधारय समास का पहला पद स्त्रीलिंग का विशेषण हो तो वह पुलिङ्ग की भाँति हो जाता है। जैसे,

দীর্ঘা যষ্টি = দীর্ঘ যষ্টি।

স্থিরা মতি = স্থির মতি।

यहाँ "यष्टि" शब्द स्त्रीलिङ्ग है और "दीर्घा" उसका विशेषण भी स्त्रीलिङ्ग है, किन्तु समास होने से विशेषण दीर्घा स्त्रीलिंग होनेपर भी पुलिङ्ग की भाँति "दीर्घ" हो गया। इसी भाँति "स्थिरा" का "स्थिर" हो गया।

(३) समास में "न" इस अव्यय के बाद स्वरवर्ण होने से "न" के स्थान में "अन" हो जाता है लेकिन "न" के बाद व्यञ्जन वर्ण होनेसे "न" के स्थानमें "अ" हो जाता है। जैसे,

ন + অন্ত = অনন্ত।

ন + আদি = অনাদি।

ন + জ্ঞান = অজ্ঞান।

ন + সংস্থান = অসংস্থান।

यहाँ "न" के बाद "अ" स्वर आ गया, इससे "न" के स्थान में "अन" लगाया गया, इसी भाँति तीसरे उदाहरण में 'न' के बाद "ज्ञा" व्यञ्जन आ गया, इस लिये "न" के स्थानमें "अ" लगाया गया।

(४) बहुव्रीहि समासमें परस्थित आकारान्त शब्द अकारान्त हो जाता है। जैसे,

निः नाइ दया यार, से निर्दय।

निः नाइ लज्जा यार, से निर्लज्ज।

पहिले उदाहरणमें "दया" शब्दके अन्तमें "आ" है, लेकिन समास होने से "आ" का "अ" हो गया यानी "दया" का "दय" हो गया। इसी भाँति और समझ लो।

(५) समास के पूर्वपद के "नकारान्त" होनेपर "नकार" का लोप हो जाता है। जैसे,

राजन पुत्र = राजपुत्र।

आत्मन् कृत = आत्मकृत।

समास में युष्मद् और अस्मद शब्द यदि पहले आवें, तो एक वचनमें उनके स्थानमें क्रमश "त्वत्" और "मत्" हो जाते हैं। जैसे,

तोमार कृत = त्वत्कृत।

आमार पुत्र = मत्पुत्र।

अव्ययीभाव।

अव्यय पद पहले बैठने पर जिसकी समास हो, उसको अव्ययीभाव कहते हैं। जैसे,

मासे मासे = प्रतिमास।

गृहे गृहे = प्रतिगृह।

क्षणे क्षणे = प्रतिक्षण।

কূলের সমীপে = উপকূল।
দিন দিন = প্রতিদিন।
ভিক্ষার অভাব = দুর্ভিক্ষ।
সুখের অভাব = অসুখ।
বিধিকে অতিক্রম না করিয়া = যথাবিধি।
গ্রহের সদৃশ = উপগ্রহ।
বনের সদৃশ = উপবন।



वाक्य–रचना।

जिस पद-समूह के द्वारा सम्पूर्ण अभिप्राय प्रकाश होता है, उसे "वाक्य" कहते हैं। जैसे,

(১) ঈশ্বর মঙ্গল করিতেছেন।
(২) বায়ু বহিতেছে।
(৩) হরি পুস্তক পড়িতেছে।
(৪) বৃষ্টি হইতেছে।

वाक्य के अन्तर्गत जो शब्द होते हैं, उनको रीतिमत यथास्थान स्थापित करनेको "वाक्यरचना" कहते हैं।

वाक्य-रचना के समय पहले कर्त्ता और उसके बाद क्रिया पद रखा जाता है। जैसे,

বৃষ্টি পড়িতেছে।
প্রভাত হইল।
সূর্য্য উদয় হইয়াছে।

नोट (१) कर्त्ता जिस पुरुष का होता है, क्रिया-पद भी उसी पुरुष का होता है, वचन-भेद से क्रिया के रूप में भेद नहीं होता। जैसे,

(১) { আমি যাইতেছি
আমরা যাইতেছি

(২) { তুমি যাইতেছ
তোমরা যাইতেছ

(৩) { সে যাইতেছে
তাহারা যাইতেছে

पहले उदाहरणमें "आमि" एकवचन और "आमरा" बहुवचन है किन्तु दोनोंकी क्रिया एक ही है। दूसरेमें "तुमि" एकवचन और "तोमरा" बहुवचन है, लेकिन दोनोंकी क्रिया एक ही है। "आमि" और "आमरा" उत्तम पुरुष हैं। इनकी क्रिया "जाइतेछि" है और "तुमि" और "तोमरा" मध्यम पुरुष हैं। इनकी क्रिया "जाइतेछ" है। पुरुषके और होनेसे क्रिया भी बदल गयी।

नोट (२) जिस वाक्यमें उत्तम और मध्यम पुरुष क्रिया प्रथम और उत्तम पुरुष अथवा प्रथम, मध्यम और उत्तम पुरुष एक क्रिया के कर्त्ता हों, उस वाक्यमें उत्तम पुरुष की क्रिया ही व्यवहृत होगी। जैसे,

আমি ও তুমি দেখিতেছিলাম।
তোমাতে ও আমাতে বসিব।
হরি ও আমি সেখানে যাইব।
আমি, তুমি ও হরি ইহা পড়িয়াছিলাম।

नोट (२) जहाँ प्रथम और मध्यम पुरुष एक क्रिया के कर्त्ता हों, वहाँ मध्यम पुरुष को ही क्रिया प्रयोग करनी होगी। जैसे,

তুমি ও হরি সেখানে ছিলে।
তাহারা ও তোমরা ইহা দেখিয়াছিলে।
তাহাতে ও তোমাতে একত্র খাইয়াছ।

नोट (४) ऐसे वाक्योंमें सब का कर्तृपद एक ही प्रका
के वचन का व्यवहार करना चाहिये। আমি ও তোমরা
যাইব, আমি ও তাহারা দেখিতেছি, इस भाँति के वाक्य नहीं
हो सकते। अगर ऐसा होगा तो अलग-अलग क्रिया व्यव
हार की जायगी।

क्रिया के सकर्मक या द्विकर्मक होनेसे क्रिया के ठोय
पहले कर्मपद बैठेगा। जैसे,

আমি হরিকে দেখিলাম।
তাহারা পুস্তক পড়িতেছে।
যদু তাহাকে পুস্তক দান করিয়াছে।

पहली उदाहरणमें "हरिके" यह कर्म पद है और वह अपनी क्रिया "देखिलाम
के पहिले बैठा है। दूसरेमें पुस्तक कर्मपद है और वह क्रिया पढ़ितेछि के पहि
बैठा है। इसी तरह तीसरेमें "ताहाके" और "पुस्तक" ये दो कर्मपद हैं और
दोनों ही अपनी क्रिया "दान करियाछे" के पहले बैठे हैं।

असमापिका क्रिया समापिका क्रिया के पहले बैठेगी
असमापिका और समापिका क्रियाका कर्त्ता एक होगा और
इन दोनों क्रियाओंके कर्म करण विशेषण प्रभृति पद इन
दोनों क्रियाओं के पहले बैठेंगे। जैसे,

হরি পুস্তক লইয়া পড়িতে লাগিল।
শশী এখানে বেদ পড়িতে আসিতেছে।
তিনি গৃহ হইতে বহির্গত হইয়া হৃষ্টমনে বিদ্যালয়ে
প্রবেশ করিলেন

विशेषण पद विशेष्यके पहले बैठता है। जैसे,

सुशीला बालिका।

बुद्धिमान बालक।

बहुदर्शी वृद्ध।

पहले उदाहरणमें "सुशीला" विशेषण पद है और वह अपने विशेष्य "बालिका" के पहले बैठा है। इसी भांति और उदाहरण समझ लो।

नोट—अगर दो या दो से ज़ियादा विशेषण पद व्यवहार करने हों तो उन सब विशेषण पदोंके बीचमें संयोजक (जोड़नेवाला) अव्यय नहीं व्यवहार करना चाहिये। जैसे,

মহামান্য ঋষিশ্রেষ্ঠ ব্যাস।

সত্যবাদী ধর্ম্মাত্মা রাজা যুধিষ্ঠির।

यहां "व्यास" शब्दके "महामान्य और "ऋषिश्रेष्ठ" दो विशेषण हैं। लेकिन दोनों विशेषणोंके बीचमें "और" या "व" इत्यादि संयोजक अव्यय नहीं रखे गये। इसी तरह दूसरे उदाहरणमें भी समझ लो।

क्रिया का विशेषण क्रियाके पहले ही बैठता है, किन्तु क्रिया सकर्मक होनेसे प्राय कर्म पदके पहले बैठता है। जैसे,

তিনি অত্যন্ত বেগে গমন করিলেন।

রাম উচ্চৈঃস্বরে হরিকে ডাকিল।

पहले उदाहरणमें "गमन करिलेन" क्रिया है और "अत्यन्त वेगे" उसका विशेषण है और वह क़ायदेके माफ़िक अपनी क्रियाके पहले बैठा है। दूसरेमें

"डाकिल" सकर्मक क्रिया है और "उच्चै स्वरे" उसका विशेषण है। "हरिके" कर्मपद है। क्रिया विशेषण यहां "हरिके" कर्मपदके पहले बैठा है।

दो या दो से अधिक पद, वाक्यांश अथवा वाक्योंके एक सग प्रयोग करने पर इनके बीचमें संयोजक अव्यय, अर्थात् এবং, ও, কিংবা, আর बैठाने चाहिये। जैसे,

হরি এবং রাম পড়িতেছে।
হস্তী, অশ্ব, গো ও ছাগ চরিতেছে।
রাম সর্ব্বদা লেখে এবং পড়ে।

ऊपरके नियमानुसार ही অথবা, কিংবা, বা, প্রভৃতি वियोजक अव्यय भी व्यवहार किये जाते हैं। जैसे,

রাম অথবা হরি আসিবে।
সে পড়িবে কিংবা লিখিবে।
তুমি বা আমি করিব।

वाक्यके पहले जो सम्बोधन पद बैठता है, उस सम्बोधन पदके ठीक पहले सम्बोधन चिन्ह হে, অহে, অরে প্রভৃতি अव्यय बैठाये जाते हैं। कभी-कभी इनके न बैठानेसे भी काम चल जाता है। जैसे,

হে জগদীশ, তুমিই সকলের কর্ত্তা।
ওহে মহেশ, এখানে এস।
অরে! তুই এখন যা।
রাম, তুমি আজ খেলা করিওনা।

सम्बन्ध पदके बाद ही सम्बन्धी पद (जिसके साथ सम्बन्ध
हो) बैठाया जाता है। जैसे,

ঈশ্বরের মহিমা।
দুঃখীর ভগ্ন কুটীর।

यहां "ईश्वरेर" यह सम्बन्धीपद है, क्योंकि इसके साथ महिमाका
म्बन्ध है।

करण पद कर्त्तृपदके बाद और कर्म प्रभृति पदोंके पहले
बैठता है। जैसे,

তিনি অস্ত্র দ্বারা এই বৃক্ষটি ছেদন করিলেন।
হরি যষ্টি দ্বারা বৃক্ষ হইতে ফল পাড়িল।

यहां "अस्त्र द्वारा" यह करण पद है यह "तिनि" कर्त्तृपदके बाद और "वृक्षटि"
र्मपदके पहले बैठा है इसीतरह दूसरे उदाहरण को समझ लो।

जिन सब अर्थों में अपादान कारक होता है उन सब अर्थ-
बोधक पदोंके पहले अपादान पद बैठता है। जैसे,

তিনি কুকর্ম্ম হইতে বিরত হইয়াছেন।

जो जिसका अधिकरण पद होता है, वह उसके पहले
बैठता है, कभी-कभी बाद भी बैठता है। जैसे,

তাহার হস্তে পুস্তক আছে।
গাত্রে কোন শীতবস্ত্র নাই।

वक्तव्य ।

हमने यहाँ तक बँगला व्याकरणमें प्रवेश मात्र करने की राह दिखाई है। इससे हिन्दी जाननेवालों को बँगला भाषा सीखनेमें सुगमता होगी। जिन्हें बँगला व्याकरणके अन्यान्य विषय जानने हों, वे वृहत् बँगला व्याकरण देखें।



हिन्दी बँगला शिक्षा ।

द्वितीय खण्ड ।



अनुवाद-विषय ।



पहिला पाठ ।

ছিল = था
সেখানকার = वहांका
রাজার = राजाका
তাঁর = उनका
তত = उतना
গৌরব = प्रतिष्ठा, महिमा
অথচ = और
করিতেন = करते थे
এত = इतना
হওয়া = होनेका

সেই = उसी
যত = जितनी
ছিলেন = थे
সকলের চেয়ে = सबको अपेक्षा
পণ্ডিতদের = पण्डितोंके
মধ্যে = बीचमें
হইলে = होनेपर
মীমাংসা = फैसिला
কেও = कोई

সীতা।

(১)

মিথিলা নামে এক রাজ্য ছিল। সেখানকার রাজার নাম ছিল জনক। তাঁর রাজ্য তত বড় ছিল না, বড রাজা বলিযাও তাঁর তত গৌরব ছিল না। সকল বড বড রাজাই তাঁকে খুব মান্য করিতেন—খুব খাতির করিতেন। তার এত মান হওয়ার অনেক কারণ ছিল।

সেই সময় যত বড বড রাজা ছিলেন, রাজা জনক সকলের চেযে বিদ্বান্ ছিলেন,—সকলের চেযে জ্ঞানী ছিলেন। সকল শাস্ত্র তাঁর কণ্ঠস্থ ছিল। পণ্ডিতদের মধ্যে তর্ক হইলে, তিনি তার মীমাংসা করিতেন। তাঁর মীমাংসাই শেষ মীমাংসা—তাঁর বাক্যই বেদ বাক্য—তাঁর উপর কথা বলিবার আর কেউ ছিল না।

सीता।

(२)

मिथिला नामक एक राज्य था। वहांके राजाका नाम जनक था। उनका राज्य उतना बडा नहीं था, बडे राजा होनेके कारणही उनको उतनी प्रतिष्ठा नहीं थी। सब बडे बडे राजा उनका खूब मान करते थे—खूब खातिर करते थे। उनका इतना मान होनेके अनेक कारण थे।

उस समय जितने बडे बडे राजा थे, राजा जनक सबकी

अपेक्षा विद्वान् थे,—सबकी अपेक्षा ज्ञानी थे। सारे शास्त्र उनके कण्ठस्थ थे। पण्डित लोगोंके बीचमें वाद-विवाद होनेपर, वे उसकी मीमांसा करते थे। उनकी मीमांसा ही अन्तिम मीमांसा थी,—उनका वाक्य ही वेदवाक्य था—उनके ऊपर बात कहनेवाला और कोई नहीं था।

दूसरा पाठ।

তাই = यही	কোন = कोई
শুধু = केवल	তাঁকে = उसको
কি = क्या	হটাইতে = हटाते
যেমন = जैसा	পাবেন = सकता
তেমন = वैसा	নাই = नहीं
কোন = किसी	নয় = नहीं
পড়িলে = पढ़नेसे	সেকালে = उस समय
বড় বড় = बड़े बड़े	মত = अनुसार, समान
পরামর্শ = सलाह	যখন = जब
নিতেন = लेते थे	বসিতেন = बैठते थे
গৌরবও = गौरव भी	পরিতেন = पहिनते थे
তাঁহার = उनकी	আর = और
না = नहीं	থাকিতেন = रहते थे
করিয়া = करके	

সীতা।

(১)

মিথিলা নামে এক রাজ্য ছিল। সেখানকার রাজার নাম ছিল জনক। তাঁর রাজ্য তত বড় ছিল না, বড় রাজা বলিয়াও তাঁর তত গৌরব ছিল না। সকল বড় বড় রাজাই তাঁকে খুব মান্য করিতেন—খুব খাতির করিতেন। তাঁর এত মান হওয়ার অনেক কারণ ছিল।

সেই সময় যত বড় বড় রাজা ছিলেন, রাজা জনক সবলের চেয়ে বিদ্বান্ ছিলেন,—সবলের চেয়ে জ্ঞানী ছিলেন। সকল শাস্ত্র তাঁর কণ্ঠস্থ ছিল। পণ্ডিতদের মধ্যে তর্ক হইলে, তিনি তার মীমাংসা করিতেন। তাঁর মীমাংসাই শেষ মীমাংসা—তাঁর বাক্যই বেদ বাক্য—তাঁর উপর কথা বলিবার আর কেউ ছিল না।

सीता।

(१)

मिथिला नामक एक राज्य था। वहांके राजाका नाम जनक था। उनका राज्य उतना बड़ा नहीं था, बड़े राजा होनेके कारणसे उनको उतनी प्रतिष्ठा नहीं थी। सब बड़े बड़े राजा उनका खूब मान करते थे--खूब खातिर करते थे। उनका इतना मान होनेके अनेक कारण थे।

उस समय जितने बड़े बड़े राजा थे, राजा जनक सबकी

अपेक्षा विद्वान् थे,—सबको अपेक्षा ज्ञानी थे। सारे शास्त्र उनके कण्ठस्थ थे। पण्डित लोगोंके बीचमें वाद-विवाद होनेपर, वे उसकी मीमांसा करते थे। उनकी मीमांसा ही अन्तिम मीमांसा थी,—उनका वाक्य ही वेदवाक्य था—उनके ऊपर बात कहनेवाला और कोई नहीं था।

दूसरा पाठ।

তাই = यही	কোন = कोई
শুধু = केवल	তাঁকে = उसको
কি = क्या	হটাইতে = हटाते
যেমন = जैसा	পারেন = सकता
তেমন = वैसा	নাই = नहीं
কোন = किसी	নয় = नहीं
পড়িলে = पड़नेसे	সেকালে = उस समय
বড় বড় = बड़े बड़े	মত = अनुसार, समान
পরামর্শ = सलाह	যখন = जब
নিতেন = लेते थे	বসিতেন = बैठते थे
বীরত্বও = वीरत्व भी	পরিতেন = पहिनते थे
তাঁহার = उनकी	আর = और
না = नहीं	থাকিতেন = रहते थे
করিয়া = करके	

(২)

শুধু কি তাই—তিনি যেমন বিদ্বান্, তেমনি বুদ্ধিমান্ ছিলেন। কোন বিপদে আপদে পড়িলে অনেক বড় বড় রাজাও তাঁর পরামর্শ নিতেন। বীরত্বও তাঁর কম ছিল না। যুদ্ধ করিয়া কোন রাজাই তাঁকে হটাইতে পারেন নাই।

কেবল তাই নয়—সেকালে তাঁর মত ধার্ম্মিক মুনিঋষিও খুব কম ছিল। রাজা হইয়াও তিনি ভোগবিলাসী ছিলেন না। যখন রাজাসনে বসিতেন, কেবল তখন রাজপোষাক পরিতেন। আর সব সময় মুনি ঋষির ন্যায় থাকিতেন। সর্ব্বদা জপ, তপ, ব্রত, নিয়ম পালন করিতেন।

(२)

केवल इतना ही क्या—वे जैसे विद्वान्, वैसेही बुद्धिमान भी थे। किसी विपत्ति-आफतमें पड़ने पर बहुतसे बड़े-बड़े राजा भी उनकी सलाह लेते थे। वीरता भी उनकी कम न थी। लड़कर कोई राजा भी उनको हटा नहीं सकता था।

केवल इतना ही नहीं—उस समयमें उनके समान धार्म्मिक ऋषिमुनि भी बहुत कम थे। राजा होकर भी वे भोग-विलासी नहीं थे। वे जब राज-आसन पर बठते थे सिर्फ, उस समय राजाकी पोशाक पहिनते थे, और सब समय ऋषिमुनिकी भाँति रहते थे। सदा जप, तप, व्रत, नियम ।न करते थे।

तीसरा पाठ।

উদ্দেশে = उद्देश्यसे	গৃহী = गृहस्थ
কাজ = काम	আবার = और, फिर दूसरी बार
কতই = कितना ही	
আমোদ = प्रसन्नता	থাকিয়া = रहकर
হইত = होती थी	তাহা = वह
তিনি = वे, वह	করিয়াছিলেন = किया था
হইয়াও = होकर भी	অথচ = और भी
বলিয়া = इससे, इस कारणसे	পাকা = पक्का
লোকে = मनुष्य, सर्वसाधारण लोग	খেলোয়ার = खिलाड़ी
	তরোয়াল = तलवार
বলিত = कहते थे	ঘুরাইয়া = घुमाकर

(৮)

ঈশ্বর উদ্দেশে কাজ করিয়া তাঁর কতই আমোদ হইত। তিনি রাজা হইয়াও মুনিঋষির মত কাজ করিতেন বলিয়া, লোকে তাঁকে রাজর্ষি বলিত। রাজর্ষি জনক গৃহকর্ম্মে গৃহী, আবার ধর্ম্মকর্ম্মে সন্যাসী ছিলেন। গৃহে থাকিয়া সন্যাস অসম্ভব হইলেও, তিনি তাহা সম্ভব করিয়াছিলেন। তিনি সকল কাজই করিতেন, অথচ কোন কাজে লিপ্ত ছিলেন না। তিনি খুব পাকা খেলোয়ার ছিলেন, তাই এক হাতে ধর্ম্মের ও আর এক হাতে কর্ম্মের তরোয়াল ঘুরাইয়া সবলকে বিস্মিত করিয়াছিলেন।

(२)

ईश्वरके उद्देश्य से काम करके उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती थी। वे राजा होकर भी ऋषि-मुनिको भाँति काम करते थे, इससे लोग उनको राजर्षि कहते थे। राजर्षि जनक घरके काममें गृहस्थ और धर्म काममें सन्यासी थे। घरमें रह कर सन्यास असम्भव होनेपर भी उन्होंने उसको सम्भव किया था। वे सभी काम करते थे, परन्तु किसी काममें लिप्त न थे। वे खूब पक्के खिलाड़ी थे, इसीसे इन्होंने एक हाथसे धर्मको और दूसरे हाथसे कर्मको तलवार घुमाकर सबको विस्मित किया था।

चौथा पाठ।

दयाब=दयाकी
বাড়ীতে=घरमें
তের=तेरह
বার=बारह
মাসে=महीनेमें
পার্ব্বণ=पर्व्व
খোলা=खुला
অন্নসত্র=अन्नक्षेत्र
যে=जो
আসে=आवे
থাকিতে পারে=रह सकता है
এমন=ऐसे
সন্তান=लड़का बाला
আপরিজন=अपने पराये
জন্য=वास्ते
আকুল=व्याकुल
পান=पाये
তাঁদের=उनका
কিছুতেই=किसीसे भी

সেই=বহী কিছু=কুছ
যে=কৌন হইল=হুআ

(৪)

জনকের দয়ার সীমা ছিল না। বাড়ীতে বার মাসে তের পার্ব্বণ, উৎসব, আমোদ, আহ্লাদ। আর দান দাতব্য রাতদিন খোলা অন্নসত্র—যে আসে, সেই খায়। তাঁর রাজ্যে আর দীন দুঃখী কে থাকিতে পারে?

এমন রাজর্ষি জনক তাঁর সন্তান নাই। প্রজা, জনপরিজন ও রাজকর্ম্মচারী সকলেরই মুখ মলিন। রাণী সন্তানের জন্য আকুল। সকলের এই ভাব দেখিয়া, রাজা কোথাও শান্তি পান না। কি করেন—তাঁদের অনুরোধে যাগ যজ্ঞ করিলেন, কিন্তু কিছুতেই কিছু হইল না।

जनकको दयाकी सीमा न थी। घरमें बारह महीनेमें तेरह पर्व, उत्सव, आमोद आह्लाद (होता था)। और दान दातव्य, रात दिन खुला अन्नचेत्र, जो आता वही खाता। उनके राज्यमें और दीन दुःखी कौन रह सकता (था)?

ऐसे जो राजर्षि जनक (थे) उनके लड़का बाला नहीं (था)। प्रजा अपने पराये और राजकर्मचारी सबका मुँह मलिन (रहता था)। रानी सन्तानके लिये व्याकुल (रहती थी)। सबका यह भाव देखकर, राजा कहीं भी शान्ति नहीं पाते थे। क्या करें—उनके अनुरोधसे होम यज्ञ किया, परन्तु किसीसे भी कुछ न हुआ।

ব্বা চাই—করনা চাহিয়ে	ছাড়িলেন—ছোড় দিয়া
লাঙ্গল—হল	তাড়াতাড়ি—জল্‌দীসে
আসিল—আয়া	ছুটিয়া গেলেন—দৌড়কর গয়ে
গব—বৈল	কোলে—গোদমেঁ
যেন—জৈসে, মানো	তুলিয়া নিলেন—উঠা লিয়া
আলোকিত—রৌশন	সাড়া পড়িল—কোলাহল মচা
উঠিল—উঠা	অনায়াস—বিনা পরিশ্রম,
কালে—কালমেঁ	যকায়ক

---

(৬)

ঐ খোলা মাঠেই যজ্ঞ হইবে। মাঠের মাঝে মাঝে গাছ পালা, উহার কোন জায়গা উঁচু কোন জায়গা নীচু। সে সব চাষ করিয়া সমান করা চাই। লাঙ্গল আসিল, গরু আসিল, রাজা নিজেই চাষ করিতে আরম্ভ করিলেন। চাষ করিতে করিতে মাঠ যেন আলোকিত হইয়া উঠিল। দেখেন লাঙ্গলের ফালে সদ্যফোটা পদ্মফুলের মত এক মেয়ে! মেয়ে কি মেয়ে, যেন আকাশের চাঁদ। জ্যোৎস্নার মত রঙ্, ননীর মত শরীর, মেয়ে দেখিয়াই রাজা লাঙ্গল ছাড়িলেন, তাড়াতাড়ি ছুটিয়া গেলেন, মেয়ে কোলে তুলিয়া নিলেন। চারিদিক হইতে লোক জন আসিল, জয় জয়কার পড়িয়া গেল। রাজপুরীতে মহা আনন্দের সাড়া পড়িল। রাজা অনায়াসে সন্তান পাইয়া ভগবানের নিকট কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করিলেন।

(६)

इस खुले मैदानमें ही यज्ञ होगा। मैदानके बीच बीचमें पेड़ पत्ते (हैं), उसकी ज़मीन कहीं ऊंची कहीं नीची है। यह सब हल चलाकर बराबर करनी चाहिये। हल आया, बैल आया, राजाने स्वयं हल चलाना आरम्भ किया। हल चलाते-चलाते मैदान मानों आलोकित हो उठा। देखा कि हलकी फालमें तुरत फूटे हुए कमलके फूलके समान एक लड़की (है)। लड़की कैसी लड़की (है) मानो आकाशका चन्द्रमा। चाँदनीसा रंग, मखन सा शरीर, लड़की देखकर राजाने हल छोड़ दिया, जल्दीसे दौड़कर गये, लड़कीको गोदमें उठा लिया। चारों ओरसे मनुष्य आये, जयजयकार मच गई। राजपुरीमें महा आनन्दका कोलाहल मचा। राजाने अनायास ही सन्तान पाकर ईश्वरके आगे कृतज्ञता प्रकाश की।

सातवाँ पाठ।

সত্যই—सच ही, सचमुच	সাজান হইল—सजाई गई
বড়—बहुत	ফটকের—फाटकके
নিয়ে—ले जाकर	চূড়ায় চূড়ায়—सरपर
অন্দরে—भीतरमें	` नक्कारखानेमें
যত—जितना	রাজ্যময়—राज्यभरका
তবু—तब भी	মাতিল—मतवाले हुए
বুঝি—मालूम होता है	আপন আপন—अपना-अपना

রাজ্যে রাজ্যে লোকের অভাব ঘুচিয়া গেল। আশার অধিক দান পাইয়া সকলেই যোড়হাতে ভগবানের নিকট রাজকন্যার দীর্ঘজীবন কামনা করিতে করিতে আপন আপন দেশে চলিয়া গেল। রাজর্ষি জনকের কন্যালাভের বিবরণ চারিদিকে প্রচারিত হইল। মেয়ের অসামান্য রূপলাবণ্যের কথাও দেশ বিদেশে রটনা হইল। এই অপূর্ব্ব মেয়ে দেখিবার জন্য দেশ বিদেশের লোক দলে দলে আসিতে লাগিল। শিষ্যগণসহ মুনি ঋষি আসিতে লাগিলেন, দলে দলে ব্রাহ্মণ পণ্ডিত আসিলেন, মেয়ে দেখিলেন, প্রাণ ভরিয়া আশীর্ব্বাদ করিয়া চলিয়া গেলেন। দলে দলে রাজাগণ আসিলেন—মেয়ে দেখিলেন, যাঁর যাঁর যা আদরের জিনিষ ছিল, মেয়েকে উপহার দিলেন, চলিয়া গেলেন।

(৮)

राजाने लड़कीके मंगलके लिये बहुतसे मणि-माणिक्य और बछड़े सहित सैकड़ों गायें दान कीं। नाना राज्यके दीन-दु खियोंको आशाके बाहर धन दिया। सात रात सात दिन लगातार दान चलता रहा। राज्य राज्यमें लोगोंका अभाव दूर हुआ। आशासे अधिक दान पाकर सभी हाथ जोड़कर ईश्वरके निकट राजकन्याके दीर्घजीवनकी कामना करते-करते अपने-अपने देशमें चले गये। राजर्षि जनकके कन्यालाभ का समाचार चारों ओर फैल गया। लड़कीके असामान्य रूपलावण्य की बातें देश विदेशमें रटी जाने लगीं। इस अपूर्व लड़कीको देखनेके लिये देश विदेशके मनुष्य दलके दल

आने लगी। स्त्रियोंके साथ ऋषिमुनि भी आने लगे। दलके दल ब्राह्मण पण्डित आये, लड़की देखी, जो भरकर आशीर्वाद करके चले गये। दलके दल राजा आये—लड़की देखी, जिसकी जिसकी जो प्यारी चीज़ थी, लड़कीको उपहार दे, चले गये।

नवाँ पाठ।

পর—बाद	পাওয়া যাইবে—पायी जायगी, पाया जायगा
চাইল—चाहा	কেন—क्यों
দিয়া—देकर	শোনে—सुने
ফোটা—खिला हुआ	আসে—आवे
চোখ—आँख	ফুরায়—पूरा होना
না জানি—नहीं जानता	হইতে—से
আরও—और भी	আসেন—आती थीं
কত—कितना (बहुत)	না হইলে—नहीं तो, न होनेपर
মানুষের—मनुष्यका	
ইনি—ये	

(৯)

তাহার পর প্রজারা। দলে দলে প্রজা আসিয়া মেয়ে দেখিল, যার প্রাণে যা চাইল, মেয়েকে দিয়া আপন ঘরে চলিয়া গেল। রাজসভা হইতে কন্যা অন্তঃপুরে রাণীর কোলে যান, সেখানে মুনিপত্নী, ঋষিপত্নী, মুনিকন্যা, ঋষিকন্যা আসেন মেয়ে দেখেন আশীর্বাদ করেন, চলিয়া যান। রাজ্যের

বাজ্যে বাজ্যে লোকের অভাব ঘুচিয়া গেল। আশাব অধিক দান পাইয়া সকলেই যোড়হাতে ভগবানের নিকট রাজকন্যার দীর্ঘজীবন কামনা করিতে করিতে আপন আপন দেশে চলিয়া গেল। রাজর্ষি জনকের কন্যালাভের বিবরণ চারিদিকে প্রচারিত হইল। মেয়ের অসামান্য রূপলাবণ্যের কথাও দেশ বিদেশে রটনা হইল। এই অপূর্ব্ব মেয়ে দেখিবার জন্য দেশ বিদেশের লোক দলে দলে আসিতে লাগিল। শিষ্যগণসহ মুনি ঋষি আসিতে লাগিলেন, দলে দলে ব্রাহ্মণ পণ্ডিত আসিলেন, মেয়ে দেখিলেন, প্রাণ ভরিয়া আশীর্ব্বাদ করিয়া চলিয়া গেলেন। দলে দলে রাজাগণ আসিলেন—মেয়ে দেখিলেন, যাঁর যাঁর যা আদরের জিনিষ ছিল, মেয়েকে উপহার দিলেন, চলিয়া গেলেন।

(৮)

राजाने लड़कीके मंगलके लिये बहुतसे मणि-माणिक्य और बछड़ों सहित सैकड़ों गायें दान कीं। नाना राज्यके दीन-दु'खियोंको आशासे बाहर धन दिया। सात रात सात दिन लगातार दान चलता रहा। राज्य राज्यमें लोगोंका अभाव दूर हुआ। आशासे अधिक दान पाकर सभी हाथ जोड़कर ईश्वरके निकट राजकन्याके दीर्घजीवनकी कामना करते-करते अपने-अपने देशमें चले गये। राजर्षि जनकके कन्यालाभ का समाचार चारों ओर फैल गया। लड़कीके असामान्य रूपलावण्य की बातें देश विदेशमें रटी जाने लगीं। इस अपूर्व लड़कीको देखनेके लिये देश विदेशसे मनुष्य दलके दल

आने लगी। ऋषियोंके साथ ऋषिमुनि भी आने लगी। दलके दल ब्राह्मण पण्डित आये, लड़की देखी, जी भरकर आशीर्वाद करके चले गये। दलके दल राजा आये—लड़की देखी, जिसकी जिसकी जो प्यारी चीज़ थी, लड़कीको उपहार दे, चले गये।

नवाँ पाठ।

পর—बाद	পাওয়া যাইবে—पायी जायगी, पाया जायगा
চাইল—चाहा	কেন—क्यों
দিয়া—देकर	শোনে—सुने
ফোটা—खिला हुआ	আসে—आवे
চোখ—आँख	ফুরায়—पूरा होना
না জানি—नहीं जानता	হইতে—से
আরও—और भी	আসেন—आती थीं
কত—कितना (बहुत)	না হইলে—नहीं ता, न होनेपर
মানুষের—मनुष्यका	
ইনি—ये	

(৯)

তাহার পর প্রজারা। দলে দলে প্রজা আসিয়া মেয়ে দেখিল, যার প্রাণে যা চাইল, মেয়েকে দিয়া আপন ঘরে চলিয়া গেল। রাজসভা হইতে কন্যা অন্তঃপুরে রাণীর কোলে যান, সেখানে মুনিপত্নী, ঋষিপত্নী, মুনিকন্যা, ঋষিকন্যা আসেন, মেয়ে দেখেন, আশীর্ব্বাদ করেন, চলিয়া যান। রাজ্যের

মেয়েরা শতে শতে আসে—মেয়ে দেখে—রূপের কত সুখ্যাতি করে। আহা, রূপ কি রূপ—যেন ফোটাপদ্মফুল, চাঁদের মত মুখ পদ্মের মত চোখ, ননীর মত শরীর! আহা! এখনই এ রূপ,—বড় হইলে না জানি আরও কত সুন্দর হইবে। মানুষে কি এত রূপ কখনও হয়? নিশ্চয়ই ইনি কোন দেব কন্যা না হইলে যজ্ঞক্ষেত্রেই বা পাওয়া যাইবে কেন? এত রূপের কথা যে শোনে সেই একবার দেখিতে আসে। একদল আসে একদল যায়, রাজবাড়ীর লোক আর ফুরায় না।

(৫)

उसके बाद प्रजा। दलकी दल प्रजाने आकर लड़की देखी जिसके मनने जो चाहा (मनमें जो आया) लड़कीको देकर अपने घर चला गया। राजसभासे लड़की भीतर रानीकी गोदमें गई, वहाँ मुनियोंकी स्त्रियाँ, ऋषियोंकी स्त्रियाँ, मुनि-कन्याएँ, ऋषिकन्याएँ आईं (उन्होंने) लड़की देखी, आशीर्वाद किया, चली गईं। राज्यकी सैकड़ों स्त्रियाँ आईं—लड़की देखी—रूपकी कितनी सुख्याति की। अहा! रूप कैसा रूप मानों खिला कमलका फूल। चन्द्रमाके समान मुंह, कमलसी आँखें, मक्खन सा शरीर। आहा! अभी ही इतना रूप (है) बड़ी होने पर न जाने और भी कितनी सुन्दर होगी। मनुष्यका इतना रूप क्या कभी होता है? निश्चय ही ये कोई देवकन्या है। नहीं तो यज्ञ-क्षेत्रमें ही क्यों पाई जाती? इतने रूपकी बात जो सुनता था वही एकबार देखनेको आता था। एक दल आता

था, एक दल जाता था, राजमहलकी लोग काम नहीं होते थे।

दसवाँ पाठ।

শেষ—খতম	ধরিয়া—পকড়কর
হইতে না হইতে—হোতে ন হোতে	হাটি হাটি—ধীরে ধীরে
বলিয়া—বাস্তে, কারণসে	পা পা—পৈর পৈর
রাখিলেন—রক্খা	হাটিতে—চলনা
কেহ কেহ—কোই কোই	ছেলে মেয়েদের সহিত—লড়কী লড়কিয়োঁকে সাথ
ডাকিতেন—পুকারতে থে	খেলায়—খেলমেঁ
হামাগুড়ি—খিসকনা ঘুটনন	যোগ দিলেন—সাথ দিয়া।
আঙ্গুল—উংগলী চলনা	

---

(১০)

এই উৎসব আমোদ শেষ হইতে না হইতেই আবার রাজকন্যার নামকরণ উৎসব আরম্ভ হইল। লাঙ্গলের সীতিতে (ফালে) পাইয়াছেন বলিয়া কন্যার নাম রাখিলেন সীতা। জনকের কন্যা বলিয়া কেহ কেহ তাঁহাকে জানকী বলিয়া ডাকিতেন। সীতা দিন দিন বড় হইতে লাগিলেন। মা বাপের কোল ছাড়িয়া হামাগুড়ি দিলেন। হামাগুড়ি ছাড়িয়া মা বাপের আঙ্গুল ধরিয়া, হাটি হাটি, পা পা, করিতে করিতে হাটিতে শিখিলেন। ক্রমে ক্রমে পুরীর ছেলেমেয়েদের সহিত খেলায় যোগ দিলেন।

(१०)

यह उत्सव-आमोद समाप्त होते न होते ही फिर राज, कन्याके नामकरणका उत्सव आरम्भ हुआ। हलके फालमें पाई थी इसलिये लडकीका नाम रक्खा सीता। जनककी कन्या रहनेके कारण कोई कोई उनको जानकी कह कर पुकारता था। सीता दिनों दिन बडी होने लगीं। मा बापकी गोद छोडकर, घुटनों चलने लगीं। घुटअन चलना छोडकर, माँ बापकी उंगली पकड धीरे-धीरे पाँव-पाँव (करते करते) चलना सीखा। धीरे धीरे नगरके लडके लडकियोंके साथ खेलनेमें भी योग देने लगी।

६ ग्यारहवाँ पाठ।

बड—बहुत, बडा
তিনি—वे
নিয়েই—लेकर
কাছে—पास
সঙ্গে—साथ
কখনও—कभी
লেখা পড়া—लिखना पढना
সাংসারিক—संसारके
সকল—सभी
যাগ যজ্ঞ—होम-यज्ञ
খেলা—खेल
কাজকর্ম্ম—काम-धन्धा
কতই—कितनाही, बहुत कुछ
পান—पाती थी
আদেশ—आज्ञा
প্রকার—तरह
করিয়া—करके

---

(১১)

রাজা আজকাল রাজকার্য্য বড় দেখেন না। তিনি মেয়ে নিয়েই ব্যস্ত। রাজা সভায় যান, মেয়েও তাঁর সঙ্গে যায়। যাগ যজ্ঞ করেন—মেয়ে তাঁর কাছে বসে। তিনি কখনও মেয়ে নিয়ে খেলা করেন, কখনও মেয়েকে লেখা পড়া শিখান। কখনও বা সাংসারিক কাজকর্ম্ম দেখান—কখনও বা ধর্ম্ম উপদেশ দেন। ঈশ্বরভক্তি ও সংযম শিক্ষার জন্য নানা প্রকারের ব্রত, নিয়ম পালনের ব্যবস্থা করেন। সীতা আগ্রহের সহিত পিতার সকল আদেশ পালন করিয়া কতই যেন সুখ পান।

(११)

राजा आजकल राजके काम बहुत नहीं देखते थे। वह अपनी लड़की को लेकर ही व्यस्त रहते थे। राजा-सभा में जाते (तो) उनकी लड़की भी उनके साथ जाती थी। होम यज्ञ करते (तो)—लड़की उनके पास ही बैठती। वे कभी लड़कीके साथ खेलते, कभी लड़कीको लिखना पढ़ना सिखाते। कभी संसारके काम धन्धे दिखाते और कभी धर्मका उपदेश देते थे। ईश्वरकी भक्ति और संयम-शिक्षाके लिये कितनी ही तरहके व्रत, नियम पालन की व्यवस्था करते थे। सीता आग्रहसे पिताकी सभी आज्ञा पालन करके बहुत कुछ सुख पाती थी।

बारहवाँ पाठ।

আড—মাস, থকা শুনেন—সুনে

হন—হুএ	মনে প্রাণে—জী প্রাণ লগাকর
যখনই—জভী	এবং—ঔর
তখনই—তভী	লক্ষ্য—লক্ষ্য
স্নেহাপ্লুত—স্নেহভরী	তাঁহাদিগকে ধরিয়া—উন্হেঁ
ভাষায়—ভাষামেঁ	বৈঠাকর
এই—যহী	মিটে—মিটনা
রমণীদের—রমণিয়োঁকী	বায়না—বহানা
কাহিনী—কহানী	হইয়া পড়েন—হো পড়তী থী
বলেন—কহতে থে	

(১২)

শুধু ব্রত, নিয়ম পালনের ব্যবস্থা করিয়াই রাজর্ষি শান্ত হন না যখনই সময় পান তখনই স্নেহাপ্লুত ভাষায় কন্যাকে সতী সাবিত্রী, অরুন্ধতী, এই সব পুণ্যবতী আদর্শ সতী রমণীদের কাহিনী বলেন। সীতা মনে প্রাণে সেই সব শোনেন এবং সেই সব দেবী চরিত্রের অনুকরণই তাঁহার জীবনের লক্ষ্য বলিয়া স্থির করেন।

আর শোনেন তপোবনের কথা। তপোবনের কথা শুনিতে সীতার বড়ই আগ্রহ। রাজসভায় মুনি ঋষি আসিলে তাঁহাদিগকে ধরিয়া তপোবনের কথা শোনেন। সেখানে শুনিয়া তাঁর আশা মিটে না। আবার বায়না করিয়া বাবার মুখে শুনিতে চান। বাবার মুখে তপোবনের সেই পবিত্র মধুর কথা শুনিতে শুনিতে ।ন। সীতা তন্ময় হইয়া পড়েন।

(१२)

केवल व्रत, नियम पालनकी व्यवस्था करके ही राजर्षि शान्त नहीं होते थे, जभी समय पाते थे तभी स्नेहभरी भाषामें लड़कीको सती, सावित्री, अरुन्धती, इन्हीं सब पुण्यवती आदर्श सती रमणियोंकी कहानी कहते थे। सीता मन प्राणसे वही सब सुनती थी और उन्हीं सब देवी चरित्रोंका अनुकरण ही अपने जीवनका लक्ष्य बनाकर स्थिर करती थी।

और सुनती थी तपोवनकी बातें। तपोवनकी बात सुनने में सीताका बड़ा ही आग्रह (था)। राजसभामें मुनि-ऋषियोंके आनेपर, उन्हें बैठाकर तपोवनकी बात सुनती थीं। वह सुन कर उसका जी न भरता था। फिर बहाना करके पिताके मुंह से सुना चाहती थी। पिताके मुंहसे तपोवनकी पवित्र मीठी बातें सुनते-सुनते बालिका सीता तन्मय हो जाती थी।

तेरहवाँ पाठ।

छाड़िया—छोड़कर	सेखाने—वहाँ
थाकिले—रहने	छानाटिर—बच्चेका
पिछने—पीछे	धरिया—पकड़कर
साजि—फूलका चंगेर	आदर करिलेन—प्यार किया
चलेन—चलती थीं	दुटी—दो
बसेन—बैठते थे	कचि—कोमल, कच्चे
पड़ेन—पढ़ते थे	पाता—पत्ता
पूँथि—पोथी	आनिया—लाकर

থান—ख़ाती थी
খাওয়াইলেন—खिलाया
ততক্ষণ—उतनी देर
কাছে—पास
বিশেষ—ज़रूरी
একটু—कुछ, थोड़ा
কাজে—कामसें

(১৩)

সীতা তাঁর বাবাকে ছাড়িয়া থাকিতে পারেন না। রাজর্ষি ফুল তুলিতে যান—সীতা তাঁর পিছনে সাজি নিয়ে চলেন। জনক পূজা করিতে বসেন—সীতাও ফুল, দূর্ব্বা, চন্দন নিয়ে খেলার পূজায় বসিয়া যান। রাজর্ষি শাস্ত্র পড়েন—সীতাও তাঁর পুঁথি খুলিয়া পড়িতে বসেন। জনক পূজা না করিয়া জল খান না—সীতারও ততক্ষণ উপবাস। রাজা যখন বিশেষ কাজে ব্যস্ত থাকেন, সীতা কাছে থাকিতে পারেন না। তখন সীতা বাগানে যান—সেখানে হরিণ ছানাটির গাল ধরিয়া একটু আদর করিলেন, দুটি কচি পাতা আনিয়া তাকে খাওয়াইলেন।

(१३)

सीता अपने पिताको छोड़कर नहीं रह सकती थी। राजर्षि फूल तोड़ने जाते थे—सीता उनके पीछे फूलका चँगेर लेकर चलती थी। जनक पूजा करने बैठते थे, सीता भी फूल, दूर्वा, चन्दन लेकर खेलकी पूजापर बैठ जाती थी। राजर्षि शास्त्र पढ़ते थे—सीता भी उनकी पोथी खोलकर पढ़ने बैठती थीं। जनक बिना पूजन किये खाते नहीं थे। सीताका भी उतनी देर उपवास (होता था)। राजा जब

किसी ज़रूरी काममें व्यस्त रहते थे, सीता पास नहीं रहने सकती थी। उस समय सीता बागमें जाती—वहाँ हरिनके बच्चेका गाल पकड़कर प्यार करती, दो कोमल पत्ते लाकर उसको खिलाती थी।

चौदहवाँ पाठ।

দেখিতে—देखनेके लिये, देखनेमें	কিছুতেই—किसीसे भी
চলিলেন—चली, चलते थे	গুলিকে—(बहुवचन अर्थमें)
অমনি—योंही, इसी तरह	দিগকে— „
বায়না—ज़िद्द	ছোনা—चना
যাব—जाऊँगा	মিটেনা—नहीं मिटती थी
গহনাগাটি—गहने कपड़े	জায়গা—जगह
খুলিয়া—खोलकर	বলিয়া গেলে—कह जानेपर
বেশে—वेषमें	ফিরিতে—फिरनेमें
যত—जितना ही	বাধা দেন—मना किया, बाधा दिया
হরিণশিশু গুলিকে—हरिनके बच्चोंको	খুসী—खुशी

(১৪)

রাজর্ষি জনক তপোবন দেখিতে চলিলেন—সীতা অমনি বায়না ধরিলেন, "বাবা! আমি যাব। যাব কি?" অমনি গহনা-গাটি খুলিয়া, ঋষিবালিকার বেশে বাপের পিছনে উপস্থিত। বাপ যত বাধা দেন—কিছুতেই শোনেন না। সীতা তপোবন-

দেখিতে যাবেনই। জনক আর কি করেন—নিয়েই চলিলেন। আহা, সীতা তপোবন দেখিয়া কতই খুসী। ঋষিবালিকাদের সঙ্গে খেলা করিয়া তাঁর আমোদ ধরে না হরিণশিশুগুলিকে দু'গাছি কচি কচি ঘাস, পাখীগুলিকে ছোলা, ঋষিবালক-বালিকা-দিগকে ফল মূল খাওয়াইয়া যে তাঁর আশা মিটে না। তপোবনই যেন তাঁর সুখের জায়গা। সেখানে গেলে তাঁর আর রাজবাড়ী আসিতে ইচ্ছা করে না। জনক এক দিনের কথা বলিয়া গেলে সীতার জন্য তিন দিনেও ফিরিতে পারেন না।

(১৪)

राजर्षि जनक तपोवन देखने चले—सीताने योंही जिद पकड़ ली—"पिता! मैं चलूँगी, चलूँ क्या?" उसी समय गहने कपड़े खोल कर, ऋषि-बालिकाके वेशमें पिताके पीछे खड़ी हो गई। पिताने कितना ही मना किया—कुछ भी न सुना। सीता तपोवन देखने जायगी ही। जनक अब क्या करें—ले चले। अहा! सीता तपोवन देखकर कितनी खुश (हुई)। ऋषि-बालिकाओंके साथ खेल करके उसका जी नहीं भरता था। हरिनके बच्चोंको दो दो नर्म-नर्म घास, पचियोंको चना और बालक बालिकाओंको फल मूल खिला कर भी उसका जी न भरता था। तपोवन ही मानो उसके सुखकी जगह (थी)। वहाँ जानेपर उसे फिर राजमहल आने की इच्छा न होती थी। जनक एक दिनकी बात कह कर सीताके कारण तीन दिनमें भी नहीं फिर सकते थे।

पन्द्रहवाँ पाठ।

পাইবার = पानेके	কেও = कोई भी
পর = बाद	কাকে = किसको
হয় = हुई	ফেলিয়া = छोड़कर फेंककर
রাখেন = रखा, रखा था	ছায়ায় = छायामें, साथमें
বড়টীর = बड़ीका	আবদার = ज़िद्
ছোটটীর = छोटीका	ভাব = प्रेम

(১৫)

সীতাকে পাইবার পর রাণীর একটি মেয়ে হয়, তাঁহার নাম রাখেন উর্ম্মিলা। কুশধ্বজ নামে জনকের এক ভাই ছিলেন, তারও দুইটি মেয়ে—বড়টির নাম মাণ্ডবী, ছোটটির নাম শ্রুত-কীর্ত্তি। তারাও সীতার সঙ্গে জনকের স্নেহের ভাগী। সীতার সঙ্গে তাদের বড়ই ভাব। কেও কাকে ফেলিয়া থাকিতে পারেন না। সীতার ছায়ায় থাকিয়া তারাও সীতার মত হইয়া উঠিলেন।

সীতার শিশুকাল গিয়াছে বাল্যকালও যায় যায়। তার শরীরের কান্তি দিন দিন বাড়িতে লাগিল। এখন আর সে চঞ্চলতা নাই, সে আবদার নাই, সে বায়না নাই। মধুর লজ্জা আসিয়া যেন সব দূর করিয়া দিল।

(१५)

सीताको पाने बाद रानीके एक लड़की हुई, उसका नाम रखा उर्म्मिला। कुशध्वज नामके जनकके एक भाई थे, उनके भी दो कन्याएं (थी)—बड़ीका नाम माण्डवी, छोटीका

नाम श्रुतकीर्त्ति (था)। वे भी सीताके साथ जनकके स्नेहकी भागिनी (थी), सीताके साथ उनका बड़ाही प्रेम था। कोई किसीको छोड़कर नहीं रह सकती थीं। सीताकी छायामें रहकर वे भी सीताकी भाँति हो गई।

सीताका बचपन गया है, लड़कपन भी जानेपर है। उसके शरीरकी कान्ति दिनो-दिन बढ़ने लगी। अब और वह चञ्चलता नहीं है, वह जिद्द नहीं है, वह बहाना नहीं है। मधुर लज्जाने आकर मानो सब दूर कर दिया,

सोलहवां पाठ।

প্রাণপণে = प्राणभरके	মুহূর্ত্তও = मुहूर्त्तभर भी
বোনদিগকে = बहिनोंको	পাড়াপড়সীরা = पड़ोसी पड़ोसी सब
ভালবাসেন = प्यार करती थी	
জনপরিজনে = अपने पराये पर	ঘিরিয়া থাকে = घेरे रहती थी
ভাবনা = चिन्ता, विचार	কারও = किसीका भी
ভাবেন = विचारे	চোখে = आँखमें
সখীরা = सखी सब	লুটিয়া = लोटकर
ছাড়িয়া = छोड़कर	

(১৬)

সীতা এখন প্রাণপণে মা বাপের সেবা শুশ্রূষা করেন, বোন্‌দিগকে প্রাণের সহিত ভালবাসেন, দাসদাসীদিগকে স্নেহ, জনপরিজনে দয়া করেন। সীতা যেন সকলের সুখ দুঃখের ভাবনা

ভাবেন। সখীরা সীতাকে ছাড়িয়া এক মুহূর্ত্তও থাকিতে পারেন না। পাড়াপড়সীরা সর্ব্বদা তাঁকে ঘিরিয়া থাকে। পশুপক্ষী-দের পর্য্যন্ত সীতাই সব। সীতা যাকে পান, তাকেই প্রাণ দিয়া স্নেহ করেন, যত্ন করেন, আদর করেন। কারও কষ্ট দেখিলে সীতার চোখে জল ধরে না, সীতার আকুলতার সীমা থাকে না। সীতার ব্যবহার দেখিয়া জনক ভাবেন—এ কি? এ কি আমার সীতা? এ তো দেবী। তার শরীরে দেবতার মত জ্যোতিঃ, হৃদয়ে দেব ভাব। যে দেখে সেই যেন চরণে লুটিয়া পড়িতে চায়। আনন্দে রাজর্ষির প্রাণ মন ভরিয়া উঠে।

(११)

सीता इस समय जी भरके मा बापकी सेवा शुश्रूषा करती थी, बहिनोंको जीसे प्यार करती थी, नौकर मजदूरिनी पर स्नेह, अपनी पराये पर दया करती थी। सीता मानों सबके सुख दु खकी चिन्ता करती थी। सखियां सीताको छोडकर, एक क्षण भी नहीं रह सकती थी, पडोसिनें सदा उसको घेरे रहती थी। पशु पक्षियों तक को सीता ही सब कुछ थी। सीता जिसको पाती थी, उसको ही जी भरके प्यार करती थी, यत्न करती थी, आदर करती थी। किसीका भी कष्ट देखनेसे सीताकी आंखोंका पानी नहीं रुकता था, सीताकी व्याकुलता की सीमा नहीं रहती थी। सीताका व्यवहार देखकर जनक बिचारते थे—यह क्या? यह क्या मेरी सीता (है)? यह तो देवी (है)। इसके शरीर पर देवताओंकी भांति ज्योति(है)। हृदयमें देव

भाव (है), जा देखता (है), वही मानों पैरोंपर लोट पड़ना चाहता है। आनन्दसे राजर्षिका प्राण मन भर उठता (है)।

सत्रहवाँ पाठ।

ছড়াইয়া পড়িল=छा गई	দেই=दें
পথে=राहमें	বর=वर
হাটে মাঠে=हाटबाटमें	কাকে=किसको
জাগিয়া উঠিল=जाग उठी	যে=जो
পাইবার=पानेके	রত্নটী=यह रत्न
ভাট=भाट	কবি=करें
ভাঙ্গিল=टूटा	এইরূপ=इसी तरहकी
দিব=दूंगा	ধনুতে=धनुषमें
কার=किसका	ছিলা=चांप
কাছে=पास	পরাইয়া=पहिनाकर

(১৭)

সীতার অসামান্য রূপ, অসামান্য গুণ, এই রূপ-গুণের কথা জগতে ছড়াইয়া পড়িল। যে রাজ্যেই যাও সীতার রূপ-গুণের কথা। পথে দু'জনে কথা বলিতেছে—সীতার রূপ-গুণের কথা। রাজদরবারে রাজায় রাজায়, হাটে মাঠে, প্রজায় প্রজায়, ঘরে ঘরে, কি রাণী, কি গৃহস্থ, কি ভিখারিণী, সকলেই বলে—সেই সীতার রূপ-গুণের কথা।

এই অসাধারণ কন্যারত্ন লাভের আশা, সকল দেশের রাজ-

পুত্রের প্রাণেই জাগিয়া উঠিল। সকলেই সীতাকে পাইবার জন্য জনকের নিকট ভাট পাঠাইতে লাগিলেন। কোন কোন দুষ্ট রাজা বলপূর্ব্বক সীতা লাভের ভয়ও দেখাইলেন। রাজর্ষি জনকের চমক ভাঙ্গিল।

"এমন সোণার চাঁদ মেয়ে কাকে দিব? কে এর যথার্থ আদর করিতে পারিবে? কে এই রত্নের মূল্য বুঝিবে? সীতাকে ছাড়িয়া আমিই বা কেমন করিয়া থাকিব?" এই রূপ চিন্তা তার মনে আসিল। কিন্তু চিন্তা করিয়া কি হইবে?—"মেয়ে তো বিয়ে দিতেই হইবে। এখন কার কাছে দেই? কে উপযুক্ত বর? কাকে দিলে মেয়ে সুখে থাকিবে? যে রত্নের জন্য পৃথিবী লালায়িত, কার এমন বল আছে যে নিজবলে রত্নটি রক্ষা করিতে পারিবে? সেই বলেব পরীক্ষাই বা কেমন করিয়া করি?" এরূপ চিন্তা করিতে করিতে হরধনুর কথা তাঁর মনে পড়িল। এ পর্য্যন্ত কেহ সে ধনুতে ছিলা দিতে পারে নাই। তিনি প্রতিজ্ঞা করিলেন— "যিনি হরধনুতে ছিলা পরাইয়া ভাঙ্গিতে পারিবেন, আমি তাঁহাকেই এই কন্যারত্ন দান করিব।"

(১৩)

সীতাকা অসামান্য রূপ, অসাধারণ গুণ (হৈ), ইস রূপ-গুণকী বাতে জগত্‌মেঁ ছা গঈ। জিস রাজ্যমেঁ জাওী সীতাকে রূপ গুণকী বাতে (হৈঁ)। রাহমেঁ দো মনুষ্য বাতে করতে হৈঁ—সীতাকে রূপ গুণকী বাতে (হৈঁ)। রাজদরবারমেঁ, রাজা-

राजामें, हाटबाटमें, प्रजा-प्रजामें, घर-घरमें, क्या रानी, क्या गृहस्थ, क्या भिखारिनी, सभी कहते हैं—वही सीताके रूप गुणकी बातें।

इस असाधारण कन्यारत्नके मिलनेकी आशा, सब देशोंके राजकुमारोंके मनमें जाग उठी। सभी सीताको पानेके लिये जनकके पास भाट भेजने लगे। किसी-किसी दुष्ट राजाने बलपूर्वक सीतालाभका भय भी दिखाया। राजर्षि जनककी नींद टूटी।

"ऐसी सोनेकी चाँदसी लड़की किसको दूँगा? कौन इसका यथार्थ आदर कर सकेगा? कौन इस रत्नका मूल्य समझेगा? सीताको छोड़कर मैं ही किस तरह रह सकूँगा? यही चिन्ता उनके मनमें उठी। परन्तु चिन्ता करके क्या होगा?—"लड़की तो व्याहनी ही होगी। अब किसको दें? कौन उपयुक्त वर (है)? किसे देने से लड़की सुखी होगी? जिस रत्नके लिये पृथिवी लालायित है, किसका ऐसा बल है जो अपने बलसे (उस) रत्नकी रक्षा कर सकेगा? उस बलकी परीक्षा ही किस तरह करें?" इसी तरहकी चिन्ता करते-करते हरके धनुषकी बात उनके मनमें आई। अबतक कोई भी उस धनुषमें चाप न चढ़ा सका। उन्होंने प्रतिज्ञा की—"जो हरके धनुषमें चाँप चढ़ाकर तोड़ सकेंगे, मैं उन्हींको यह कन्यारत्न दान दूँगा।"

अठारहवाँ पाठ।

পণ = प्रथा	যাইয়া = जाकर
সব চেয়ে = सबसे	রব পড়িয়া গেল = धूम मच गई
হরধনু = हरका धनुष	
ভাঙ্গা = तोड़ना	

(১৮)

যেমন অপরূপ মেয়ে, পৃথিবীর সার রত্ন সীতা—তেমন তাঁর বিবাহের পণও হইল সব চেয়ে কঠিন কাজ—হরধনু ভাঙ্গা।

জনকরাজার প্রতিজ্ঞার কথা রাজ্যে রাজ্যে ঘোষিত হইল। যাঁরা ভাট পাঠাইয়াছিলেন, তাঁরা নিরাশ হইলেন। বীর বলিয়া যাঁদের গৌরব আছে, তাঁরা আনন্দিত হইলেন।

কার আগে কে ধনুক ধরিবে, কে আগে যাইয়া সীতা লাভ করিবে—এই জন্য সকল রাজ্যেই সাজ সাজ রব পড়িয়া গেল।

(१८)

जैसी आश्चर्यमयी लड़की पृथिवीकी सार रत्न सीता (है)—वैसा ही उसके विवाहका प्रण भी हुआ सबसे कठिन काम—हरका धनुष तोड़ना।

जनकराजाके प्रतिज्ञाकी बात राज्य राज्यमें घोषित हुई। जिन्होंने भाट भेजे थे वे निराश हुए। वीर रहनेके कारण जिनका गौरव है, वे आनन्दित हुए।

किसके पहिले कौन धनुष उठायगा, कौन आगे जाकर

सीता लाभ करेगा—इसके लिये सभी राज्योंमें त्यारियोंकी धूम मच गई।

उन्नीसवाँ पाठ।

এ পর্য্যন্ত= अबतक	কেহবা= कोई भी
যত= जितने	কাজেই= लाचार हो
হাতী= हाथी	একে একে= एक एक करके
সিপাই= सिपाही	জাঁকজমক= शानशौकत
সাস্ত্রী= हथियारबन्द सिपाही, पहरेदार	আসাই= आना ही
লোক লস্কর= मनुष्य फौज	মহাভাবনায়= बड़ी चिन्तामें
ধনুক= धनुष	এত সাধের= इतनी प्यारी
পিট্টান্= भागना	এনে দাও= ला दो
	প্রভু= ईश्वर

(১৯)

দলে দলে যত রাজা রাজপুত্র সব আসিল। সঙ্গে হাতী, ঘোড়া, সিপাই সাস্ত্রী, লোক-লস্কর যে কত, তার সংখ্যা নাই। কার আগে কে ধনুক ধরিবে তা নিয়ে বিবাদ। কোন রাজা ধনুক দেখিয়াই, পিট্টান, কেহবা তুলিতে চেষ্টা করিলেন, কেহবা তুলিলেন, কিন্তু ছিলা দিতে কেহই পারিলেন না—ভাঙ্গা ত দূরের কথা। কাজেই একে একে সব চলিয়া গেলেন। সীতার আর বিবাহ হইল না' কেহ কেহ উর্ম্মিলা, মাণ্ডবী, শ্রুতকীর্ত্তিকে বিবাহ করিতে চাহিলেন, কিন্তু সীতার বিবাহ

না হইলে তাঁহাদের বিয়ে কিরূপে হয় ? রাজপুত্রদের কেবল জাঁকজমক করিয়া আসাই সার হইল।

রাজর্ষি জনক মহাভাবনার মধ্যে পড়িলেন—আমার এত সাধের মেয়ে, তার বিয়ে হইবে না ? আমি কেন এমন প্রতিজ্ঞা করিলাম। আমার দোষেই ত এমন হইল।—রাজা নিজকে নিজে কত নিন্দা করেন। যোড়হাতে সজলনয়নে ভগবানকে ডাকেন, আর বলেন, "প্রভু ! সীতার বর কোথায় ? এনে দাও প্রভু।"

(१८)

दलके दल जितने राजा, राजपुत्र (थे) सब आये। साथमें हाथी,घोड़ा,सिपाही पहरेदार,मनुष्य फौज कितनी(थी), उसकी संख्या नहीं (है)। किसके पहिले कौन धनुष उठायगा अब इसीका झगड़ा(है)। कोई राजा धनुष देखकर ही भागे,किसीने उठानेकी चेष्टा की, किसीने उठाया, परन्तु कोई भी चाँप न चढ़ा सका—तोड़ना तो दूरकी बात (है)। लाचार हो एक एक करके सब चले गये। सीताका ब्याह नहीं हुआ। किसी किसीने उर्म्मिला, माण्डवी, श्रुतकीर्त्तिसे ब्याह करना चाहा, परन्तु सीताका ब्याह बिना हुए, उनका ब्याह कैसे हो ? राजपुत्रोंका केवल शानशौकतसे आना भर ही हुआ।

राजर्षि जनक बड़ी चिन्तामें पड़े—मेरी इतनी प्यारी लड़की, उसका ब्याह न होगा ? मैंने क्यों ऐसी प्रतिज्ञा की। मेरे दोषसे ही तो ऐसा हुआ।—राजा अपनी आप कितनी

निन्दा करते थे। हाथ जोडकर आँखोंमें आँसू भरे हुए ईश्वरको पुकारते और कहते थे—"प्रभु ! सीताका वर कहाँ (है) ? ला दो प्रभु ।"

बीसवाँ पाठ ।

ঠাট্টা = ठट्ठा	বল = कहो
সই = सखी	উহা = वह
কপালে = भाग्यमें	অদৃষ্ট = भाग्य, कर्म
জুটিবার = जुटनेका, मिलनेका	ফিরিয়া গেলেন = लौट गये
যা হয় = जो हो, जो जी चाहे	

(২০)

সীতার মনে কোন চাঞ্চল্য নাই। কত রাজা আসিলেন, রাজপুত্র আসিলেন, ধনুকে ছিলা পরাইতে না পারিয়া ফিরিয়া গেলেন। কাহারও কথাই সীতার মনে উঠিল না। তা না উঠিলে কি ? তবু তাঁহার বিপদ উপস্থিত—সখীদের কাছে তার থাকিবার উপায় নাই। তারা তাঁকে বড় ঠাট্টা করে। এক এক রাজা আসে, আর অমনি "সই, তোর 'বর এলো' 'বর এলো'" বলিয়া অস্থির করে। যেই চলিয়া যায় অমনি—"সই, তোর কপালে বিয়ে নাই" বলিয়া দুঃখ করিতে থাকে।

ইহাতে সীতার মনে কোন উদ্বেগ নাই। সীতা বলেন, "ভগবান যাঁরে নির্দ্দেশ করিয়াছেন, তিনি আসিলে অবশ্য পরা নরা হইবে। তাঁর ইচ্ছা না হইলে, তোরা যাকে ইচ্ছা ধরিয়া

দিলে ত হইবে না।" সখীরা বলে—"তোমার বাবার যেমন স্বৃষ্টিছাড়া পণ তাতে যমরাজ ভিন্ন অন্যবর জুটিবার উপায় নাই।"

সীতা বলেন "বাবা আমার ভালর জন্যই পণ করিয়াছেন। তোমরা আমাকে যা হয় বল—বাবার কথা কেন ?—মা-বাপ যা করেন, সন্তানের মঙ্গলের জন্যই করেন। তাতে যদি সন্তান দুঃখ পায়, উহা তার অদৃষ্টের ফল।

(২০)

सीताके मनमें कोई चाञ्चल्य नहीं है। कितने राजा आये, राजकुमार आये, धनुष पर चाप न चढ़ा सकनेके कारण लौट गये। किसीकी बात भी सीताके मनमें न उठी। उसकी नहीं उठनेसे क्या (हुआ)? तब भी उनकी विपद उपस्थित (है)—सखियोंके पास अब उनके रहनेका उपाय नहीं (है)। वे सब उनसे कितना ठट्ठा करती (है)। एक एक राजा आता है, इस तरह "सखी! तेरा वर आया" "वर आया" कहकर तङ्ग करती है। ज्योंही (वह) चला जाता है त्योंही "सखी, तेरे भाग्यमें विवाह नहीं है' कहकर दुःख करती है।

इससे सीताके मनमें कोई उद्वेग नही (है)। सीता कहती हैं—"भगवान्‌ने जिसको निर्देश किया है उनके आनेपर अवश्य प्रणकी रक्षा होगी। उनकी इच्छा न होनेपर, तुम सब जिसको चाहो (उसको) देनेसे तो न होगा।" सखी कहती हैं —"तुम्हारे पिताकी जैसी दुनियासे बाहर प्रतिज्ञा है, उससे यमराज भिन्न दूसरा वर मिलनेका उपाय नहीं है।'

सीता कहती थी—"पिताने मेरे भलेके लिये ही प्रण किया

है। तुम सब मुझे जो चाहो कहो—पिताको बात क्यों (कहती हो)? मा बाप जो करते है सन्तानके मङ्गलके लिये ही करते है। उससे यदि सन्तान दुःख पावे (तो) वह उसके भाग्यका फल है।"

इक्कीसवाँ पाठ।

প্রকাণ্ড = बहुत बड़ा	বাতাস = हवा
বাড়ী = मकान	চুপি চুপি = चुपचाप
তোরণ = फाटक	পালাইতেছে = भागती है
কারুকার্য্যে = कारीगरीके कामसे	ডুবিতেছে = डूबती है
	উঠিতেছে = उठती है उतराती है
খচিত = खचा हुआ	
চওড়া = चौड़ा	ঢেউয়ে ঢেউয়ে = तरङ्गोंपर, ढेंहुओंपर
পাশে = ओरमें	
বিকালবেলা = तीसरेपहर	গড়া = बनाया हुआ, गढ़ा हुआ
উড়িয়া = उड़कर	তাড়া খাইয়া = धक्का खाकर
বেড়াইতেছে = घूमती है	রাঙ্গা = रंगीन

(২১)

রাজর্ষি জনকের প্রকাণ্ড বাড়ী। সম্মুখের তোরণটি বেশ সুন্দর। নানা কারুকার্য্যে খচিত। তোরণের বাহিরে চওড়া রাস্তা। রাস্তার দুই পাশে সুন্দর ফুলের বাগান। বিকাল বেলা বাগানে নানাবিধ ফুল ফুটিতেছে, অলিগণ ফুলের মধু খাইবার জন্য গুন্ গুন্ করিয়া উড়িয়া বেড়াইতেছে। বাতাস

ফুলের মধু চুরি করিয়া, চুপি চুপি পালাইতেছিল, পশ্চিম দিকে রাঙ্গা রবির তাড়া খাইয়া যেন নদীর জলে পড়িয়া গেল। জলের উপর দিয়া দৌড়িতে দৌড়িতে—একবার ডুবিতেছে আবার উঠিতেছে। ঢেউয়ে ঢেউয়ে এক রবি যেন শত রবি হইয়া তার পিছনে পিছনে ছুটিতেছে।

তোরণটি বেশী উচ্চ নয়। তার সামনে ফুলের বাগান। কাতারে কাতারে ফুলের গাছ। গাছে গাছে ফুল আর ফুলের কলি—কোনটি ফুটিয়াছে, কোনটি ফোটা ফোটা হইয়াছে। এই খানি সীতার আপন হাতে গড়া ফুলবন। সাঁঝের ধূসর আঁধার আসিবার আগেই রোজ সীতা ফুলবনে দেবীর মত বোন্‌দিগকে সাথে লইয়া গাছে গাছে জল দিতে আসেন। আজও আসিয়াছেন। জল দেওয়া শেষ হইয়াছে। সীতার হাতের জল পাইয়া গাছগুলি যেন আনন্দে হাসিয়া উঠিয়াছে।

(২১)

राजर्षि जनकका मकान बहुत बड़ा (है)। सामनेका फाटक बहुत सुन्दर (है)। बहुतसे कारीगरोंके कामसे खचा हुआ (है)। फाटकके बाहर चौड़ा रास्ता (है)। रास्तेके दोनों तरफ सुन्दर फूलका बाग (है)। तीसरे पहरको बागमें बहुत तरहके फूल खिलते हैं, भौंरे फूलका मधु पीनेका लिये गुन् गुन् करके उड़ते फिरते हैं। हवा फूलका मधु चोरी करके चुपचाप भागती थी, (परन्तु) पश्चिम ओर रंगीन सूर्यका धक्का खाकर मानों नदीके जलमें गिर पड़ी।

पानीके ऊपरसे दौड़ती दौड़ती—एकबार डूबती है, फिर उतराती है। ढेऊ ढेऊपर एक रवि मानो सौ रवि होकर उसके पीछे पीछे दौड़ते हैं।

फाटक बहुत ऊँचा नहीं (है)। उसके सामने ही फूलका बाग (है)। कतारसे फूलके पेड़ (हैं), पेड़ पेड़में फूल और फूल की कली—कोई खिली है और कोई खिलने खिलनेपर है। यह सीताका अपने हाथका बनाया हुआ फूलबन है। सन्ध्याका धूसर अँधेरा आनेके पहिलेही रोज़ सीता फूलबनमें देवीकी भाँति बहिनोंको साथ लेकर पेड़-पेड़में जल देने आती है। आज भी आई है। पानी देना समाप्त हो गया है। सीताके हाथका जल पाकर पेड़ मानों आनन्दसे हँस उठे हैं।

सावित्री।

बाईसवाँ पाठ।

ঘুরে ঘুরে = घूम घूमकर	আড = आड़, अन्तराल
দেখাতে = दिखाने	পাছে = पीछे
লাগিলেন = लगी	হারাতে হয় = खोना पड़ता है
ফিঙ্গে = एक प्रकारकी चिड़िया	দিকে = तरफ़
ময়ূর = मोर	এক দৃষ্টিতে = टकटकी बाँधकर
নাচছে = नाचता है	চেয়ে আছেন = देख रही है
আলো = रोशनी	হাওয়ায় = हवामें
দেখ্‌ছতো = देखती हो तो ?	পাতা = पत्ता

আজ ও কি দেখ্‌বেন = आज वह क्या देखेंगी	নড়ে = हिलता है
	বুক = कलेजा
কেঁপে উঠে = काँप उठता है	ছিনিয়ে = छीनकर
শুক্‌নো = सूखा हुआ	নিতে = लेजानेके लिये
ঝরে পড়ে = झड़कर गिरता है	আস্‌ছে = आता है

সাবিত্রী।

(২২)

এ দিক ও দিক ঘুরে' ঘুরে' সত্যবান সাবিত্রীকে বনের শোভা দেখা'তে লাগ্‌লেন। ঐ দেখ, ঐ ফিঙ্গে উড়্‌ছে, অশোক ডালে ময়ূর নাচ্‌ছে,—ও সাবিত্রী, দেখ্‌ছ তো?—সাবিত্রী আজ ও কি দেখ্‌বেন। চোখের আড় করলে পাছে হারাতে হয়, এই ভয়ে তিনি স্বামীর মুখের দিকে একদৃষ্টিতে চেয়ে আছেন। হাওয়ায় গাছের পাতা নড়ে,—সাবিত্রীর বুক কেঁপে উঠে। শুক্‌নো পাতা ঝ'রে পড়ে—সাবিত্রী ভাবেন, ঐ বুঝি কে সত্যবানকে ছিনিয়ে নিতে আস্‌ছে।

(२२)

इधर उधर घूम घूम कर सत्यवान सावित्रीको वनकी शोभा दिखाने लगे। यह देखो, यह फिङ्गे उड़ता है, अशोककी डालपर मोर नाचता है—ऐ सावित्री, देखती हो तो?—सावित्री आज वह क्या देखेंगी! आँखकी ओट करनेपर खोना पड़ेगा इसी भयसे वह स्वामीके मुँहकी ओर एकदृष्टिसे देख रही है। हवासे पेड़का पत्ता हिला,—सावित्रीका

कलेजा कांप उठा। सूखा पत्ता झड़कर गिरनेसे—सावित्री यह समझकर कि कोई सत्यवानको छीन लेनेके लिये आता है चिन्तित हुई।

तेईसवाँ पाठ।

হাথ = हाथ	নেমে এস = उतर आओ
আপন = अपना	ফুরিয়ে গেল = बीत गया
চেপে ধরবন = दबा धरतो है	আঁধার = अँधेरा
ভয় ভয় করছে = डर मालूम होता है	খণ্ডান যায় = काटी जाय
কাঠ = लकड़ी	ব্যথায় = दर्दसे
কেটে = काटकर	মাথার = माथेकी
চল = चलो	দারুণ = भयानक, जोरकी कष्टकर
কাটতে = काटनेके लिये	ছটফট = छटपट
উঠলেন = उठे, चढे	ঢলে পড়লেন = ढलक पड़े
তলায় = नीचे	দেহ = शरीर
দাঁড়িয়ে = खड़ी होकर	কালি = काला
পানে = ओर	হয়ে গেছে = हो गया है
রইলেন = रही	মুখ দিয়ে = मुँहसे
হয়েছে = हुआ है	ফেনা উঠছে = फेन निकलता है
ডেকে ডেকে = पुकार पुकार कर	আঁখির পাতা = आँखकी पलक

(২৩)

অমনি তিনি দ্বিগুণ জোরে স্বামীর হাত আপন হাতে চেপে ধরেন। সাবিত্রী বল্লেন—আমার কেমন ভয় ভয় করচে, তুমি শীঘ্র কাঠ কেটে ঘরে চল। সত্যবান আর দেরি না ক'রে কাঠ কাটতে গাছের উপর উঠ্লেন। গাছের তলায় দাঁড়িয়ে সাবিত্রী স্বামীর মুখের পানে চেয়ে রইলো। "কাটা ডালের স্তূপ হয়েছে, কাঠের বোঝা ভারি হয়েছে—এখন নেমে এস।" সাবিত্রী গাছের তলা থেকে ডেকে ডেকে বলছেন—নেমে এস, এখন নেমে এস। বেলা যে ফুরিয়ে গেল, বনের পথ আঁধার হ'ল—এখন নেমে এস।

সত্যবান গাছের উপর থেকে এক পা দু পা ক'রে নীচে নেমে আসচে, এমন সময়—বিধির লিপি না খণ্ডান যায়—দারুণ মাথার ব্যথায় ছট্‌ফট্ ক'রে তিনি গাছের তলায় ঢ'লে পড়্লেন। সাবিত্রী ছুটে' এসে দেখেন—স্বামীর দেহ কালি হ'য়ে গেছে, মুখ দিয়ে ফেনা উঠ্‌ছে, আঁখির পাতা নড়ে না—হায় হায়, এ কি হল!

(২২)

यह विचार कर उसने दूने जोरसे स्वामीका हाथ अपने हाथमें चांपकर पकड़ लिया। सावित्रीने कहा—"मुझे कैसा भय मालूम होता है, तुम जल्दी लकड़ी काटकर घर चलो। सत्यवान और देर न करके लकड़ी काटनेके लिये पेड़पर चढ़े। पेड़के नीचे खड़ी होकर सावित्री स्वामीके मुंहकी ओर

देखती रही । "काटी हुई डालका ढेर होगया है, काठका बोझा भारी होगया है—अब उतर आओ।" सावित्री पेड़के नीचेसे पुकार पुकारकर कहती है—"उतर आओ, अब उतर आओ। समय होगया, वनकी राह अँधेरी हुई, अब उतर आओ!"

सत्यवान पेड़के ऊपरसे एक पैर दो पैर करके नीचे उतर आते हैं, ऐसे हो समय—भाग्यका लिखा हुआ नहीं टाला जाता—माथेके भयानक दर्दसे छटपटाकर वह पेड़के नीचे धमक पड़े। सावित्रीने दौड़कर देखा—स्वामीका शरीर काला हो गया है, मुँहसे फेन निकल रहा है, आँखकी पलक नहीं हिलती—हाय, हाय, यह क्या हुआ !

चौबीसवाँ पाठ ।

এক ধারে = एक ओर　　　বাদুড় = चमगादड़
দেহ = शरीर　　　দুলচে = डोलता है
বোণের বধূ = दुलहिन　　　খসে পড়চে = खिसक पड़ा है
একলা = अकेली　　　দুপুর = दोपहर
ফেটে = फटकर　　　কেটে গেল = कट गई,
কান্না = रोना　　　সাড়া = शब्द
উপ্‌চে = उथलकर　　　শক্ত = कड़ा
বুক চেপে = कलेजा दबाकर　　　হ'য়ে = होकर
শেয়াল = सियार　　　আগলে = बचाये
ডাকচে = पुकारता है, बोलता है

(২৪)

এক ধারে কাঠের বোঝা, এক ধারে স্বামীর দেহ—কোণের বধূ সাবিত্রী এই আঁধার বনে একলা এখন কি কর্বেন! বুক ফেটে তাঁর কান্না উথ্লে উঠ্ল—জোর ক'রে, তিনি বুক চেপে স্বামীর দেহ কোলে তুলে বনের ভিতর ব'সে রইলেন।

আঁধার পক্ষের আঁধার রাত। ঘুটঘুটি আঁধারের মাঝে শেয়াল ডাক্চে, বাদুড় চল্চে, গাছের পাতা খসে পড়্চে—সাবিত্রী স্বামীর দেহ বুকে চেপে স্বামীর মূর্ত্তি ধ্যান কর্চেন। দেখ্তে দেখ্তে দুপুর রাত কেটে গেল, তবু তো তাঁর সাড়া নেই—কাঠের মত শক্ত হ'য়ে সাবিত্রী স্বামীর দেহ আগ্লে রইলেন।

(২৪)

एक ओर काठका बोझा, एक ओर स्वामीका शरीर—दुलहिन सावित्री इस अँधेरे बनमें अकेली इस समय क्या करेगी। कलेजा फटकर उनको रुलाई आई, ज़ोर करके, कलेजा दबाकर, वह स्वामीके शरीरको गोदमें उठा कर बनमें बैठी रहीं।

अँधेरेपक्षकी अँधेरी रात (है) घनघोर अन्धकारमें सियार बोलता है, चमगादड़ डोलता है, पेड़का पत्ता खिसक पड़ता है—सावित्री स्वामीका शरीर कलेजेसे दबाकर स्वामीकी मूर्त्तिका ध्यान करती है। देखते देखते दोपहर रात्रि बीत गई, तब भी तो उनका शब्द नहीं—(सुन पड़ता है)

কাঠকী ভাঁতি কঠোর হোকর সাবিত্রী স্বামীকে শরীরকী রক্ষা কিয়ে রহী।

উমা।

পচ্চীসবাঁ পাঠ।

ক্রমে ক্রমে = ধীরে-ধীরে
শিশু = বচ্চা
একটু একটু করিয়া = থোড়া থোড়া করকে
একটুখানি = ছোটা, থোড়া
জ্যোৎস্না পরিপূর্ণ = জ্যোতি ভরা, চাঁদনী ভরা
সেরূপ = উস তরহ

দিন দিনই = দিনোঁ-দিন
বাড়িতে লাগিল = বঢ়নে লগা
লয় = লেতা থা
চাঁদপানা = চাঁদ সরীখা
জোছনা মাখা = জ্যোতি ভরা
বিলাইতেই = বাঁটনেকে লিয়ে

(২৫)

ক্রমে ক্রমে শিশু কন্যাটী বড় হইয়া উঠিল। প্রতিপদের চন্দ্র যেমন প্রথম একটুখানি থাকে, আর প্রতিদিনই একটু একটু করিয়া বড় হইয়া জ্যোৎস্না পরিপূর্ণ ও মনোহর হইয়া উঠে, হিমালয়ের শিশু মেয়েটীও সেরূপ ক্রমে ক্রমে বড় হইয়া উঠিল। দিন দিনই উহার সৌন্দর্য্য বাড়িতে লাগিল। মেয়েটীকে যে দেখে, সেই আদর করে, যে দেখে, সেই কোলে লয়। যেমন চাঁদপানা মুখ, তেমনি জোছনামাখা শরীর, তা আবার ননীর মত কোমল, এমন দেখে কি আর হয়। মনে হয় যেন পৃথি

বীতে আনন্দ বিলাইতেই ভগবান মেয়েটীকে আনন্দধাম থেকে পাঠিয়ে দিয়েছেন।। হিমালয়ের বাড়ীতে রোজ বন্ধু বান্ধবগণ আসিতে লাগিল। তাহারা ত মেয়ের রূপ দেখিয়া অবাক। পর্ব্বতের মেয়ে কিনা, তাই সকলে আদর করিয়া উহাকে "পার্ব্বতী" বলিয়া ডাকিত।

পার্ব্বতীর মা বাপের কথা আর কি বলিব। পার্ব্বতীকে পেয়ে তাঁহারা যেন হাতে চাঁদ পেয়েছেন। মেয়ের দিকে চাহিলে, তাঁহাদের আর ক্ষুধা, তৃষ্ণা থাকে না। এক মিনিট মেয়েটী চোখের আড়াল হইলে মা বাপ যেন অস্থির হইয়া পড়ে।

उमा

(२५)

धीरे धीरे बच्ची कन्या बडी होगई। प्रतिपदाका चन्द्र जिस तरह पहले छोटासा रहता है और रोज रोज थोडा-थोडा बडा होकर ज्योति भरा और मनोहर हो जाता है, हिमालयकी बच्ची कन्या भी उसी तरह धीरे धीरे बडी होगई। दिनों-दिन उसका सौन्दर्य बढने लगा। लडकीको जो देखता (है), वही प्यार करता (है), जो देखता है, वह गोदमें लेता (है) जिस तरह चाँदसरीखा मुँह, वैसाही ज्योतिभरा शरीर (है), वह फिर मक्खनसा कोमल है। ऐसी लडकी क्या दूसरी होती है? मनमें आता है, मानों पृथिवीमें आनन्द बाँटनेके लिये ही भगवान्ने लडकीको आनन्दधामसे भेज दिया है।। हिमालयके

मकानपर रोज बन्धु-बान्धवगण आने लगे। वे तो लड़कीका रूप देखकर अवाक् (हो गये)। पर्व्वतकी लड़की है कि नहीं इसीसे सभी प्यार करके उसे "पार्वती" कहकर पुकारते हैं।

पार्वतीके माँ बापकी बात और क्या कहूँगा। पार्वती को पाकर उन्होंने मानों हाथमें चाँद पाया है। लड़कीकी ओर देखने पर उन्हें फिर भूख-प्यास नहीं रहती है। एक मिनिट लड़की आँखोंकी ओट होने पर माँ बाप मानो अस्थिर हो जाते हैं।

छब्बीसवाँ पाठ।

বাটি = कटोरी

ঝিনুক = सीपी, चम्मच

এনে দিলো = ला दिया

পুতুল খেলার = गुड़िया खेलनेका

পুতুল = गुड़िया, पुतली

সাটীনের = साटनका

জামা = कपड़ा, पोशाक

বেগুনে = बैंगनी

ঝম্‌মম্ = झिलमिल

বহিয়া চলিয়াছে = बह चली है

সাদা সাদা = सफेद सफेद

বালিগুলি = बालू

রূপার মত = चाँदीके समान

ঝিক্‌মিক্ করে = चमकता था, झिलमिलाता था

বালিরাশিতে = बालूके ढेरमें

পরিবেশন করে = परोसती थी

আধ আধ স্বরে = तोतली भाषामें

বয়স = वयस्था, उम्र

(২৬)

বাপ আদর করে মেয়ের জন্য সোণার ঝিনুক বাটি

ও হীরার ঝিনুক এনে দিলে। পার্ব্বতী যখন আধ আধ স্বরে "মা" বলিত, তখন মেনকার আনন্দ দেখে কে। ক্রমে পার্ব্বতীর বয়স ৩।৪ বৎসর হইল। এখন ত পুতুল খেলার সময়। পার্ব্বতীর পুতুলের অভাব কি ? কত সোণার পুতুল, রূপার পুতুল, ফটিকের পুতুল, আর তাদের কত রকমের জামা। সাটিনের জামা, রেশমের জামা, লাল, নীল, বেগুনে, কত রঙের জামা, আর তার মাঝে হীরা, মাণিক, ঝল্‌মল্ করে। পার্ব্বতী খেলার সাথীদের সঙ্গে পুতুল খেলা করে। পুতুলের বিয়ে হয়, আর কত আমোদ প্রমোদই না হয়। রাজবাড়ীর পাশ দিয়াই গঙ্গা নদী বহিয়া চলিয়াছে। উহার তীরে সাদা সাদা বালিগুলি রূপার মত ঝিক্‌মিক্ করে। পার্ব্বতী সখিগণ লইয়া সেই বালিরাশিতে খেলা করিতে যায়। সোণার হাঁড়িতে বালি দিয়া ভাত রাঁধে, আর পুতুলের বিয়ের সময় সকলকে নিমন্ত্রণ করে খাওয়ায়। বরের বাড়ী হইতে কত লোকজন আসে, পার্ব্বতী সোণার থালে বালির ভাত ও পাতার তরকারী পরিবেশন করে।

(२६)

बापने प्यार करके लड़कीके लिये सोनेकी दूधकी कटोरी और हीरेका चम्मच ला दिया। पार्वती जब तोतले स्वरमें "माँ" कहती (थी) उस समय मेनकाका आनन्द कौन देखे ? धीरे-धीरे पार्वतीकी अवस्था तीन चार वर्षकी हुई। अब तो गुड़िया खेलनेका समय (है)। पार्वतीको गुड़ियोंका क्या अभाव (है) ? कितनी ही सोनेकी पुतली, चाँदीकी पुतली, स्फटिककी

तको और उनको कितने रंगकी पोशाक, साटनकी पोशाक, शमकी पोशाक, लाल, नीली, बैंगनी कितने रङ्गकी पोशाक और सके बीचमें हीरा, माणिक, झिलमिल करता है। पार्वती खेल ी साथियोंके साथ गुड़िया खेलती है। गुड़ियोंका व्याह होता और कितनीही हँसी खुशी होती हैं। राजमहलके पास ही ङ्गानदी बह रही है। उसके किनारे पर सफेद सफेद बालू ोंकी तरह झिलमिल करती है। पार्वती सखियोंको लेकर ही बालूके ढेरमें खेलने जाती है। सोनेकी हाँडीमें बालू ालकर भात सिझाती है और गुड़ियोंके व्याहके समय बको निमन्त्रण करके खिलाती है। वरके मकानसे कितनेही नुष्य आते है, पार्वती सोनेकी थालीमें बालूका भात और सकी तरकारी परोसती है।

सत्ताईसवाँ पाठ।

ोगाঁই-বাড়ী = जँवाईके घर	ছবিব = तस्वीरवो, तस्वीरदार
ানা = रोना	বই = किताब
খেলাধূলায = खेल-कूदमें	আনিয়া দিলো = ला दी
শিখিবার = सीखनेका	সে গুলি = वह सब
ঙকমা = घिचिस्रा	হাসে = हँसती थी
ফলা = युक्त अक्षर	গিলিতে চায = निगलना चाहता है
ানান = वर्ण-विचार	
শেষ = समाप्त	

(২৭)

আর মেয়ে পুতুলটাকে জামাই বাড়ী নিয়ে গেলে, পার্বতী কাঁদা আরম্ভ করে। সে দিন রাত্রিতে আর ভাত খায় না। এমনি ভাবে খেলাধূলায় পার্বতীর দিন চলিতে লাগিল। এসব দেখিয়া বাপ মায়ের মনে আর আনন্দ ধরে না। ক্রমে পার্বতীর লেখাপড়া শিখিবার সময় হইল। সে রাজকন্যা, তার ত আর স্কুলে গিয়া পড়িতে হইবে না। পর্বতরাজ বাড়ীতেই গুরুমা রাখিয়া দিলেন। পার্বতী সোণার দোয়াত হীরার কলম দিয়া 'ক' খ' লিখিতে লাগিল। ছয় মাসের মধ্যেই সমস্ত বানান, শেষ হইয়া গেল। এখন ত ছবির বই পড়িবার সময়। বাপ আদর করিয়া কত সুন্দর সুন্দর ছবির বই আনিয়া দিলেন। পার্বতী সেগুলি দেখে, আর হাসে। কি সুন্দর ছবি। একটা বেঙ কিনা একটা হাতী গিলিতে চায়। বেঙের কি সাহস! পার্বতী ছবি দেখিয়া হাসে, আর মনে মনে ভাবে, বেঙ কি কখনও হাতী গিলিতে পারিবে!

(२७)

और कन्या गुड़ियोंको जँवाईके घर ले जानेपर पार्वती रोना आरम्भ करती है। उस दिन रातको फिर भात नहीं खाती। इसी भावमें खेलकूदमें पार्वतीके दिन बीतने लगे। यह सब देखकर बाप माके मनमें आनन्द नहीं समाता। क्रमसे पार्वतीका लिखना पढ़ना सीखनेका समय हुआ। वह राजकन्या (है), उसे तो स्कूल जाकर पढ़ना न

होगा। पर्थसराजने घरमें ही गुरुपानो रख दी। पार्थतो सोनेकी पट्टीपर छोटेदी कालमसे 'क' 'ख' लिखने लगी। क्रम पढ़नेके बीचमें ही संयुक्त अक्षर और वर्ण-विचार समाप्त हो गया। अब तो तस्वीरदार किताब पढ़नेका समय (है)। पिताने प्यार करके खरीदी सुन्दर-सुन्दर तस्वीरवाली किताबें ला दीं। पार्थतो यह सब देखती और हँसती थी। कैसी सुन्दर तस्वीर है। एक बेंग, एक हाथी निगलना चाहता है। बेंगका कैसा साहस है। पार्थसी तस्वीर देखकर हँसती (है) और मन-ही-मन विचारती (है), बेंग क्या कभी हाथीको निगल सकेगा।

अट्ठाईसवाँ पाठ।

নানা = बहुतसे	কুমীর = मगर
রকমের = तरहके	বেঙ্গম = बेंग
ছড়া = पद्य	নাককাটা = नकटा
টিয়ে = तोता	মনোযোগ দিয়া = जी लगाकर
পাখী = पक्षी	দেমাক = अहङ्कार
খুকুরাণী = छोटी लड़की	দুষ্টামি = बदमाशी
গল্প = कहानी	ভালবাসে = प्यार करे

(२৮)

ছবির বইগুলিতে নানারকমের ছড়া ও গল্প আছে। টিয়ে পাখীর ছড়া, খুকুরাণীর বিয়ের ছড়া, কত রকমের ছড়া। আর গল্প? শেয়াল ও কুমীরের গল্প, বেঙ্গম বেঙ্গমীর গল্প, নাককাটা

রাজার গল্প, শীত বসন্তের গল্প, কত গল্পই বা পার্ব্বতী শিখিয়া ফেলিল। পার্ব্বতী খুব মনোযোগ দিয়া লেখা পড়া করিত। রাজকন্যা হইলে কি হবে, তার একটুকুও দেমাক ছিল না। সে গুরুমাকে খুব ভক্তি করিত। গুরুমা যাহা বলিতেন, সে তাহাই করিত। পড়ার সময় একটুকুও দুষ্টামি করিত না। কাহারও নিকট মিথ্যা কথা বলিত না। এমন মেয়েকে কে না ভাল বাসে? তোমরাও যদি মন দিয়া লেখাপড়া কর এবং সর্ব্বদা সত্য কথা বল, সকলেই তোমাদিগকে ভালবাসিবে।

(২৮)

तस्वीरवाली किताबोंमें कितनी तरहकी कविता और कहानी हैं। तोता पक्षीकी कविता, छोटे लड़कोंके व्याहपर कविता, कितनी ही तरह की कविता (हैं) और कहानियां? सियार और मगरकी कहानी, बेंग बेंगीकी कहानी, लकटे राजाकी कहानी, शीत वसन्तकी कहानी, कितनी ही कहानियां पार्वतीने सीख डालीं। पार्वती खूब जी लगा कर लिखना पढ़ना करती थी। राजकन्या होनेसे क्या होगा, उसको कुछ भी अहङ्कार न था। वह गुरुआनीकी खूब भक्ति करती थी। गुरुआनी जो कहती थी, वही करती थी। पढ़-नेके समय कुछ भी बदमाशी नहीं करती थी। किसीसे झूठ नहीं बोलती थी। ऐसी लड़कीको कौन नहीं प्यार करता? तुम लोग भी यदि जी लगाकर लिखना-पढ़ना करो और सदा सच बात बोलो, (तो) सभी तुमलोगोंको प्यार करेंगे।

উন্নীসবাঁ পাঠ।

গানও = গানা ভী
রাঁধিতে = রসোই বনানা
তখনকার = উস সময়কী
ছাড়া = ছোড়কর, অলাবে
শিখিয়াছিল = সীখা থা
বাবুগিরি = বাবুয়ানী
কাটাইতে = কাটনে

স্বামীকে = পতিকো
ছুটাছুটি = দৌড়-ধূপ
লুকোচুরী = লুক্কাচোরী
বাল্যকাল = লড়কপন
যৌবন = জবানী
চলিয়া গেল = বীত গয়া

(২৭)

পার্ব্বতী যে শুধু লেখাপড়া শিখিয়াছিল তা নয়। গুরুমা তাকে গানও শিখাইয়া ছিলেন। সন্ধ্যার সময় পার্ব্বতী যখন গুরুমার নিকট গান করিত, তখন তাহার সুমিষ্ট স্বর শুনিয়া সকলে মুগ্ধ হইয়া যাইত। দেবতাও এমন সুন্দর গান করিতে পারেন না। গান ছাড়া পার্ব্বতী রাঁধিতেও শিখিয়াছিল। তখনকার বালিকারা কেবল বাবুগিরি করিয়া দিন কাটাইত না। বিয়ের পর তাহারা হাতে রাঁধিয়া স্বামীকে খাওয়াইত। পার্ব্বতী যে শুধু পুতুল খেলা করিত, তা নয়। অনেক সময় সখীদের সঙ্গে ছুটাছুটি করিত, লুকোচুরি খেলিত, আরও নানা রকমের খেলা খেলিত। ইহাতে তাহার শরীরে যেমন শক্তি হইয়াছিল, তেমন সৌন্দর্য্যের বৃদ্ধি হইয়াছিল। এইরূপে পার্ব্বতীর বাল্যকাল চলিয়া গেল এবং যৌবন আসিয়া পড়িল।

(२८)

पार्वतीने केवल लिखना पढ़ना सीखा था, यही नहीं। गुरुआनीने उसको गाना भी सिखाया था। सन्ध्याके समय पार्वती जब गुरुआनीके पास गाती (थी) उस समय उसका मीठा स्वर सुनकर सभी मुग्ध हो जाते थे। देवता भी ऐसा सुन्दर गाना नहीं गा सकते थे। गानेके अलावे पार्वतीने (भोजन) पकाना भी सीखा था। उस समयकी राजकन्याएँ केवल बाबुआनी करके दिन नहीं काटती थी। विवाहके बाद वे अपने हाथसे पकाकर स्वामीको खिलाती (थी)। पार्वती केवल गुड़िया खेलती थी, सो नहीं। बहुत बार सखियोंके सङ्ग दौड़ धूप करती, लुका-चोरी खेलती, और भी नाना प्रकारके खेल खेलती थी। इससे उसके शरीरमें जैसी शक्ति हुई थी, वैसा सौन्दर्य भी बढ़ गया था। इसी तरहसे पार्वतीका लड़कपन बीत गया और जवानी आ पहुँची।

तीसवाँ पाठ।

বাড়িয়া উঠিল = बढ़ उठा	আঁকিয়া রাখিয়াছে = अङ्कित कर रखी है
বিকসিত হইয়া উঠে = खिल उठता है	পায়ের = पैरकी
চেহারা = चेहरा	অঙ্গুলিতে = उँगलीमें
চিত্রকর = चित्रकार, तस्वीर बनानेवाला	হাটিয়া যাইত = हट जाती
	বোধ হইত = मालूम होता था

আল্‌তার রস = অলতীকা রস হাঁটু -- = ঘুটনী
বাহির হইতেছে = নিকল রহা সরু = পতলা
হৈ শিরিষ = শিরীস
মাটীতে = মিট্টীমে কুসুম = ফুল
স্থলপদ্ম = ভূমিকমল

(৩০)

পার্ব্বতীর শরীর স্বভাবতঃই সুন্দর। এখন যৌবনকাল— তাহার শরীরের লাবণ্য যেন আরও বাড়িয়া উঠিল। সূর্য্যের কিরণে পদ্ম যেমন বিকসিত হইয়া উঠে, নবযৌবনের উদয়ে পার্ব্বতীর শরীরও তেমনি অপূর্ব্ব শোভা ধারণ করিল। তখন তাহার চেহারা দেখিলে মনে হইত যে, কোন চিত্রকর যেন এক খানা ছবি আঁকিয়া রাখিয়াছে। পার্ব্বতীর পায়ের অঙ্গুলিতে যে নখ আছে তাহা এমন লাল এবং এমনই উজ্জ্বল যে, সে যখন হাঁটিয়া যাইত, তখন বোধ হইত যেন নখ হইতে আল্‌তার রস বাহির হইতেছে। আর মাটিতে উহার এমনই জ্যোতিঃ হইত যে, লোকে মনে করিত, মাটিতে বুঝি স্থলপদ্ম ফুটিয়াছে। পার্ব্বতীর হাঁটু দুটি কেমন সুশ্রী, উপরে গোল এবং পরে ক্রমশঃ সরু হইয়া আসিয়াছে। উহাতে লাবণ্যই বা কত। লোকে কথায় বলে যে শিরীষ ফুলের মত কোমল জিনিষ আর কিছুই নাই। কিন্তু পার্ব্বতীর বাহু দুটি শিরীষ কুসুম অপেক্ষাও কোমল।

(৩০)

পার্ব্বতীকা শরীর স্বভাবসে হী সুন্দর (হৈ)। অব যৌবন

का समय (है)—उसके शरीरका लावण्य मानो औरभी बढ़ उठा। सूर्यकी किरणसे कमल जैसे खिल उठता है, नये यौवनके उदयसे पार्वतीके शरीरने भी वैसीही अपूर्व शोभा धारण की। उस समय उसका चेहरा देखनेसे जोमें आता था कि, किसी चित्रकारने मानों एक तस्वीर अङ्कित कर रखी है। पार्वतीके पैरकी उँगलीमें जो नख थे, वह ऐसे लाल और ऐसे उज्ज्वल थे कि, वह जिस समय चलती थी, उस समय मालूम होता था, मानों नखसे अलते का रस निकल रहा है। और मिट्टीमें उसकी ऐसी ज्योति होती थी कि, मनुष्य समझते थे कि मिट्टीमें मालूम होता है स्थलपद्म खिला है। पार्वतीके घुटने दोनों कैसे सुन्दर हैं। ऊपर गोल और फिर क्रमश पतले होते आये हैं। उसमें लावण्य भी कितना (है)। लोग बातोंमें कहते हैं कि सिरीस फूलके समान कोमल पदार्थ और कुछ नहीं (है) परन्तु पार्वतीकी दोनों बाहें सिरीस फूलसे भी अधिक कोमल (हैं)।

एकतीसवाँ पाठ।

गलाय=गलेमें	पेछन दिके=पीछेकी ओर
मुक्ताओलि=मोती	घुरिया वेड़ान=घूमते फिरते हैं
तुलना=तुलना, उपमा	हाँटिते हाँटिते=घूमते घूमते
भ्रू=भौंह	क्षमता=बल, शक्ति

আল্তার রস = অলতকা রস হাঁটু -- = ঘুটনেঁ
বাহির হইতেছে = নিকল রহা সরু = পতলা
হৈ শিরিষ = সিরীস
মাটীতে = মিট্টীমেঁ কুসুম = ফুল
স্থলপদ্ম = ভূমিকমল

(৩০)

পার্ব্বতীর শরীর স্বভাবত:ই সুন্দর। এখন যৌবনকাল—তাহার শরীরের লাবণ্য যেন আরও বাড়িয়া উঠিল। সূর্য্যের কিরণে পদ্ম যেমন বিকসিত হইয়া উঠে, নবযৌবনের উদয়ে পার্ব্বতীর শরীরও তেমনি অপূর্ব্ব শোভা ধারণ করিল। তখন তাহার চেহারা দেখিলে মনে হইত যে, কোন চিত্রকর যেন এক খানা ছবি আঁকিয়া রাখিয়াছে। পার্ব্বতীর পায়ের অঙ্গুলিতে যে নখ আছে তাহা এমন লাল এবং এমনই উজ্জ্বল যে, সে যখন হাটিয়া যাইত, তখন বোধ হইত যেন নখ হইতে আল্তার রস বাহির হইতেছে। আর মাটিতে উহার এমনই জ্যোতিঃ হইত যে, লোকে মনে করিত, মাটিতে বুঝি স্থলপদ্ম ফুটিয়াছে। পার্ব্বতীর হাঁটু দুটি কেমন সুশ্রী, উপরে গোল এবং পরে ক্রমশঃ সরু হইয়া আসিয়াছে। উহাতে লাবণ্যই বা কত। লোকে কথায় বলে যে শিরীষ ফুলের মত কোমল জিনিষ আর কিছুই নাই। কিন্তু পার্ব্বতীর বাহু দুটি শিরীষ কুসুম অপেক্ষাও কোমল।

(৩০)

পার্বতীকা শরীর স্বভাবসে হী সুন্দর (হৈ)। অব যৌবন

का समय (है)—उसके शरीरका लावण्य मानो औरभी बढ़ उठा। सूर्यकी किरणसे कमल जैसे खिल उठता है, नये यौवनके उदयसे पार्वतीके शरीरने भी वैसीही अपूर्व शोभा धारण की। उस समय उसका चेहरा देखनेसे जीमें आता था कि, किसी चित्रकारने मानों एक तस्वीर अङ्कित कर रखी है। पार्वतीके पैरकी उँगलोमें जो नख थे, वह ऐसे लाल और ऐसे उज्ज्वल थे कि, वह जिस समय चलती थी, उस समय मालूम होता था, मानों नखुने अलती का रस निकल रहा है। और मिट्टीमें उसकी ऐसी ज्योति होती थी कि, मनुष्य समझते थे कि मिट्टीमें मालूम होता है स्थलपद्म खिला है। पार्वतीके घुटने दोनों कैसे सुन्दर हैं। ऊपर गोल और फिर क्रमश पतले होते आये हैं। उसमें लावण्य भी कितना (है)! लोग बातोंमें कहते हैं कि सिरीस फूलके समान कोमल पदार्थ और कुछ नहीं (है) परन्तु पार्वतीको दोनों बाहें सिरीस फूलसे भी अधिक कोमल (हैं)।

एकतीसवां पाठ।

গলায়=गलेमें
মুক্তাগুলি=मोती
তুলনা=तुलना, उपमा
ভ্রূ=भौंह
পেছন দিক=पीछेकी ओर
ঘুরিয়া বেড়ান=घुमते फिरते हैं
হাঁটিতে হাঁটিতে=घूमते घू[illegible]
ক্ষমতা=बल, शक्ति

(৩১)

চুলের = কেশকী ফলিত = ফলনা
ঘন = ঘনা ফোঁটা = বূঁদ

পার্ব্বতীর গলায় মুক্তার মালা। শিশিরের ফোঁটার মত সাদা সাদা মুক্তাগুলি তাহার বুকের উপর ঝক্ ঝক করিত। সুন্দর মুখের সহিত লোকে পদ্মের অথবা চন্দ্রের তুলনা দিয়া থাকে। কিন্তু পার্ব্বতীর মুখশ্রীর নিকট চন্দ্র ও পদ্ম উভয়েই পরাজিত। সেই অবধি দিনে চাঁদ উঠে না, আর রাত্রিতে পদ্ম ফোটে না। পার্ব্বতীর চক্ষু দুটি যেমন বিস্তৃত, নাসিকা তেমন উচ্চ এবং ভ্রূদুটি তেমন লম্বা। আর চুলের কথা কি বলিব। ঘন কৃষ্ণ কেশ, তাহা পিছনদিক দিয়া হাঁটু পর্য্যন্ত পড়িয়াছে। যৌবনকালে পার্ব্বতী এতই সুন্দরী হইয়া উঠিল।

দেবতাদের দেশে নারদ নামে একজন বিখ্যাত মহর্ষি আছেন। তিনি সর্ব্বদা ইচ্ছামত এদিক ওদিক ঘুরিয়া বেড়ান। এক দিন হাটিতে হাটিতে তিনি পর্ব্বতরাজ হিমালয়ের বাড়ীতে উপস্থিত হইলেন। হিমালয় খুব সমাদরে তাঁহার অভ্যর্থনা করিলেন। তখনকার মুনিঋষিদিগের ভারী ক্ষমতা ছিল। তাঁহারা যাহা বলিতেন, তাহাই ফলিত। হিমালয়ের আদেশে পার্ব্বতী আসিয়া মহর্ষি নারদকে প্রণাম করিল। মহর্ষি পার্ব্বতীকে আশীর্ব্বাদ করিয়া বলিলেন, "দেব-দেব মহাদেব তোমাকে বিবাহ করিবেন আর তুমি স্বামীর খুব সোহাগিনী হইবে।" মহর্ষির কথা বৃথা হইবার নয়। পর্ব্বতরাজ ভগবান মহাদেবকে জামাতারূপে

यदि ईश्वर कहा—'देव देव महादेव तुमसे विवाह करेगी, और तुम स्वामीकी बड़ी ही सुहागिनी होओगी।" महर्षिकी बात झूठी होनेकी नहीं। पर्वतराज भगवान् महादेवको जामाताहूपमें पानेके विचारसे बड़े प्रसन्न हुए। विवाहकी अवस्था हो जानेपर भी पर्वतराजने पार्वतीके विवाहकी कोई तैयारी न की। वे जानते थे, (कि) महर्षिकी बात ही सच होगी। इससे वे निश्चेष्ट रहे।

बत्तीसवाँ पाठ।

पूर्व्वे = पहिले	লাগিলেন = लगाया, मरा
একদা = एक समय	বাঘছাল = बाघम्बर
দূরে থাকুক = दूर रहे	পরিধান = पहिरनेका वस्त्र
বরং = वरन्	পাগল সাজিয়া = पागल सजकर
ঝাঁপ দিয়া = कूदकर	সেই অবধি = तबसे
রাখিলেন = रक्खी	পাদদেশ = तराईमें

(৩২)

ভগবান্ মহাদেব পূর্ব্বে দক্ষরাজের কন্যা সতীকে বিবাহ করিয়াছিলেন। একদা দক্ষরাজ এক যজ্ঞ আরম্ভ করেন। তাহাতে সকলের নিমন্ত্রণ করা হয়, কিন্তু দক্ষরাজ নিজকন্যা সতী এবং জামাতা মহাদেবকে নিমন্ত্রণ করিলেন না। সতী বিনা নিমন্ত্রণেই পিতার যজ্ঞে উপস্থিত হইলেন। দক্ষ সতীকে অভ্যর্থনা করা দূরে থাকুক, বরং তাহার নিকটেই মহাদেবের নিন্দা আরম্ভ করেন। পতিনিন্দা শ্রবণে নিতান্ত দুঃখিত হইয়া সতী

অগ্নিকুণ্ডে ঝাঁপ দিয়া প্রাণত্যাগ করিলেন। সেই অবধি মহাদেব সংসার বাসনা পরিত্যাগ করিয়া সন্ন্যাসীর মত দেশ বিদেশে ভ্রমণ করিতে থাকেন। তিনি মাথায় জটা রাখিলেন, শরীরে ভস্ম মাখিলেন, আর বাঘছাল পরিধান করিলেন। এইরূপে পাগল সাজিয়া, তিনি নানাস্থানে ঘুরিতে লাগিলেন। প্রিয়তমা পত্নী সতীর বিরহে তিনি বড়ই কাতর হইয়া পড়িলেন। অবশেষে নানাস্থান পর্য্যটন করিয়া, তিনি হিমালয়ের পাদদেশে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। সে স্থানটি অতিশয় নির্জ্জন এবং তপস্যার পক্ষে বেশ উপযুক্ত, সেখানে এক কুটীর বাঁধিয়া তিনি উপাসনা আরম্ভ করিলেন। তাঁহার সঙ্গে অনেকগুলি অনুচর আসিয়াছিল, তাহারাও সেখানে রহিয়া গেল। মহাদেব কি কঠোর তপস্যাই আরম্ভ করিলেন।

(২২)

भगवान् महादेवने पहले दक्षराजकी कन्या सतीसे विवाह किया था। एक समय दक्षराजने एक यज्ञ आरम्भ किया। उसमें सबका निमन्त्रण किया गया, परन्तु दक्षराजने अपनी कन्या सती और जामाता महादेवको निमन्त्रण नहीं दिया। सती बिना निमन्त्रणके ही पिताके यज्ञमें उपस्थित हुई। दक्षने सतीको अभ्यर्थना करना तो दूर रहा, वरन् उनके सामने ही महादेवकी निन्दा आरम्भ की। पति निन्दा सुननेसे अत्यन्त दुःखित हो, सतीने अग्निकुण्डमें कूद-कर प्राणत्याग किया। तबसे महादेव संसारवासना

बाद देकर कहा—'देव-देव महादेव तुमसे विवाह करेगी, और तुम स्वामीकी बड़ी ही सुहागिनी होओगी।" महर्षिकी बात झूठी होनेकी नहीं। पर्वतराज भगवान् महादेवको जामाताकृपमें पानेके विचारसे बड़े प्रसन्न हुए। विवाहकी अवस्था हो जानेपर भी पर्वतराजने पार्वतीके विवाहकी कोई तैयारी न की। वे जानते थे, (कि) महर्षिकी बात ही सच होगी। इससे वे निश्चेष्ट रहे।

बत्तीसवां पाठ।

पूर्व्वे = पहिले	गाथিয়ো = लगाया, मखा
একদা = एक समय	বাঘছাল = बाघम्बर
দূরে থাকুক = दूर रहे	পরিধান = पहिरनेका वस्त्र
বরং = वरन्	পাগল সাজিয়া = पागल सजकर
ঝাঁপ দিয়া = कूदकर	সেই অবধি = तबसे
রাখিয়ো = रखी	পাদদেশ = तराईमें

(৩২)

ভগবান্ মহাদেব পূর্ব্বে দক্ষরাজের কন্যা সতীকে বিবাহ করিয়াছিলেন। একদা দক্ষরাজ এক যজ্ঞ আরম্ভ করেন। তাহাতে সকলের নিমন্ত্রণ করা হয়, কিন্তু দক্ষরাজ নিজকন্যা সতী এবং জামাতা মহাদেবকে নিমন্ত্রণ করিলেন না। সতী বিনা নিমন্ত্রণেই পিতার যজ্ঞে উপস্থিত হইলেন। দক্ষ সতীকে অভ্যর্থনা করা দূরে থাকুক, বরং তাহার নিকটেই মহাদেবের নিন্দা আরম্ভ করেন। পতিনিন্দা শ্রবণে নিতান্ত দুঃখিত হইয়া সতী

অগ্নিকুণ্ডে ঝাঁপ দিয়া প্রাণত্যাগ করিলেন। সেই অবধি মহাদেব সংসার বাসনা পরিত্যাগ করিয়া সন্ন্যাসীর মত দেশ বিদেশে ভ্রমণ করিতে থাকেন। তিনি মাথায় জটা রাখিলেন, শরীরে ভস্ম মাখিলেন, আর বাঘছাল পরিধান করিলেন। এইরূপে পাগল সাজিয়া, তিনি নানাস্থানে ঘুরিতে লাগিলেন। প্রিয়তমা পত্নী সতীর বিরহে তিনি বড়ই কাতর হইয়া পড়িলেন। অবশেষে নানাস্থান পর্য্যটন করিয়া, তিনি হিমালয়ের পাদদেশে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। সে স্থানটি অতিশয় নির্জ্জন এবং তপস্যার পক্ষে বেশ উপযুক্ত, সেখানে এক কুটীর বাঁধিয়া তিনি উপাসনা আরম্ভ করিলেন। তাঁহার সঙ্গে অনেকগুলি অনুচর আসিয়াছিল, তাহারাও সেখানে রহিয়া গেল। মহাদেব কি কঠোর তপস্যাই আরম্ভ করিলেন।

(২২)

भगवान् महादेवने पहले दक्षराजकी कन्या सतीसे विवाह किया था। एक समय दक्षराजने एक यज्ञ आरम्भ किया। उसमें सबका निमन्त्रण किया गया, परन्तु दक्षराजने अपनी कन्या सती और जामाता महादेवको निमन्त्रण नहीं दिया। सती बिना निमन्त्रणके ही पिताके यज्ञमें उपस्थित हुई। दक्षने सतीको अभ्यर्थना करना तो दूर रहा, वरन् उनके सामने ही महादेवकी निन्दा आरम्भ की। पति-निन्दा सुननेसे अत्यन्त दुःखित हो, सतीने अग्निकुण्डमें कूद प्राणत्याग किया। तबसे महादेव संसारवासना

जलाया। ऊपर प्रचण्ड सूर्य, चारों ओर जलती हुई आग! दूसरा मनुष्य होनेसे अग्निकी गर्मीमें ही जल जाता! ऐसी कठोर अवस्थामें उन्होंने ध्यान आरम्भ किया।

महादेव स्वयं ही भगवान् (हैं), ध्यान उनका करके कितने ही मनुष्य कृतार्थ हो जाते हैं। महादेव स्वयं मङ्गलमय (हैं) वे सबका मङ्गल विधान करते है। वे किस लिये ध्यान करने बैठे (है), वह हम तुम नहीं समझ सकते। देवतागण जो सब काम करते है, वह क्या तुम हम समझ सकते (हैं)? मनुष्यको ज्ञान बुद्धि बहुत कम (है)। इसी ज्ञान द्वारा ईश्वरके कार्यकलापका कारण नहीं निर्देश किया जाता।

पर्वतराज हिमालयने जिस समय सुन पाया कि, भगवान् महादेव अपने राज्यमें आ पहुंचे हैं, उस समय उनके आनन्दकी सीमा न रही। उन्होंने पशुपतिके पास जाकर विनीत वचनसे उनकी अभ्यर्थना की। मकानपर लौटकर उन्होंने पार्वती और उसकी जया विजया नामकी दोनों सखियोंसे कहा "तुम सब रोज़ जाकर देव देव पशुपतिकी सेवा करो।' दूसरे दिनसे पार्वती पशुपतिकी सेवामें लगी। पार्वती स्त्री (है), युवती (है), ऐसी अवस्थामें तपस्याके स्थानमें आनेसे तपस्यामें विघ्न हो सकता है, यह समझकर भी महादेवने पार्वतीको मना नहीं किया, कारण महादेव बड़े जितेन्द्रिय पुरुष थे। महापुरुषगणका चित्त साधारण मनुष्योंकी भांति चञ्चल नहीं (है)। जिन सब कारणोंसे

साधारण मनुष्य चञ्चल हो उठते हैं, महापुरुषगण उनपर भ्रूक्षेप भी नहीं करते। महापुरुष प्रकृतिका लक्षण यही है। पार्वती प्रतिदिन शिवकी पूजाके लिये फूल और स्नानके लिये जल ला देती और यज्ञका स्थान साफ़ कर रखती (थी)।

चौतीसवाँ पाठ।

পাত্রী = स्त्री
আনযন করা = लाना
অনুসন্ধান = खोज
সুতরাং = इसलिये
কোথাও = कहीं भी
মিলিয়া = मिलकर
প্রলয় ঘটাইয়া ফেলিতে পারেন प्रलय मचा सकते हैं
ঠিক = ठीक
পুনরায় = फिर

(৩৪)

সতীর দেহত্যাগের পর হইতেই দেবগণ মহাদেবের জন্য একটী উপযুক্ত পাত্রীর অনুসন্ধান করিতেছেন। সতী যেরূপ গুণবতী ও রূপবতী ছিলেন, ঠিক ঐরূপ একটী কন্যা পাইবার জন্য দেবগণ কত পরিশ্রম করিতেছেন কত দেশ বিদেশ ঘুরিতেছেন কিন্তু কোথাও ঐরূপ একটি কন্যা পাওয়া যাইতেছে না। মহাদেব ত স্ত্রীবিয়োগের পর হইতে সংসার বাসনা ত্যাগ করিয়া সন্ন্যাসী সাজিয়াছেন। তাঁহাকে আবার গার্হস্থ্যধর্ম্মে আনয়ন করা দেবগণের প্রধান উদ্দেশ্য হইলেও, তাঁহারা সাহস করিয়া মহাদেবের নিকট সে কথা [illegible] পারেন না। তাঁহারা জানেন যে মহাদেব ক্রুদ্ধ [illegible] প্রলয় ঘটাইয়া [illegible] পারেন। সুতরাং

जलाया। ऊपर प्रचण्ड सूर्य, चारों ओर जलती हुई आग। दूसरा मनुष्य होनेसे अग्निकी गर्मीसे ही जल जाता। ऐसी कठोर अवस्थामें उनहोने ध्यान आरम्भ किया।

महादेव स्वय ही भगवान् (हैं), ध्यान उनका करके कितने ही मनुष्य कृतार्थ हो जाते हैं। महादेव स्वय मङ्गलमय (हैं) वे सबका मङ्गल विधान करते है। वे किस लिये ध्यान करने बैठे (है), वह हम तुम नही समझ सकते। देवतागण जो सब काम करते हैं, वह क्या तुम हम समझ सकते (हैं)? मनुष्यको ज्ञान बुद्धि बहुत कम (है)। इसी ज्ञान द्वारा ईश्वरके कार्यकलापका कारण नहीं निर्देश किया जाता।

पर्वतराज हिमालयने जिस समय सुन पाया कि, भगवान् महादेव अपने राज्यमें आ पहुँचे हैं, उस समय उनके आनन्दकी सीमा न रही। उन्होंने पशुपतिके पास जाकर विनीत वचनसे उनकी अभ्यर्थना की। मकानपर लौटकर उन्होंने पार्वती और उसकी जया विजया नामकी दोनों सखियोंसे कहा "तुम सब रोज़ जाकर देव देव पशुपतिकी सेवा करो।' दूसरे दिनसे पार्वती पशुपतिकी सेवामें लगी। पार्वती स्त्री (है), युवती (है), ऐसी अवस्थामें तपस्याके स्थानमें जानेसे तपस्यामें विघ्न हो सकता है, यह समझकर भी महादेवने पार्वतीको मना नहीं किया, कारण महादेव बड़े जितेन्द्रिय पुरुष थे। महापुरुषगणका चित्त साधारण मनुष्योंकी भांति चञ्चल नही (है)। जिन सब कारणोंसे

साधारण मनुष्य चञ्चल हो उठते हैं, महापुरुषगण उनपर भ्रूक्षेप भी नहीं करते। महापुरुष प्रकृतिका लक्षण यही है। पार्वती प्रतिदिन शिवकी पूजाके लिये फूल और स्नानके लिये जल ला देती और यज्ञका स्थान साफ कर रखती (थीं)।

चौतीसवाँ पाठ।

পাত্রী = स्त्री
অনুসন্ধান = खोज
কোথাও = कहीं भी
প্রলয় ঘটাইয়া ফেলিতে পারেন = प्रलय मचा सकते हैं
আনয়ন করা = लाना
সুতরাং = इसलिये
মিলিয়া = मिलकर
ঠিক = ठीक
পুনরায় = फिर

(৩৪)

সতীর দেহত্যাগের পর হইতেই দেবগণ মহাদেবের জন্য একটী উপযুক্ত পাত্রীর অনুসন্ধান করিতেছেন। সতী যেরূপ গুণবতী ও রূপবতী ছিলেন, ঠিক ঐরূপ একটী কন্যা পাইবার জন্য দেবগণ কত পরিশ্রম করিতেছেন কত দেশ বিদেশ ঘুরিতেছেন কিন্তু কোথাও ঐরূপ একটি কন্যা পাওয়া যাইতেছে না। মহাদেব ত স্ত্রীবিয়োগের পর হইতে সংসার বাসনা ত্যাগ করিয়া সন্ন্যাসী সাজিয়াছেন। তাঁহাকে আবার গার্হস্থ্যধর্ম্মে আনয়ন করা দেবগণের প্রধান উদ্দেশ্য হইলেও, তাঁহারা সাহস করিয়া মহাদেবের নিকট সে কথা তুলিতে পারেন না। তাঁহারা জানেন যে তাঁহার ক্রুদ্ধ হইলে প্রলয় ঘটাইয়া ফেলিতে পারেন। সুতরাং, তাঁহারা